इस्तिस्ना

[illegible]

मूसा ने इस्तिसना की किताब को लिखा दरअसल यह यरदन नदी को पार करने से पहले बनी इस्राईल के लिए उसकी तकरीरों का मजमुआ है — “यह वही बातें हैं जो मूसा ने बनी इस्राईल से कहीं।” (1:1) किसी और ने (शायद यशोअ ने) इस के आखरी बाब को लिखा किताब खुद ही मूसा के लिए उस के मज़मून की बाबत बयान करती है (1:1, 5; 31:24) इस्तिस्ना की किताब मूसा और बनी इस्राईल को मोआब के मुल्क में उस इलाक़े में जहाँ यरदन नदी बहीरा — ए — मुरदार में बहती है (1:5) इस्तिसना का मतलब है “दूसरी शरीयत” ख़ुदा और उसके लोग बनी इस्राईल के बीच अहद की बाबत दुबारा से कहना इस्तिसना का सार है।

[illegible]

इस की तसनीफ़ तक़रीबन 1446 - 1405 क़ब्ल मसीह है इस किताब को बनी इस्राईल के वायदा किया हुआ मुल्क में दाख़िल होने से पहले चालीस दिनों के दौरान लिखा गया था।

[illegible]

बनी इस्राईल कौम की नई पीढ़ी जो वायदा किया हुआ मुल्क में दाख़िल होने के लिए तैयार थी, चालीस साल बाद जब उनके मांबाप मिस्र की गुलामी से बच निकले थे, और वह तमाम मुता'खिर क़ारिईन।

[illegible]

इस्तिसना की किताब बनी इस्राईल कौम के लिए मूसा का अलविदाई पैग़ाम है — बनी इस्राईल कौम को वायदा किए मुल्क में दाख़िल होने के लिए सहारा देकर संभाले रखना — मिस्र से ख़ुरूज के चालीस साल बाद बनी इस्राईल कौम यरदन नदी को

पार करती है ताकि मुल्क — ए — कनान को फ़तेह कर सके — मूसा किसी तरह मरने पर था और बनी इस्राईल के साथ मुल्क में नहीं जा सकता था — मूसा का अलविदाई पैग़ाम बनी इस्राईल कौम के लिए एक पुरजोश उज्र खुदा के अहकाम ता'बेदारी करें ताकि वही अहकाम उन के साथ उन के नए मुल्क में जाए (6:1 — 3, 17 — 19) मूसा का पैग़ाम बनी इस्राईल को याद दिलाता है की उनका खुदा कौन है (6:4) और उस ने उन के लिए क्या कुछ किया है (6:10 — 12, 20 — 23) मूसा बनी इस्राईल से इल्तिमास करता है कि उन अहकाम को अपनी अगली पीढ़ी तक पहुंचाए (6:6-9)।

[illegible]

फ़र्मान्बर्दारी

बैरूनी ख़ाका

1. मिस्र से बनी इस्राईल का सफ़र — 1:1-3:29
2. खुदा के साथ बनी इस्राईल का रिश्ता — 4:1-5:33
3. खुदा के साथ वफ़ादारी की अहमियत — 6:1-11:32
4. किस तरह खुदा से मोहब्बत की जाए और उस का हुक्म बजा लाए — 12:1-26:19
5. बरकतें और ला'नतें — 27:1-30:20
6. मूसा की वफ़ात — 31:1-34:12

[illegible]

1 यह वही बातें हैं जो मूसा ने *यरदन †के उस पार वीराने में,
या'नी उस मैदान में जो सूफ़ के सामने और फ़ारान और तोफ़ल
और लाबन और हसीरात और दीज़हब के बीच है, सब इस्राईलियों
से कहीं।

* **1:1** यरदन नदी † **1:1** यरदन के मशरिक़ की तरफ़

2 कोह — ए — श'ईर की राह से होरिब से क़ादिस बर्नी'अ
तक‡§ग्यारह दिन की मन्ज़िल है।
3 और चालीसवें बरस के ग्यारहवें महीने की पहली तारीख़ को
मूसा ने उन सब अहकाम के मुताबिक़ जो ख़ुदावन्द ने उसे बनी
— इस्राईल के लिए दिए थे, उनसे यह बातें कहीं:
4 या'नी जब उसने अमोरियों के बादशाह सीहोन को जो
हस्बोन में रहता था मारा, और बसन के बादशाह 'ओज को जो
'इस्तारात में रहता था, अदराई में क़त्ल किया;
5 तो इसके बाद यरदन के पार मोआब के मैदान में मूसा इस
शरी'अत को यूँ बयान करने लगा कि,

[illegible]

6 "ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने होरिब में हमसे यह कहा था, कि तुम
इस पहाड़ पर बहुत रह चुके हो
7 इसलिए अब फिरो और कूच करो और अमोरियों के पहाड़ी
मुल्क, और उसके आस — पास के मैदान और पहाड़ी क़ता'अ
और नशेब की ज़मीन और दख्खिनी अतराफ़ में, और समन्दर के
साहिल तक जो कना'नियों का मुल्क है बल्कि कोह — ए —
लुबनान और दरिया — ए — फ़रात तक जो एक बड़ा दरिया है,
चले जाओ।
8 देखो, मैंने इस मुल्क को तुम्हारे सामने कर दिया है। इसलिए
जाओ और उस मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लो, जिसके बारे में
ख़ुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा अब्रहाम, इस्हाक़, और या'क़ूब
से क़सम खाकर यह कहा था, कि वह उसे उनको और उनके बाद
उनकी नसल को देगा।"

[illegible]

9 उस वक़्त मैंने तुमसे कहा था, कि मैं अकेला तुम्हारा बोझ
नहीं उठा सकता।

‡ **1:2** पैदल रास्ता § **1:2** 260 किलोमीटर के करीब

10 ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुमको बढ़ाया है और आज के दिन
आसमान के तारों की तरह तुम्हारी कसरत है।
11 ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का ख़ुदा तुमको इससे भी
हज़ार चँद बढ़ाए, और जो वा'दा उसने तुमसे किया है उसके
मुताबिक़ तुमको बरकत बख़्शे।
12 मैं अकेला तुम्हारे जंजाल और बोझ और झंझट को कैसे
उठा सकता हूँ?
13 इसलिए तुम अपने — अपने क़बीले से ऐसे आदमियों को
चुनो जो दानिश्वर और 'अक़्लमन्द और मशहूर हों, और मैं उनको
तुम पर सरदार बना दूँगा।
14 इसके जवाब में तुमने मुझसे कहा था, कि जो कुछ तूने
फ़रमाया है उसका करना बेहतर है।
15 इसलिए मैंने तुम्हारे क़बीलों के सरदारों को जो 'अक़्लमन्द
और मशहूर थे, लेकर उनको तुम पर मुक़र्रर किया ताकि वह
तुम्हारे क़बीलों के मुताबिक़ हज़ारों के सरदार, और सैकड़ों के
सरदार, और पचास — पचास के सरदार, और दस — दस के
सरदार हाकिम हों।
16 और उसी मौक़े' पर मैंने तुम्हारे क़ाज़ियों से ताकीदन ये कहा,
कि तुम अपने भाइयों के मुक़द्दमों को सुनना, पर चाहे भाई — भाई
का मुआ'मिला हो या परदेसी का तुम उनका फैसला इन्साफ़ के
साथ करना।
17 तुम्हारे फ़ैसले में किसी की रू — रि'आयत न हो, जैसे बड़े
आदमी की बात सुनोगे वैसे ही छोटे की सुनना और किसी आदमी
का मुँह देख कर डर न जाना; क्यूँकि यह 'अदालत ख़ुदा की है;
और जो मुक़द्दमा तुम्हारे लिए मुश्किल हो उसे मेरे पास ले आना
मैं उसे सुनूँगा
18 और मैंने उसी वक़्त सब कुछ जो तुमको करना है बता दिया।

19 और हम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ होरिब
से सफ़र करके उस बड़े और ख़तरनाक वीराने में से होकर गुज़रे,
जिसे तुमने अमोरियों के पहाड़ी मुल्क के रास्ते में देखा। फिर हम
क़ादिस बर्नी'अ में पहुँचे।

20 वहाँ मैंने तुमको कहा, कि तुम अमोरियों के पहाड़ी मुल्क
तक आ गए हो जिसे ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा हमको देता है।

21 देख, उस मुल्क को ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तेरे सामने कर
दिया है। इसलिए तू जा, और जैसा ख़ुदावन्द तेरे बाप — दादा
के ख़ुदा ने तुझ से कहा है तू उस पर क़ब्ज़ा कर और न ख़ौफ़ खा
न हिरासान हो।

22 तब तुम सब मेरे पास आकर मुझसे कहने लगे, कि हम अपने
जाने से पहले वहाँ आदमी भेजें, जो जाकर हमारी ख़ातिर उस
मुल्क का हाल दरियाफ़्त करें और आकर हमको बताएँ के हमको
किस राह से वहाँ जाना होगा और कौन — कौन से शहर हमारे
रास्ते में पड़ेंगे।

23 यह बात मुझे बहुत पसन्द आई चुनाँचे मैंने क़बीले पीछे
एक — एक आदमी के हिसाब से बारह आदमी चुने।

24 और वह रवाना हुए और पहाड़ पर चढ़ गए और वादी — ए
— इसकाल में पहुँच कर उस मुल्क का हाल दरियाफ़्त किया।

25 और उस मुल्क का कुछ फल हाथ में लेकर उसे हमारे पास
लाए, और हमको यह ख़बर दी कि जो मुल्क ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा
हमको देता है वह अच्छा है।

[illegible]

26 "तो भी तुम वहाँ जाने पर राज़ी न हुए, बल्कि तुमने
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म से सरकशी की,

27 और अपने ख़ेमों में कुड़कुड़ाने और कहने लगे, कि ख़ुदावन्द
को हमसे नफ़रत है इसीलिए वह हमको मुल्क — ए — मिस्र से

निकाल लाया ताकि वह हमको अमोरियों के हाथ में गिरफ़्तार
करा दे और वह हमको हलाक कर डालें।
28 हम किधर जा रहे हैं? हमारे भाइयों ने तो यह बता कर
हमारा हौसला तोड़ दिया है, कि वहाँ के लोग हमसे बड़े — बड़े
और लम्बे हैं; और उनके शहर बड़े — बड़े और उनकी फ़सीलें
आसमान से बातें करती हैं। इसके अलावा हमने वहाँ 'अनाक़ीम
की औलाद को भी देखा।
29 तब मैंने तुमको कहा, कि ख़ौफ़ज़दा मत हो और न उनसे
डरो।
30 ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा जो तुम्हारे आगे आगे चलता है, वही
तुम्हारी तरफ़ से जंग करेगा जैसे उसने तुम्हारी ख़ातिर* मिस्र में
तुम्हारी आँखों के सामने सब कुछ किया
31 और वीराने में भी तुमने यही देखा के जिस तरह इंसान अपने
बेटे को उठाए हुए चलता है उसी तरह ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तेरे
इस जगह पहुँचने तक सारे रास्ते जहाँ — जहाँ तुम गए तुमको
उठाए रहा
32 तो भी इस बात में तुमने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का यक़ीन न
किया,
33 जो राह में तुमसे आगे — आगे तुम्हारे वास्ते ख़ेमे लगाने
की जगह तलाश करने के लिए, रात को आग में और दिन को
बादल में होकर चला, ताकि तुमको वह रास्ता दिखाए जिस से
तुम चलो।
34 'और ख़ुदावन्द तुम्हारी बातें सुन कर गज़बनाक हुआ और
उसने क़सम खाकर कहा, कि
35 इस बुरी नसल के लोगों में से एक भी उस अच्छे मुल्क को
देखने नहीं पाएगा, जिसे उनके बाप — दादा को देने की क़सम
मैंने खाई है,
36 सिवा यफ़ुना के बेटे कालिब के; वह उसे देखेगा, और जिस

* **1:30** मुल्क — ए — मिस्र

ज़मीन पर उसने क़दम रख्खा है उसे मैं उसकी और उसकी नसल
को दूँगा; इसलिए के उसने ख़ुदावन्द की पैरवी पूरे तौर पर की,
37 और तुम्हारी ही वजह से ख़ुदावन्द मुझ पर भी नाराज़ हुआ
और यह कहा, कि तू भी वहाँ जाने न पाएगा।
38 नून का बेटा यशू'अ जो तेरे सामने खड़ा रहता है वहाँ
जाएगा, इसलिए तू उसकी हौसला अफ़ज़ाई कर क्यूँकि वही बनी
इस्राईल को उस मुल्क का मालिक बनाएगा।
39 और तुम्हारे बाल — बच्चे जिनके बारे में तुमने कहा था, कि
लूट में जाएँगे, और तुम्हारे लड़के बाले जिनको आज भले और
बुरे की भी तमीज़ नहीं, यह वहाँ जाएँगे; और यह मुल्क मैं इन ही
को दूँगा और यह उस पर क़ब्ज़ा करेंगे।
40 पर तुम्हारे लिए यह है, कि तुम लौटो और बहर — ए —
क़ुलज़ुम की राह से वीराने में जाओ।
41 "तब तुमने मुझे जवाब दिया, कि हमने ख़ुदावन्द का गुनाह
किया है और अब जो कुछ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने हमको हुक्म
दिया है, उसके मुताबिक़ हम जाएँगे और जंग करेंगे। इसलिए
तुम सब अपने — अपने जंगी हथियार बाँध कर पहाड़ पर चढ़
जाने को तैयार हो गए।
42 तब ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि उनसे कह दे के ऊपर मत
चढ़ो और न जंग करो क्यूँकि मैं तुम्हारे बीच नहीं हूँ; कहीं ऐसा न
हो कि तुम अपने दुश्मनों से शिकस्त खाओ।
43 और मैंने तुमसे कह भी दिया पर तुमने मेरी न सुनी, बल्कि
तुमने ख़ुदावन्द के हुक्म से सरकशी की और शोख़ी से पहाड़ पर
चढ़ गए।
44 तब अमोरी जो उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारे मुक़ाबले को
निकले, और उन्होंने शहद की मक्खियों की तरह तुम्हारा पीछा
किया और श'ईर में मारते — मारते तुमको हुरमा तक पहुँचा
दिया।

45 तब तुम लौट कर ख़ुदावन्द के आगे रोने लगे, लेकिन ख़ुदावन्द ने तुम्हारी फ़रियाद न सुनी और न तुम्हारी बातों पर कान लगाया।

46 इसलिए तुम क़ादिस में बहुत दिनों तक पड़े रहे, यहाँ तक के एक ज़माना हो गया।

2

[illegible]

1 “और जैसा ख़ुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया था, उसके मुताबिक़ हम लौटे और बहर — ए — क़ुलज़ुम की राह से वीराने में आए और बहुत दिनों तक कोह — ए — श'ईर के बाहर — बाहर चलते रहे।

2 तब ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि:

3 तुम इस पहाड़ के बाहर — बाहर बहुत चल चुके; उत्तर की तरफ़ मुड़ जाओ,

4 और तू इन लोगों को ताकीद कर दे कि तुमको बनी 'ऐसौ, तुम्हारे भाई जो श'ईर में रहते हैं उनकी सरहद के पास से होकर जाना है, और वह तुमसे हिरासान होंगे। इसलिए तुम ख़ूब एहतियात रखना,

5 और उनको मत छेड़ना; क्यूँकि मैं उनकी ज़मीन में से पाँव धरने तक की जगह भी तुमको नहीं दूँगा, इसलिए कि मैंने कोह — ए — श'ईर 'ऐसौ को मीरास में दिया है।

6 तुम रुपये देकर अपने खाने के लिए उनसे ख़ुराक ख़रीदना, और पीने के लिए पानी भी रुपया देकर उनसे मोल लेना।

7 क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तेरे हाथ की कमाई में बरकत देता रहा है, और इस बड़े वीराने में जो तुम्हारा चलना फिरना है वह उसे जानता है। इन चालीस बरसों में ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा बराबर तुम्हारे साथ रहा और तुझको किसी चीज़ की कमी नहीं हुई।

8 इसलिए हम अपने भाइयों बनी 'ऐसौ के पास से जो श'ईर में
रहते हैं, कतरा कर मैदान की राह से ऐलात और 'अस्यून जाबर
होते हुए गुज़रे।" फिर हम मुड़े और मोआब के वीराने के रास्ते से
चले।
9 फिर ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मोआबियों को न तो सताना
और न उनसे जंग करना; इसलिए कि मैं तुझको उनकी ज़मीन का
कोई हिस्सा मिल्कियत के तौर पर नहीं दूँगा, क्यूँकि मैंने 'आर को
बनी लूत की मीरास कर दिया है।
10 वहाँ पहले ऐमीम बसे हुए थे जो 'अनाक़ीम की तरह बड़े —
बड़े और लम्बे — लम्बे और शुमार में बहुत थे।
11 और 'अनाक़ीम ही की तरह वह भी* रिफ़ाईम में गिने जाते
थे, लेकिन मोआबी उनको ऐमीम कहते हैं।
12 और पहले श'ईर में होरी क़ौम के लोग बसे हुए थे, लेकिन
बनी 'ऐसौ ने उनको निकाल दिया और उनको अपने सामने से
बर्बाद करके आप उनकी जगह बस गए, जैसे इस्राईल ने अपनी
मीरास के मुल्क में किया जिसे ख़ुदावन्द ने उनको दिया।
13 अब उठो और वादी — ए — ज़रद के पार जाओ। चुनाँचे
हम वादी — ए — ज़रद से पार हुए।
14 और हमारे क़ादिस बर्नी'अ से रवाना होने से लेकर वादी —
ए — ज़रद के पार होने तक अठतीस बरस का 'अरसा गुज़रा।
इस असना में ख़ुदावन्द की क़सम के मुताबिक़ उस नसल के सब
जंगी मर्द लश्कर में से मर खप गए।
15 और जब तक वह नाबूद न हो गए तब तक ख़ुदावन्द का
हाथ उनको लश्कर में से हलाक करने को उनके ख़िलाफ़ बढ़ा ही
रहा।
16 जब सब जंगी मर्द मर गए और क़ौम में से फ़ना हो गए
17 तो ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा,

---

* **2:11** ग़ैर मामूली बड़े क़द — ओ — क़ामत का शख़्स (दयो)

18 आज तुझे 'आर शहर से होकर जो मोआब की सरहद है
गुज़रना है।
19 और जब तू बनी 'अम्मोन के क़रीब जा पहुँचे, तो उन को मत
सताना और न उनको छेड़ना, क्यूँकि मैं बनी 'अम्मोन की ज़मीन
का कोई हिस्सा तुझे मीरास के तौर पर नहीं दूँगा इसलिए कि उसे
मैंने बनी लूत को मीरास में दिया है।
20 वह मुल्क भी रिफ़ाईम का गिना जाता था, क्यूँकि पहले
रफ़ाईम जिनको 'अम्मोनी लोग ज़मज़मीम कहते थे वहाँ बसे हुए
थे।
21 यह लोग भी 'अनाक़ीम की तरह बड़े — बड़े और लम्बे
— लम्बे और शुमार में बहुत थे, लेकिन ख़ुदावन्द ने उनको
'अम्मोनियों के सामने से हलाक किया, और वह उनको निकाल
कर उनकी जगह आप बस गए।
22 ठीक वैसे ही जैसे उसने बनी 'ऐसौ के सामने से जो श'ईर
में रहते थे होरियों को हलाक किया, और वह उनको निकाल कर
आज तक उन ही की जगह बसे हुए हैं।
23 ऐसे ही 'अवियों को जो अपनी बस्तियों में ग़ज़्ज़ा तक बसे
हुए थे, कफ़तूरियों ने जो कफ़तूरा से निकले थे हलाक किया और
उनकी जगह आप बस गए
24 इसलिए उठो, और वादी — ए — अरनून के पार जाओ।
देखो, मैंने हस्बोन के बादशाह सीहोन को, जो अमोरी है उसके
मुल्क समेत तुम्हारे हाथ में कर दिया है; इसलिए उस पर क़ब्ज़ा
करना शुरू' करो और उससे जंग छेड़ दो।
25 मैं आज ही से तुम्हारा ख़ौफ़ और रौब उन क़ौमों के दिल में
डालना शुरू' करूँगा जो इस ज़मीन पर रहती हैं, वह तुम्हारी ख़बर
सुनेंगी और काँपेंगी, और तुम्हारी वजह से बेताब हो जाएँगी।

26 “और मैंने दश्त — ए — क़दीमात से हस्बोन के बादशाह
सीहोन के पास सुलह के पैग़ाम के साथ क़ासिद रवाना किए और
कहला भेजा, कि
27 मुझे अपने मुल्क से गुज़र जाने दे; मैं शाहराह से होकर
चलूँगा और दहने और बाएँ हाथ नहीं मुड़ूँगा
28 तू रुपये लेकर मेरे हाथ मेरे खाने के लिए ख़ुराक बेचना, और
मेरे पीने के लिए पानी भी मुझे रुपया लेकर देना; सिर्फ़ मुझे पाँव
— पाँव निकल जाने दे,
29 जैसे बनी 'ऐसौ ने जो श'ईर में रहते हैं, और मोआबियों ने
जो 'आर शहर में बसते हैं। मेरे साथ किया; जब तक कि मैं †यरदन
को उबूर करके उस मुल्क में पहुँच न जाऊँ जो ख़ुदावन्द हमारा
ख़ुदा हमको देता है।
30 लेकिन हस्बोन के बादशाह सीहोन ने हमको अपने हाँ से
गुज़रने न दिया; क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने उसका मिज़ाज कड़ा
और उसका दिल सख़्त कर दिया ताकि उसे तेरे हाथ में हवाले कर
दे, जैसा आज ज़ाहिर है।
31 और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, देख, मैं सीहोन और उसके
मुल्क को तेरे हाथ में हवाले करने को हूँ, इसलिए तू उस पर क़ब्ज़ा
करना शुरू' कर, ताकि वह तेरी मीरास ठहरे।
32 तब सीहोन अपने सब आदमियों को लेकर हमारे मुक़ाबले
में निकला और जंग करने के लिए यहज़ में आया।
33 और ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने उसे हमारे हवाले कर दिया;
और हमने उसे, और उसके बेटों को, और उसके सब आदमियों को
मार लिया।
34 और हमने उसी वक़्त उसके सब शहरों को ले लिया, और
हर आबाद शहर को 'औरतों और बच्चों समेत बिल्कुल नाबूद कर
दिया और किसी को बाक़ी न छोड़ा;

---

† **2:29** यरदन नदी

35 लेकिन चौपायों को और शहरों के माल को जो हमारे हाथ
लगा लूट कर हमने अपने लिए रख लिया।
36 और 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे है,
और उस शहर से जो वादी में है, जिल'आद तक ऐसा कोई शहर न
था जिसको सर करना हमारे लिए मुश्किल हुआ; ख़ुदावन्द हमारे
ख़ुदा ने सबको हमारे क़ब्ज़े में कर दिया।
37 लेकिन बनी 'अम्मोन के मुल्क के नज़दीक और दरिया —
ए — यबोक़ का 'इलाक़ा और कोहिस्तान के शहरों में और जहाँ
— जहाँ ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने हमको मना' किया था तो नहीं
गया।

3

[illegible]

1 “फिर हमने मुड़ कर बसन का रास्ता लिया और बसन का
बादशाह 'ओज अदराई में अपने सब आदमियों को लेकर हमारे
मुक़ाबले में जंग करने को आया।
2 और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उससे मत डर, क्यूँकि मैंने
उसको और उसके सब आदमियों और मुल्क को तेरे क़ब्ज़े में कर
दिया है; जैसा तूने अमोरियों के बादशाह सीहोन से जो हस्बोन
में रहता था किया, वैसा ही तू इससे भी करेगा।
3 चुनाँचे ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने बसन के बादशाह 'ओज को
भी उसके सब आदमियों समेत हमारे क़ाबू में कर दिया, और हमने
उनको यहाँ तक मारा के उनमें से कोई बाक़ी न रहा।
4 और हमने उसी वक़्त उसके सब शहर ले लिए, और एक शहर
भी ऐसा न रहा जो हमने उनसे ले न लिया हो। यूँ अरजूब का
सारा मुल्क जो बसन में 'ओज की सल्तनत में शामिल था और
उसमें साठ शहर थे, हमारे क़ब्ज़े में आया।

5 यह सब शहर फ़सीलदार थे और इनकी ऊँची — ऊँची दीवारें और फाटक और बेंडे थे। इनके 'अलावा बहुत से ऐसे क़स्बे भी हमने ले लिए जो फ़सीलदार न थे।
6 और जैसा हमने हस्बोन के बादशाह सीहोन के यहाँ किया वैसा ही इन सब आबाद शहरों को म'ए 'औरतों और बच्चों के बिल्कुल नाबूद कर डाला।
7 लेकिन सब चौपायों और शहरों के माल को लूट कर हमने अपने लिए रख लिया।
8 यूँ हमने उस वक़्त अमोरियों के दोनों बादशाहों के हाथ से, जो यरदन पार रहते थे उनका मुल्क वादी — ए — अरनोन से कोह — ए — हरमून तक ले लिया।
9 इस हरमून को सैदानी सिरयून, और अमोरी सनीर कहते हैं
10 और सलका और अदराई तक मैदान के सब शहर और सारा जिल'आद और सारा बसन या'नी 'ओज की सल्तनत के सब शहर जो बसन में शामिल थे हमने ले लिए।
11 क्यूँकि रिफ़ाईम की नसल में से सिर्फ़ बसन का बादशाह 'ओज बाक़ी रहा था। उसका पलंग लोहे का बना हुआ था और वह बनी अम्मोन के शहर रब्बा में मौजूद है, और आदमी के हाथ के नाप के मुताबिक़ नौ हाथ लम्बा और चार हाथ चौड़ा है।

[illegible]

12 इसलिए इस मुल्क पर हमने उस वक़्त क़ब्ज़ा कर लिया, और 'अरो'[*]ईर जो वादी — ए — अरनोन के किनारे है और जिल'आद के पहाड़ी मुल्क का आधा हिस्सा और उसके शहर मैंने रूबीनियों और जद्दियों को दिए।
13 और जिल'आद का बाक़ी हिस्सा और सारा बसन या'नी अरजूब का सारा मुल्क जो 'ओज की क़लमरौ में था, मैंने मनस्सी के आधे क़बीले को दिया। बसन रिफ़ाईम का मुल्क कहलाता था।

---
* **3:12** एरोईर शहरके शुमाल से

14 और मनस्सी के बेटे याईर ने जसूरियों और मा'कातियों की
सरहद तक अरजूब के सारे मुल्क को ले लिया और अपने नाम पर
बसन के शहरों को †हव्वत याईर का नाम दिया, जो आज तक
चला आता है
15 और जिल'आद मैंने मकीर को दिया,
16 और रूबीनियों और जद्दियों को मैंने जिल'आद से वादी —
ए — अरनोन तक का मुल्क, या'नी उस वादी के बीच के हिस्से
को उनकी एक हद ठहरा कर दरिया — ए — यबोक़ तक, जो
'अम्मोनियों की सरहद है उनको दिया।
17 और मैदान को और किन्नरत से लेकर मैदान के दरिया या'नी
दरिया — ए — शोर तक, जो पूरब में पिसगा के ढाल तक फैला
हुआ है और ‡यरदन और उसका सारा इलाके को भी मैंने इन ही
को दे दिया।
18 "और मैंने उस वक़्त तुमको हुक्म दिया, कि ख़ुदावन्द तुम्हारे
ख़ुदा ने तुमको यह मुल्क दिया है कि तुम उस पर क़ब्ज़ा करो।
इसलिए तुम सब जंगी मर्द हथियारबंद होकर अपने भाइयों बनी
— इस्राईल के आगे — आगे पार चलो;
19 मगर तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे बाल बच्चे और चौपाये
क्यूँकि मुझे मा'लूम है कि तुम्हारे पास चौपाये बहुत हैं, इसलिए
यह सब तुम्हारे उन ही शहरों में रह जाएँ जो मैंने तुमको दिए हैं;
20 आख़ीर तक कि ख़ुदावन्द तुम्हारे भाइयों को चैन न बख़्शे
जैसे तुमको बख़्शा, और वह भी उस मुल्क पर जो ख़ुदावन्द
तुम्हारा ख़ुदा यरदन के उस पार तुमको देता है क़ब्ज़ा न कर लें।
तब तुम सब अपनी मिल्कियत में जो मैंने तुमको दी है लौट कर
आने पाओगे।

[illegible]

† 3:14 इस के मायने हैं याईर के सुकूनत का मक़ाम ‡ 3:17 यरदन नदी

21 और उसी मौक़े' पर मैंने यशू'अ को हुक्म दिया, कि जो
कुछ ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने इन दो बादशाहों से किया वह सब
तूने अपनी आँखों से देखा; ख़ुदावन्द ऐसा ही उस पार उन सब
सल्तनतों का हाल करेगा जहाँ तू जा रहा है।

22 तुम उनसे न डरना, क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारी
तरफ़ से आप जंग कर रहा है।

23 उस वक़्त मैंने ख़ुदावन्द से 'आजिज़ी के साथ दरख़्वास्त की
कि,

24 ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा तूने अपने बन्दे को अपनी 'अज़मत और
अपना ताक़तवर हाथ दिखाना शुरू' किया है क्यूँकि आसमान में
या ज़मीन पर ऐसा कौन मा'बूद है जो तेरे से काम या करामात
कर सके।

25 इसलिए मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे पार जाने दे कि मैं
भी अच्छे मुल्क को जो यरदन के पार है और उस ख़ुशनुमा पहाड़
और लुबनान को देखूँ।

26 लेकिन ख़ुदावन्द तुम्हारी वजह से मुझसे नाराज़ था और
उसने मेरी न सुनी; बल्कि ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि बस कर
इस मज़मून पर मुझसे फिर कभी कुछ न कहना।

27 तू कोह — ए — पिसगा की चोटी पर चढ़ जा और पश्चिम
और उत्तर और दख्खिन और पूरब की तरफ़ नज़र दौड़ा कर उसे
अपनी आँखों से देख ले, क्यूँकि तू इस यरदन के पार नहीं जाने
पाएगा।

28 पर यशू'अ को वसीयत कर और उसकी हौसला अफ़्ज़ाई
करके उसे मज़बूत कर क्यूँकि वह इन लोगों के आगे पार जाएगा;
और वही इनको उस मुल्क का, जिसे तू देख लेगा मालिक
बनाएगा।

29 चुनाँचे हम उस वादी में जो बैत फ़ग़ूर है ठहरे रहे।

4

[illegible]

1 “और अब ऐ इस्राईलियो, जो आईन और अहकाम मैं तुमको सिखाता हूँ तुम उन पर 'अमल करने के लिए उनको सुन लो, ताकि तुम ज़िन्दा रहो और उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तुम्हारे बाप — दादा का ख़ुदा तुमको देता है, दाख़िल हो कर उस पर क़ब्ज़ा कर लो।

2 जिस बात का मैं तुमको हुक्म देता हूँ, उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न कुछ घटाना; ताकि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्मों को जो मैं तुमको बताता हूँ मान सको।

3 जो कुछ ख़ुदावन्द ने बा'ल फ़ग़ूर की वजह से *किया, वह तुमने अपनी आँखों से देखा है; क्यूँकि उन सब आदमियों को जिन्होंने बा'ल फ़ग़ूर की पैरवी की, ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारे बीच से नाबूद कर दिया।

4 पर तुम जो ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से लिपटे रहे हो, सब के सब आज तक ज़िन्दा हो।

5 देखो, जैसा ख़ुदावन्द मेरे ख़ुदा ने मुझे हुक्म दिया, उसके मुताबिक़ मैंने तुमको आईन और अहकाम सिखा दिए हैं; ताकि उस मुल्क में उन पर 'अमल करो जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए जा रहे हो।

6 इसलिए तुम इनको मानना और 'अमल में लाना, क्यूँकि और क़ौमों के सामने यही तुम्हारी 'अक़्ल और दानिश ठहरेंगे। वह इन तमाम क़वानीन को सुन कर कहेंगी, कि यक़ीनन ये बुज़ुर्ग क़ौम निहायत 'अक़्लमन्द और समझदार है।

* **4:3** देखें गिनती 25:1 — 9

7 क्यूँकि ऐसी बड़ी क़ौम कौन है जिसका मा'बूद इस क़द्र उसके
नज़दीक हो जैसा ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा, कि जब कभी हम उससे
दुआ करें हमारे नज़दीक है?
8 और कौन ऐसी बुज़ुर्ग क़ौम है जिसके आईन और अहकाम ऐसे
रास्त हैं जैसी ये सारी शरी'अत है, जिसे मैं आज तुम्हारे सामने
रखता हूँ।
9 "इसलिए तुम ज़रूर ही अपनी एहतियात रखना और बड़ी
हिफ़ाज़त करना, ऐसा न हो कि तुम वह बातें जो तुमने अपनी
आँख से देखी हैं भूल जाओ और वह ज़िन्दगी भर के लिए तुम्हारे
दिल से जाती रहें; बल्कि तुम उनको अपने बेटों और पोतों को
सिखाना।
10 ख़ासकर उस दिन की बातें, जब तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
के सामने होरिब में खड़ा हुआ; क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा
था, कि क़ौम को मेरे सामने जमा' कर और मैं उनको अपनी बातें
सुनाऊँगा ताकि वह ये सीखें कि ज़िन्दगी भर, जब तक ज़मीन पर
ज़िन्दा रहें मेरा ख़ौफ़ मानें और अपने बाल — बच्चों को भी यही
सिखाएँ।
11 चुनाँचे तुम नज़दीक जाकर उस पहाड़ के नीचे खड़े हुए, और
वह पहाड़ आग से दहक रहा था और उसकी लौ आसमान तक
पहुँचती थी और चारों तरफ़ तारीकी और घटा और ज़ुलमत थी।
12 और ख़ुदावन्द ने उस आग में से होकर तुमसे कलाम किया;
तुमने बातें तो सुनीं लेकिन कोई सूरत न देखी, सिर्फ़ आवाज़ ही
आवाज़ सुनी।
13 और उसने तुमको अपने 'अहद के दसों अहकाम बताकर
उनके मानने का हुक्म दिया, और उनको पत्थर की दो तख़्तियों
पर लिख भी दिया।
14 उस वक़्त ख़ुदावन्द ने मुझे हुक्म दिया, कि तुमको यह आईन
और अहकाम सिखाऊँ ताकि तुम उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा

करने के लिए जा रहे हो, उन पर 'अमल करो।

[illegible]

15 "इसलिए तुम अपनी ख़ूब ही एहतियात रखना; क्यूँकि तुमने
उस दिन जब ख़ुदावन्द ने आग में से होकर होरिब में तुमसे कलाम
किया, किसी तरह की कोई सूरत नहीं देखी।
16 ऐसा न हो कि तुम बिगड़कर किसी शक्ल या सूरत की
खोदी हुई मूरत अपने लिए बना लो, जिसकी शबीह किसी मर्द
या 'औरत,
17 या ज़मीन के किसी हैवान या हवा में उड़ने वाले परिन्दे,
18 या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार या मछली से, जो ज़मीन
के नीचे पानी में रहती है मिलती हो;
19 या जब तू आसमान की तरफ नज़र करे और तमाम अजराम
— ए — फ़लक या'नी सूरज और चाँद और तारों को देखे, तो
गुमराह होकर उन्हीं को सिज्दा और उनकी इबादत करने लगे
जिनको ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने इस ज़मीन की सब क़ौमों के
लिए रख्खा है।
20 लेकिन ख़ुदावन्द ने तुमको चुना, और तुमको जैसे लोहे की
भट्टी या'नी मिस्र से निकाल ले आया है ताकि तुम उसकी मीरास
के लोग ठहरो, जैसा आज ज़ाहिर है।
21 और तुम्हारी ही वजह से ख़ुदावन्द ने मुझसे नाराज़ होकर
क़सम खाई, कि मैं यरदन पार न जाऊँ और न उस अच्छे मुल्क
में पहुँचने पाऊँ, जिसे ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा मीरास के तौर पर
तुझको देता है;
22 बल्कि मुझे इसी मुल्क में मरना है, मैं यरदन पार नहीं जा
सकता; लेकिन तुम पार जाकर उस अच्छे मुल्क पर क़ब्ज़ा करोगे।
23 इसलिए तुम एहतियात रखो, ऐसा न हो कि तुम ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के उस 'अहद को जो उसने तुमसे बाँधा है भूल जाओ,

और अपने लिए किसी चीज़ की शबीह की खोदी हुई मूरत बना
लो जिसे ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको मना' किया है
24 क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा भसम करने वाली आग है; वह
ग़य्यूर ख़ुदा है।
25 और जब तुझसे बेटे और पोते पैदा हों और तुमको उस मुल्क
में रहते हुए एक ज़माना हो जाए, और तुम बिगड़कर किसी चीज़
की शबीह की खोदी हुई मूरत बना लो, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
के सामने शरारत करके उसे ग़ुस्सा दिलाओ;
26 तो मैं आज के दिन तुम्हारे बरख़िलाफ़ आसमान और ज़मीन
को गवाह बनाता हूँ कि तुम उस मुल्क से, जिस पर क़ब्ज़ा करने
को† यरदन पार जाने पर हो, जल्द बिल्कुल फ़ना हो जाओगे;
तुम वहाँ बहुत दिन रहने न पाओगे बल्कि बिल्कुल नाबूद कर
दिए जाओगे।
27 और ख़ुदावन्द तुमको क़ौमों में तितर बितर करेगा; और जिन
क़ौमों के बीच ख़ुदावन्द तुमको पहुँचाएगा उनमें तुम थोड़े से रह
जाओगे।
28 और वहाँ तुम आदमियों के हाथ के बने हुए लकड़ी और
पत्थर के मा'बूदों की इबादत करोगे, जो न देखते न सुनते न खाते
न सूँघते हैं।
29 लेकिन वहाँ भी अगर तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के तालिब
हो तो वह तुझको मिल जाएगा, बशर्ते कि तुम अपने पूरे दिल से
और अपनी सारी जान से उसे ढूँढो।
30 जब तू मुसीबत में पड़ेगा और यह सब बातें तुझ पर गुज़रेंगी
तो आख़िरी दिनों में तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की तरफ़ फिरेगा और
उसकी मानेगा;
31 क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, रहीम ख़ुदा है, वह तुझको न
तो छोड़ेगा और न हलाक करेगा और न उस 'अहद को भूलेगा

† **4:26** मुल्क — ए — मिस्र

जिसकी क़सम उसने तुम्हारे बाप — दादा से खाई।

32 “और जब से ख़ुदा ने इंसान को ज़मीन पर पैदा किया, तब से
शुरू' करके तुम उन गुज़रे दिनों का हाल जो तुमसे पहले हो चुके
पूछ, और आसमान के एक सिरे से दूसरे सिरे तक दरियाफ़्त कर,
कि इतनी बड़ी वारदात की तरह कभी कोई बात हुई या सुनने में
भी आई?
33 क्या कभी कोई क़ौम ख़ुदा की आवाज़ जैसे तू ने सुनी, आग
में से आती हुई सुन कर ज़िन्दा बची है?
34 या कभी ख़ुदा ने एक क़ौम को किसी दूसरी क़ौम के बीच से
निकालने का इरादा करके, इम्तिहानों और निशान और मो'जिज़ों
और जंग और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू और हौलनाक
माजरों के वसीले से, उनको अपनी ख़ातिर बरगुज़ीदा करने के
लिए वह काम किए जो ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुम्हारी आँखों
के सामने मिस्र में तुम्हारे लिए किए?
35 यह सब कुछ तुझको दिखाया गया, ताकि तू जाने कि
ख़ुदावन्द ही ख़ुदा है और उसके अलावा और कोई है ही नहीं।
36 उसने अपनी आवाज़ आसमान में से तुमको सुनाई ताकि
तुझको तरबियत करे, और ज़मीन पर उसने तुझको अपनी बड़ी
आग दिखाई; और तुमने उसकी बातें आग के बीच में से आती हुई
सुनी।
37 और चूँकि उसे तेरे बाप — दादा से मुहब्बत थी, इसीलिए
उसने उनके बाद उनकी नसल को चुन लिया, और तेरे साथ होकर
अपनी बड़ी कुदरत से तुझको ‡मिस्र से निकाल लाया;
38 ताकि तुम्हारे सामने से उन क़ौमों को जो तुझ से बड़ी और
ताक़तवर हैं दफ़ा' करे, और तुझको उनके मुल्क में पहुँचाए, और
उसे तुझको मीरास के तौर पर दे, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।

‡ **4:37** मुल्क — ए — मिस्र

39 इसलिए आज के दिन तू जान ले और इस बात को अपने
दिल में जमा ले, कि ऊपर आसमान में और नीचे ज़मीन पर
ख़ुदावन्द ही ख़ुदा है और कोई दूसरा नहीं।
40 इसलिए तू उसके आईन और अहकाम को जो मैं तुझको
आज बताता हूँ मानना, ताकि तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का
भला हो, और हमेशा उस मुल्क में जो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको
देता है तेरी उम्र दराज़ हो।"

[illegible]

41 फिर मूसा ने §यरदन के पार पूरब की तरफ़ तीन शहर अलग
किए,
42 ताकि ऐसा ख़ूनी जो अनजाने बग़ैर क़दीमी 'अदावत के
अपने पड़ोसी को मार डाले, वह वहाँ भाग जाए और इन शहरों
में से किसी में जाकर जीता बच रहे।
43 या'नी रूबीनियों के लिए तो शहर — ए — बसर हो जो
तराई में वीरान के बीच वाक़े' है, और जद्दियों के लिए शहर — ए
— रामात जो जिल'आद में है, और मनस्सियों के लिए बसन का
शहर — ए — जौलान।

[illegible]

44 यह वह शरी'अत है जो मूसा ने बनी — इस्राईल के आगे
पेश की।
45 यही वह शहादतें और आईन और अहकाम हैं जिनको मूसा
ने बनी — इस्राईल को उनके मिस्र से निकलने के बा'द,
46 यरदन के पार उस वादी में जो बैत फ़ग़ूर के सामने है, कह
सुनाया; या'नी अमोरियों के बादशाह सीहोन के मुल्क में जो
हस्बोन में रहता था, जिसे मूसा और बनी इस्राईल ने मुल्क —
ए — मिस्र से निकलने के बाद मारा।

---

§ **4:41** यरदन नदी

47 और फिर उसके मुल्क को, और बसन के बादशाह 'ओज
के मुल्क को अपने क़ब्ज़े में कर लिया। अमोरियों के इन दोनों
बादशाहों का यह मुल्क *यरदन पार पूरब की तरफ़,
48 'अरो'ईर से जो वादी — ए — अरनोन के किनारे वाक़े' है,
कोह — ए — सियून तक जिसे हरमून भी कहते हैं, फैला हुआ है।
49 इसी में †यरदन पार पूरब की तरफ़ मैदान के दरिया तक जो
पिसगा की ढाल के नीचे बहता है, वहाँ का सारा मैदान शामिल
है।

5

[illegible]

1 फिर मूसा ने सब इस्राईलियों को बुलावा कर उनको कहा, ऐ
इस्राईलियो। तुम उन आईन और अहकाम को सुन लो, जिनको मैं
आज तुमको सुनाता हूँ, ताकि तुम उनको सीख कर उन पर 'अमल
करो।
2 ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने होरिब में हमसे एक 'अहद बाँधा।
3 ख़ुदावन्द ने यह 'अहद हमारे बाप — दादा से नहीं, बल्कि
ख़ुद हम सब से जो यहाँ आज के दिन जीते हैं बाँधा।
4 ख़ुदावन्द ने तुमसे उस पहाड़ पर, आमने — सामने आग के
बीच में से बातें कीं।
5 उस वक़्त मैं तुम्हारे और ख़ुदावन्द के बीच खड़ा हुआ ताकि
ख़ुदावन्द का कलाम तुम पर ज़ाहिर करूँ क्यूँकि तुम आग की
वजह से डरे हुए थे और पहाड़ पर न चढ़े।
6 तब उसने कहा, 'ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, जो तुझको मुल्क — ए
— मिस्र या'नी ग़ुलामी के घर से निकाल लाया, मैं हूँ।
7 'मेरे आगे तू और मा'बूदों को न मानना।

* **4:47** यरदन नदी † **4:49** यरदन नदी

8 'तू अपने लिए कोई तराशी हुई मूरत न बनाना, न किसी
चीज़ की सूरत बनाना जो ऊपर आसमान में या नीचे ज़मीन पर
या ज़मीन के नीचे पानी में है।
9 तू उनके आगे सिज्दा न करना और न उनकी इबादत करना,
क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा ग़य्यूर ख़ुदा हूँ। और जो मुझसे
'अदावत रखते हैं उनकी औलाद को तीसरी और चौथी नसल तक
बाप — दादा की बदकारी की सज़ा देता हूँ
10 और हज़ारों पर जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे हुक्मों को
मानते हैं, रहम करता हूँ।
11 'तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का नाम बेफ़ायदा न लेना; क्यूँकि
ख़ुदावन्द उसको जो उसका नाम बेफ़ायदा लेता है, बेगुनाह न
ठहराएगा।
12 'तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ सबत के दिन
को याद करके पाक मानना।
13 छ: दिन तक तू मेहनत करके अपना सारा काम — काज
करना;
14 लेकिन सातवाँ दिन ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा का सबत है उसमें न
तू कोई काम करे, न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा ग़ुलाम, न तेरी
लौंडी, न तेरा बैल, न तेरा गधा, न तेरा और कोई जानवर और
न कोई मुसाफ़िर जो तेरे फाटकों के अन्दर हों; ताकि तेरा ग़ुलाम
और तेरी लौंडी भी तेरी तरह आराम करें।
15 और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्र में ग़ुलाम था,
और वहाँ से ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अपने ताक़तवर हाथ और बलन्द
बाज़ू से तुझको निकाल लाया; इसलिए ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने
तुझको सबत के दिन को मानने का हुक्म दिया।
16 'अपने बाप और अपनी माँ की 'इज़्ज़त करना, जैसा
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे हुक्म दिया है; ताकि तेरी उम्र दराज़
हो और जो तेरा मुल्क ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदातुझे देता है उसमें तेरा

भला हो।
17 तू ख़ून न करना।
18 'तू ज़िना न करना।
19 “तू चोरी न करना।
20 'तू अपने पड़ोसी के ख़िलाफ़ झूठी गवाही न देना।
21 'तू अपने पड़ोसी की बीवी का लालच न करना, और न अपने
पड़ोसी के घर, या उसके खेत, या ग़ुलाम, या लौंडी, या बैल, या
गधे, या उसकी किसी और चीज़ का ख़्वाहिश मन्द होना।
22 “यही बातें ख़ुदावन्द ने उस पहाड़ पर, आग और घटा और
ज़ुलमत में से तुम्हारी सारी जमा'अत को बलन्द आवाज़ से कहीं,
और इससे ज़्यादा और कुछ न कहा और इन ही को उसने पत्थर
की दो तख़्तियों पर लिखा और उनको मेरे सुपुर्द किया।
23 'और जब वह पहाड़ आग से दहक रहा था, और तुमने वह
आवाज़ अन्धेरे में से आती सुनी तो तुम और तुम्हारे क़बीलों के
सरदार और बुज़ुर्ग मेरे पास आए।
24 और तुम कहने लगे, कि ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने अपनी
शौकत और 'अज़मत हमको दिखाई, और हमने उसकी आवाज़
आग में से आती सुनी; आज हमने देख लिया के ख़ुदावन्द इंसान
से बातें करता है तो भी इंसान ज़िन्दा रहता है।
25 इसलिए अब हम क्यूँ अपनी जान दें? क्यूँकि ऐसी बड़ी
आग हमको भसम कर देगी, अगर हम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
*आवाज़ फिर सुनें तो मर ही जाएँगे।
26 क्यूँकि ऐसा कौन सा बशर है जिसने ज़िन्दा ख़ुदा की आवाज़
हमारी तरह आग में से आती सुनी हो और फिर भी ज़िन्दा रहा?
27 इसलिए तू ही नज़दीक जाकर जो कुछ ख़ुदावन्द हमारा
ख़ुदा कहे उसे सुन ले, और तू ही वह बातें जो ख़ुदावन्द हमारा
ख़ुदा तुझ से कहे हमको बताना; और हम उसे सुनेंगे और उस पर

* **5:25** हुक्म

'अमल करेंगे।

28 "और जब तुम मुझसे गुफ़्तगू कर रहे थे तो ख़ुदावन्द ने तुम्हारी बातें सुनीं। तब ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि मैंने इन लोगों की बातें, जो उन्होंने तुझ से कहीं सुनी हैं; जो कुछ उन्होंने कहा ठीक कहा।

29 काश उनमें ऐसा ही दिल हो ताकि वह मेरा ख़ौफ़ मान कर हमेशा मेरे सब हुक्मों पर 'अमल करते, ताकि हमेशा उनका और उनकी औलाद का भला होता।

30 इसलिए तू जाकर उनसे कह दे, कि तुम अपने ख़ेमों को लौट जाओ।

31 लेकिन तू यहीं मेरे पास खड़ा रह और मैं वह सब फ़रमान और सब आईन और अहकाम जो तुझे उनको सिखाने हैं, तुझको बताऊँगा; ताकि वह उन पर उस मुल्क में जो मैं उनको क़ब्ज़ा करने के लिए देता हूँ, 'अमल करें।

32 इसलिए तुम एहतियात रखना और जैसा ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुमको हुक्म दिया है वैसा ही करना, और दहने या बाएँ हाथ को न मुड़ना।

33 तुम उस सारे रास्ते पर जिसका हुक्म ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुमको दिया है चलना; ताकि तुम ज़िन्दा रहो और तुम्हारा भला हो, और तुम्हारी उम्र उस मुल्क में जिस पर तुम क़ब्ज़ा करोगे दराज़ हो।

6

[illegible]

1 यह वह फ़रमान और आईन और अहकाम हैं, जिनको ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुमको सिखाने का हुक्म दिया है; ताकि तुम उन पर उस मुल्क में 'अमल करो, जिस पर क़ब्ज़ा करने के लिए पार जाने को हो।

2 और तुम अपने बेटों और पोतों समेत ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
का ख़ौफ़ मान कर उसके तमाम आईन और अहकाम पर, जो मैं
तुमको बताता हूँ, ज़िन्दगी भर 'अमल करना ताकि तुम्हारी उम्र
दराज़ हो।
3 इसलिए, ऐ इस्राईल सुन, और एहतियात करके उन पर
'अमल कर, ताकि तेरा भला हो और तुम ख़ुदावन्द अपने बाप
— दादा के ख़ुदा के वा'दे के मुताबिक़ उस मुल्क में, जिस में *दूध
और शहद बहता है बहुत बढ़ जाओ।
4 'सुन, ऐ इस्राईल, ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा एक ही ख़ुदावन्द है।
5 तू अपने सारे दिल, और अपनी सारी जान, और अपनी सारी
ताक़त से ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रख।
6 और ये बातें जिनका हुक्म आज मैं तुझे देता हूँ तेरे दिल पर
नक़्श रहें।
7 और तू इनको अपनी औलाद के ज़हन नशीं करना, और घर
बैठे और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इनका ज़िक्र किया
करना।
8 और तू निशान के तौर पर इनको अपने हाथ पर बाँधना, और
वह तेरी पेशानी पर टीकों की तरह हों।
9 और तू उनको अपने घर की चौखटों और अपने फाटकों पर
लिखना।
10 और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको उस मुल्क में पहुँचाए,
जिसे तुझको देने की क़सम उसने तेरे बाप — दादा अब्रहाम और
इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई, और जब वह तुझको बड़े — बड़े और
अच्छे शहर जिनको तूने नहीं बनाया,
11 और अच्छी — अच्छी चीज़ों से भरे हुऐ घर जिनको तूने
नहीं भरा, और खोदे — खुदाए हौज़ जो तूने नहीं खोदे, और अंगूर
के बाग़ और ज़ैतून के दरख़्त जो तूने नहीं लगाए 'इनायत करे,

---

* **6:3** अज़ हद ज़रख़ेज़ मुल्क

और तू खाए और सेर हो,
12 तो तू होशियार रहना, कहीं ऐसा न हो कि तू ख़ुदावन्द को
जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र या'नी ग़ुलामी के घर से निकाल
लाया भूल जाए।
13 तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, और उसी की
इबादत करना, और उसी के नाम की क़सम खाना।
14 तुम और मा'बूदों की या'नी उन क़ौमों के मा'बूदों की, जो
तुम्हारे आस — पास रहती हैं पैरवी न करना।
15 क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा जो तुम्हारे बीच है ग़य्यूर
ख़ुदा है। इसलिए ऐसा न हो कि ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा का ग़ज़ब
तुझ पर भड़के, और वह तुझको इस ज़मीन पर से फ़ना कर दे।
16 "तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को मत आज़माना, †जैसा तुमने
उसे मस्सा में आज़माया था।
17 तुम मेहनत से ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्मों और शहादतों
और आईन को, जो उसने तुझको फ़रमाए हैं मानना।
18 और तुम वह ही करना जो ख़ुदावन्द की नज़र में दुरुस्त और
अच्छा है ताकि तेरा भला हो और जिस अच्छे मुल्क के बारे में
ख़ुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा से क़सम खाई तू उसमें दाख़िल
होकर उस पर क़ब्ज़ा कर सके।
19 और ख़ुदावन्द तेरे सब दुश्मनों को तुम्हारे आगे से दफ़ा' करे,
जैसा उसने कहा है।
20 "और जब आइन्दा ज़माने में तुम्हारे बेटे तुझसे सवाल करें,
कि जिन शहादतों और आईन और फ़रमान के मानने का हुक्म
ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा ने तुमको दिया है उनका मतलब क्या है?
21 तो तू अपने बेटों को यह जवाब देना, कि जब हम ‡मिस्र
में फ़िर'औन के ग़ुलाम थे, तो ख़ुदावन्द अपने ताक़तवर हाथ से
हमको मिस्र से निकाल लाया;

† **6:16** देखें ख़ुरुज 17:1 — 7 ‡ **6:21** मुल्क — ए — मिस्र

22 और ख़ुदावन्द ने बड़े — बड़े और हौलनाक अजायब — ओ
— निशान हमारे सामने अहल — ए — मिस्र, और फ़िर'औन और
उसके सब घराने पर करके दिखाए;
23 और हमको वहाँ से निकाल लाया ताकि हमको इस मुल्क में,
जिसे हमको देने की क़सम उसने हमारे बाप दादा से खाई पहुँचाए।
24 इसलिए ख़ुदावन्द ने हमको इन सब हुक्मों पर 'अमल करने
और हमेशा अपनी भलाई के लिए ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़
मानने का हुक्म दिया है, ताकि वह हमको ज़िन्दा रक्खे, जैसा
आज के दिन ज़ाहिर है।
25 और अगर हम एहतियात रक्खें कि ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के
सामने इन सब हुक्मों को मानें, जैसा उस ने हमसे कहा है, तो इसी
में हमारी सदाक़त होगी।

7

[illegible]

1 "जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको उस मुल्क में, जिस पर
क़ब्ज़ा करने के लिए तू जा रहा है पहुँचा दे, और तेरे आगे से
उन बहुत सी क़ौमों को या'नी हित्तियों, और जिरजासियों, और
अमोरियों, और कना'नियों, और फ़रिज़्ज़ियों, और हव्वियों, और
यबूसियों को, जो सातों क़ौमें तुझसे बड़ी और ताक़तवर हैं निकाल
दे।
2 और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उनको तेरे आगे शिकस्त दिलाए
और तू उनको मार ले, तो तू उनको बिल्कुल हलाक कर डालना;
तू उनसे कोई 'अहद न बांधना और न उन पर रहम करना।
3 तू उनसे ब्याह शादी भी न करना, न उनके बेटों को अपनी
बेटियाँ देना और न अपने बेटों के लिए उनकी बेटियाँ लेना।

4 क्यूँकि वह तेरे बेटों को मेरी पैरवी से बरगश्ता कर देंगी, ताकि
वह और मा'बूदों की इबादत करें। यूँ ख़ुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर
भड़केगा और वह तुझको जल्द हलाक कर देगा।
5 बल्कि तुम उनसे यह सुलूक करना, कि उन के मज़बहों को
ढा देना, उन के सुतूनों को टुकड़े — टुकड़े कर देना और उनकी
यसीरतों को काट डालना, और उनकी तराशी हुई मूरतें आग में
जला देना।
6 क्यूँकि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए एक मुक़द्दस क़ौम
हो, ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुझको इस ज़मीन की और सब
क़ौमों में से चुन लिया है ताकि उसकी ख़ास उम्मत ठहरो।
7 ख़ुदावन्द ने जो तुमसे मुहब्बत की और तुमको चुन लिया,
तो इसकी वजह यह न थी कि तुम शुमार में और क़ौमों से ज़्यादा
थे, क्यूँकि तुम सब क़ौमों से शुमार में कम थे;
8 बल्कि चूँकि ख़ुदावन्द को तुमसे मुहब्बत है और वह उस क़सम
को जो उसने तुम्हारे बाप — दादा से खाई पूरा करना चाहता था,
इसलिए ख़ुदावन्द तुमको अपने ताक़तवर हाथ से निकाल लाया,
और ग़ुलामी के घर या'नी मिस्र के बादशाह फ़िर'औन के हाथ से
तुमको छुटकारा बख़्शा।
9 इसलिए जान लो कि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा वही ख़ुदा है।
वह वफ़ादार ख़ुदा है, और जो उससे मुहब्बत रखते और उसके
हुक्मों को मानते हैं, उनके साथ हज़ार नसल तक वह अपने 'अहद
को क़ाईम रखता और उन पर रहम करता है।
10 और जो उससे 'अदावत रखते हैं, उनको उनके देखते ही
देखते बदला देकर हलाक कर डालता है, वह उसके बारे में जो
उससे 'अदावत रखता है देर न करेगा, बल्कि उसी के देखते —
देखते उसे बदला देगा।
11 इसलिए जो फ़रमान और आईन और अहकाम मैं आज के
दिन तुझको बताता हूँ तू उनको मानना और उन पर 'अमल करना।

12 और तुम्हारे इन हुक्मों को सुनने और मानने और उन पर
'अमल करने की वजह से ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा भी तेरे साथ उस
'अहद और रहमत को क़ाईम रख्खेगा, जिसकी क़सम उसने
तुम्हारे बाप — दादा से खाई,
13 और तुझसे मुहब्बत रख्खेगा और तुझको बरकत देगा और
बढ़ाएगा; और उस मुल्क में जिसे तुझको देने की क़सम उसने
तेरे बाप — दादा से खाई वह तेरी औलाद पर, और तेरी ज़मीन
की पैदावार या'नी तुम्हारे ग़ल्ले, और मय, और तेल पर, और तेरे
गाय — बैल के और भेड़ — बकरियों के बच्चों पर बरकत नाज़िल
करेगा।
14 तुझको सब क़ौमों से ज़्यादा बरकत दी जाएगी, और तुम में
या तुम्हारे चौपायों में न तो कोई 'अक़ीम होगा न बाँझ।
15 और ख़ुदावन्द हर क़िस्म की बीमारी तुझ से दूर करेगा और
*मिस्र के उन बुरे रोगों को जिनसे तुम वाक़िफ़ हो तुझको लगने न
देगा, बल्कि उनको उन पर जो तुझ से 'अदावत रखते हैं नाज़िल
करेगा।
16 और तू उन सब क़ौमों को, जिनको ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे
क़ाबू में कर देगा नाबूद कर डालना। तू उन पर तरस न खाना और
न उनके मा'बूदों की इबादत करना, वर्ना यह तुम्हारे लिए एक
जाल होगा।
17 और अगर तेरा दिल भी यह कहे कि ये क़ौमें तो मुझसे
ज़्यादा हैं, हम उनको क्यूँ कर निकालें?
18 तोभी तू उनसे न डरना, बल्कि जो कुछ ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा
ने फ़िर'औन और सारे मिस्र से किया उसे ख़ूब याद रखना;
19 या'नी उन बड़े — बड़े तजरिबों को जिनको तेरी आँखों ने
देखा, और उन निशान और मो'जिज़ों और ताक़तवर हाथ और
बलन्द बाज़ू को जिनसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको निकाल लाया;
क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा ऐसा ही उन सब क़ौमों से करेगा जिनसे

* **7:15** मुल्क — ए — मिस्र

तू डरता है।
20 बल्कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उनमें †ज़म्बूरों को भेज देगा, यहाँ
तक कि जो उनमें से बाक़ी बच कर छिप जाएँगे वह भी तेरे आगे
से हलाक हो जाएँगे।
21 इसलिए तू उनसे दहशत न खाना; क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा
ख़ुदा तेरे बीच में है, और वह ख़ुदा — ए — 'अज़ीम और मुहीब
है।
22 और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को तेरे आगे से थोड़ा —
थोड़ा करके दफ़ा' करेगा। तू एक ही दम उनको हलाक न करना,
ऐसा न हो कि जंगली दरिन्दे बढ़ कर तुझ पर हमला करने लगें।
23 बल्कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उनको तेरे हवाले करेगा, और
उनको ऐसी शिकस्त — ए — फ़ाश देगा कि वह हलाक हो
जाएँगे।
24 और वह उनके बादशाहों को तेरे क़ाबू में कर देगा, और तू
उनका नाम सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा डालेगा; और कोई
मर्द तेरा सामना न कर सकेगा, यहाँ तक कि तू उनको हलाक कर
देगा।
25 तुम उनके मा'बूदों की तराशी हुई मूरतों को आग से जला
देना और जो चाँदी या सोना उन पर हो उसका तू लालच न करना
और न उसे लेना, ऐसा न हो कि तू उसके फन्दे में फँस जाए क्यूँकि
ऐसी बात ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के आगे मकरूह है।
26 इसलिए तू ऐसी मकरूह चीज़ अपने घर में लाकर उसकी
तरह नेस्त कर दिए जाने के लायक़ न बन जाना, बल्कि तू उससे
बहुत ही नफ़रत करना और उससे बिल्कुल नफ़रत रखना; क्यूँकि
वह मलाऊन चीज़ है।

8

† **7:20** मुल्क — ए — मिस्र

[illegible]

1 सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तुम एहतियात करके 'अमल करना ताकि तुम जीते और बढ़ते रहो; और जिस मुल्क के बारे में ख़ुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा से क़सम खाई है, तुम उसमें जाकर उस पर क़ब्ज़ा करो।

2 और तू उस सारे तरीक़े को याद रखना जिस पर इन चालीस बरसों में ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको इस वीराने में चलाया, ताकि वह तुझको 'आजिज़ कर के आज़माए और तेरे दिल की बात दरियाफ़्त करे कि तू उसके हुक्मों को मानेगा या नहीं।

3 और उसने तुझको 'आजिज़ किया भी और तुझको भूका होने दिया, और वह मन्न जिसे न तू न तेरे बाप — दादा जानते थे तुझको खिलाया; ताकि तुझको सिखाए कि इंसान सिर्फ़ रोटी ही से ज़िन्दा नहीं रहता, बल्कि हर बात से जो ख़ुदावन्द के मुँह से निकलती है वह ज़िन्दा रहता है।

4 इन चालीस बरसों में न तो तेरे तन पर तेरे कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव सूजे।

5 और तू अपने दिल में ख़याल रखना कि जिस तरह आदमी अपने बेटों को तम्बीह करता है, वैसे ही ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुमको तम्बीह करता है।

6 इसलिए तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की राहों पर चलने और उसका ख़ौफ़ मानने के लिए उसके हुक्मों पर 'अमल करना।

7 क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको एक अच्छे मुल्क में लिए जाता है। वह पानी की नदियों और ऐसे चश्मों और सोतों का मुल्क है जो वादियों और पहाड़ों से फूट कर निकलते हैं।

8 वह ऐसा मुल्क है जहाँ गेहूँ और जौ और अंगूर और अंजीर के दरख़्त और अनार होते हैं। वह ऐसा मुल्क है जहाँ रौग़नदार ज़ैतून और शहद भी है।

9 उस मुल्क में तुझको रोटी इफ़रात से मिलेगी और तुझको

किसी चीज़ की कमी न होगी, क्यूँकि उस मुल्क के पत्थर भी लोहा
हैं और वहाँ के पहाड़ों से तू ताँबा खोद कर निकाल सकेगा।
10 और तू खाएगा और सेर होगा, और उस अच्छे मुल्क के
लिए जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है उसका शुक्र बजा
लाएगा।
11 इसलिए ख़बरदार रहना, कि कहीं ऐसा न हो कि तू ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा को भूलकर, उसके फ़रमानों और हुक्मों और आईन को
जिनको आज मैं तुझको सुनाता हूँ मानना छोड़ दे;
12 ऐसा न हो कि जब तू खाकर सेर हो और ख़ुशनुमा घर बना
कर उनमें रहने लगे,
13 और तेरे गाय — बैल के ग़ल्ले और भेड़ बकरियाँ बढ़ जाएँ
और तेरे पास चाँदी, और सोना और माल बा — कसरत हो जाए;
14 तो तेरे दिल में ग़ुरूर समाए और तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को
भूल जाए जो तुझ को मुल्क — ए — मिस्र या'नी ग़ुलामी के घर
से निकाल लाया है,
15 और ऐसे बड़े और हौलनाक वीराने में तेरा रहबर हुआ जहाँ
जलाने वाले साँप और बिच्छू थे; और जहाँ की ज़मीन बग़ैर पानी
के सूखी पड़ी थी, वहाँ उसने तेरे लिए चक़मक़ की चट्टान से पानी
निकाला।
16 और तुझको वीरान में वह मन्न खिलाया जिसे तेरे बाप
— दादा जानते भी न थे; ताकि तुझको 'आजिज़ करे और तेरी
आज़माइश करके आख़िर में तेरा भला करे।
17 और ऐसा न हो कि तू अपने दिल में कहने लगे, कि मेरी ही
ताक़त और हाथ के ज़ोर से मुझको यह दौलत नसीब हुई है।
18 बल्कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को याद रखना, क्यूँकि वही
तुझको दौलत हासिल करने की क़ुव्वत इसलिए देता है कि अपने
उस 'अहद को जिसकी क़सम उसने तेरे बाप — दादा से खाई थी,
क़ाईम रखे जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।

19 और अगर तू कभी ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को भूले, और और
मा'बूदों के पैरौ बन कर उनकी इबादत और परस्तिश करे, तो मैं
आज के दिन तुमको आगाह किए देता हूँ कि तुम ज़रूर ही हलाक
हो जाओगे।
20 जिन क़ौमों को ख़ुदावन्द तुम्हारे सामने हलाक करने को है,
उन्ही की तरह तुम भी ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की *बात न मानने
की वजह से हलाक हो जाओगे।

9

[illegible]

1 सुन ले ऐ इस्राईल, आज तुझे *यरदन पार इसलिए जाना है,
कि तू ऐसी क़ौमों पर जो तुझ से बड़ी और ताक़तवर हैं, और ऐसे
बड़े शहरों पर जिनकी फ़सीलें आसमान से बातें करती हैं, क़ब्ज़ा
करे।
2 वहाँ 'अनाक़ीम की औलाद हैं जो बड़े — बड़े और क़दआवर
लोग हैं। तुझे उनका हाल मा'लूम है, और तूने उनके बारे में यह
कहते सुना है कि बनी 'अनाक का मुक़ाबला कौन कर सकता है?
3 फिर तू आज कि दिन जान ले, कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे
आगे आगे भसम करने वाली आग की तरह पार जा रहा है। वह
उनको फ़ना करेगा और वह उनको तेरे आगे पस्त करेगा, ऐसा कि
तू उनको निकाल कर जल्द हलाक कर डालेगा, जैसा ख़ुदावन्द ने
तुझ से कहा है।
4 "और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उनको तेरे आगे से निकाल
चुके, तो तू अपने दिल में यह न कहना कि मेरी सदाक़त की वजह
से ख़ुदावन्द मुझे इस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को यहाँ लाया क्यूँकि
हक़ीक़त में इनकी शरारत की वजह से ख़ुदावन्द इन क़ौमों को तेरे
आगे से निकालता है।

* **8:20** हुक्म * **9:1** यरदन नदी

5 तू अपनी सदाक़त या अपने दिल की रास्ती की वजह से उस
मुल्क पर क़ब्ज़ा करने को नहीं जा रहा है बल्कि ख़ुदावन्द तेरा
ख़ुदा इन क़ौमों की शरारत की वजह से इनको तेरे आगे से ख़ारिज
करता है, ताकि यूँ वह उस वा'दे को जिसकी क़सम उसने तेरे बाप
— दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई पूरा करे।
6 "ग़रज़ तू समझ ले कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी सदाक़त की
वजह से यह अच्छा मुल्क तुझे क़ब्ज़ा करने के लिए नहीं दे रहा
है, क्यूँकि तू एक बाग़ी क़ौम है।

[illegible]

7 इस बात को याद रख और कभी न भूल, कि तूने ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा को वीराने में किस किस तरह ग़ुस्सा दिलाया; बल्कि
जब से तुम मुल्क — ए — मिस्र से निकले हो तब से इस जगह
पहुँचने तक, तुम बराबर ख़ुदावन्द से बग़ावत ही करते रहे।
8 और होरिब में भी तुमने ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाया, चुनाँचे
ख़ुदावन्द नाराज़ होकर तुमको हलाक करना चाहता था।
9 जब मैं पत्थर की दोनों तख़्तियों को, या'नी उस अहद की
तख़्तियों को जो ख़ुदावन्द ने तुमसे बाँधा था लेने को पहाड़ पर
चढ़ गया; तो मैं चालीस दिन और चालीस रात वहीं पहाड़ पर
रहा और न रोटी खाई न पानी पिया।
10 और ख़ुदावन्द ने अपने हाथ की लिखी हुई पत्थर की दोनों
तख़्तियाँ मेरे सुपुर्द कीं, और उन पर वही बातें लिखी थीं जो
ख़ुदावन्द ने पहाड़ पर आग के बीच में से मजमे' के दिन तुमसे
कही थीं।
11 और चालीस दिन और चालीस रात के बाद ख़ुदावन्द ने
पत्थर की वह दोनों तख़्तियाँ या'नी 'अहद की तख़्तियाँ मुझको
दीं।

12 और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ कर जल्द यहाँ से नीचे
जा, क्यूँकि तेरे लोग जिनको तू †मिस्र से निकाल लाया है बिगड़
गए हैं वह उस राह से जिसका मैंने उनको हुक्म दिया जल्द
नाफ़रमान हो गए, और अपने लिए एक मूरत ढाल कर बना ली
है।'
13 "और ख़ुदावन्द ने मुझसे यह भी कहा, कि मैंने इन लोगों
को देख लिया, ये बाग़ी लोग हैं।
14 इसलिए अब तू मुझे इनको हलाक करने दे ताकि मैं इनका
नाम सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा डालूँ, और मैं तुझ से एक
क़ौम जो इन से ताक़तवर और बड़ी हो बनाऊँगा।
15 तब मैं उल्टा फिरा और पहाड़ से नीचे उतरा, और पहाड़ आग
से दहक रहा था; और 'अहद की वह दोनों तख़्तियाँ मेरे दोनों हाथों
में थीं।
16 और मैंने देखा कि तुमने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का गुनाह
किया; और अपने लिए एक बछड़ा ढाल कर बना लिया है, और
बहुत जल्द उस राह से जिसका हुक्म ख़ुदावन्द ने तुमको दिया
था, नाफ़रमान हो गए।
17 तब मैंने उन दोनों तख़्तियों को अपने दोनों हाथों से लेकर
फेंक दिया और तुम्हारी आँखों के सामने उनको तोड़ डाला
18 और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात
ख़ुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, मैंने न रोटी खाई न पानी
पिया; क्यूँकि तुमसे बड़ा गुनाह सरज़द हुआ था, और ख़ुदावन्द
को ग़ुस्सा दिलाने के लिए तुमने वह काम किया जो उसकी नज़र
में बुरा था।
19 और मैं ख़ुदावन्द के क़हर और ग़ज़ब से डर रहा था, क्यूँकि
वह तुमसे सख़्त नाराज़ होकर तुमको हलाक करने को था; लेकिन
ख़ुदावन्द ने उस बार भी मेरी सुन ली।

---

† **9:12** मुल्क — ए — मिस्र

20 और ख़ुदावन्द हारून से ऐसे ग़ुस्सा था कि उसे हलाक करना
चाहा, लेकिन मैंने उस वक़्त हारून के लिए भी दुआ की।
21 और मैंने तुम्हारे गुनाह को या'नी उस बछड़े को, जो तुमने
बनाया था लेकर आग में जलाया; फिर उसे कूट कूटकर ऐसा पीसा
कि वह गर्द की तरह बारीक हो गया; और उसकी उस राख को उस
नदी में जो पहाड़ से निकल कर नीचे बहती थी डाल दिया।
22 "और तबे'रा और मस्सा और क़बरोत हत्तावा में भी तुमने
ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाया।
23 और जब ख़ुदावन्द ने तुमको क़ादिस बर्नी'अ से यह कह कर
रवाना किया, कि जाओ और उस मुल्क को जो मैंने तुमको दिया है
क़ब्ज़ा करो, तो उस वक़्त भी तुमने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्म
को 'उदूल किया, और उस पर ईमान न लाए और उसकी बात न
मानी।
24 ‡जिस दिन से मेरी तुमसे वाक़फ़ियत हुई है, तुम बराबर
ख़ुदावन्द से सरकशी करते रहे हो।
25 "इसलिए वह चालीस दिन और चालीस रात जो मैं
ख़ुदावन्द के आगे औंधा पड़ा रहा, इसी लिए पड़ा रहा क्यूँकि
ख़ुदावन्द ने कह दिया था कि वह तुमको हलाक करेगा।
26 और मैंने ख़ुदावन्द से यह दुआ की, कि ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा तू
अपनी क़ौम और अपनी मीरास के लोगों को, जिनको तूने अपनी
क़ुदरत से नजात बख़्शी और जिनको तू ताक़तवर हाथ से§ मिस्र
से निकाल लाया, हलाक न कर।
27 अपने ख़ादिमों अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब को याद
फ़रमा, और इस क़ौम की ख़ुदसरी और शरारत और गुनाह पर
नज़र न कर,
28 कहीं ऐसा न हो कि जिस मुल्क से तू हमको निकाल लाया है
वहाँ के लोग कहने लगें, कि चूँकि ख़ुदावन्द उस मुल्क में जिसका

---

‡ **9:24** या, जिस दिन से यह्वे ने तुम को जाना § **9:26** मुल्क — ए — मिस्र

वा'दा उसने उनसे किया था पहुँचा न सका, और चूँकि उसे उनसे
नफ़रत भी थी, इसलिए वह उनको निकाल ले गया ताकि उनको
वीराने में हलाक कर दे।
29 आख़िर यह लोग तेरी क़ौम और तेरी मीरास हैं जिनको तू
अपने बड़े ज़ोर और बलन्द बाज़ू से निकाल लाया है।

10

[illegible]

1 "उस वक़्त ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, कि पहली तख़्तियों की
तरह पत्थर की दो और तख़्तियों तराश ले, और मेरे पास पहाड़
पर आ जा, और एक चोबी संदूक़ भी बना ले।
2 और जो बातें पहली तख़्तियों पर जिनको तूने तोड़ डाला
लिखी थीं, वही मैं इन तख़्तियों पर भी लिख दूँगा; फिर तू इनको
उस सन्दूक़ में रख देना।
3 इसलिए मैंने कीकर की लकड़ी का एक संदूक़ बनाया और
पहली तख़्तियों की तरह पत्थर की दो तख़्तियाँ तराश लीं, और
उन दोनों तख़्तियों को अपने हाथ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया।
4 और जो दस हुक्म ख़ुदावन्द ने मजमे' के दिन पहाड़ पर आग
के बीच में से तुमको दिए थे, उन ही को पहली तहरीर के मुताबिक़
उसने इन तख़्तियों पर लिख दिया; फिर इनको ख़ुदावन्द ने मेरे
सुपुर्द किया।
5 तब मैं पहाड़ से लौट कर नीचे आया और इन तख़्तियों को उस
संदूक़ में जो मैंने बनाया था रख दिया, और ख़ुदावन्द के हुक्म के
मुताबिक़ जो उसने मुझे दिया था, वह वहीं रखी हुई हैं।
6 फिर बनी — इस्राईल [*]बेरोत — ए — बनी या'कान से
रवाना होकर मौसीरा में आए। वहीं हारून ने वफ़ात पाई और दफ़्न

* **10:6** याक़ान के लोगों के कुओं से

भी हुआ, और उसका बेटा इली'एलियाज़र कहानत के 'उहदे पर
मुक़र्रर होकर उसकी जगह ख़िदमत करने लगा।
7 वहाँ से वह जुदजूदा को और जुदजूदा से यूतबाता को चले,
इस मुल्क में पानी की नदियाँ हैं।
8 उसी मौक़े' पर ख़ुदावन्द ने लावी के क़बीले को इस वजह से
अलग किया, कि वह ख़ुदावन्द के 'अहद के संदूक़ को उठाया करे
और ख़ुदावन्द के सामने खड़ा होकर उसकी खिदमत को अन्जाम
दे, और उसके नाम से बरकत दिया करे, जैसा आज तक होता है।
9 इसीलिए लावी को कोई हिस्सा या मीरास उसके भाइयों के
साथ नहीं मिली, क्यूँकि ख़ुदावन्द उसकी मीरास है, जैसा ख़ुद
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने उससे कहा है।
10 'और मैं पहले की तरह चालीस दिन और चालीस रात पहाड़
पर ठहरा रहा, और इस दफ़ा' भी ख़ुदावन्द ने मेरी सुनी और न
चाहा कि तुझको हलाक करे।
11 फिर ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा, 'उठ, और इन लोगों के आगे
रवाना हो, ताकि ये उस मुल्क पर जाकर क़ब्ज़ा कर लें जिसे उनको
देने की क़सम मैंने उनके बाप — दादा से खाई थी।

[illegible]

12 "इसलिए ऐ इस्राईल, ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझ से इसके
अलावा और क्या चाहता है कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़
माने, और उसकी सब राहों पर चले, और उससे मुहब्बत रक्खे,
और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा की बन्दगी करे,
13 और ख़ुदावन्द के जो अहकाम और आईन मैं तुझको आज
बताता हूँ उन पर 'अमल करो, ताकि तेरी ख़ैर हो?
14 देख, आसमान और आसमानों का आसमान, और ज़मीन
और जो कुछ ज़मीन में है, यह सब ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ही का है।

15 तोभी ख़ुदावन्द ने तेरे बाप — दादा से ख़ुश होकर उनसे
मुहब्बत की, और उनके बाद उनकी औलाद को या'नी तुमको सब
क़ौमों में से बरगुज़ीदा किया, जैसा आज के दिन ज़ाहिर है।
16 इसलिए अपने दिलों का ख़तना करो और आगे को बाग़ी न
रहो।
17 क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा इलाहों का इलाह ख़ुदावन्दों
का ख़ुदावन्द है, वह बुज़ुर्गवार और क़ादिर और मुहीब ख़ुदा है,
जो रूरि'आयत नहीं करता और न रिश्वत लेता है।
18 वह यतीमों और बेवाओं का इन्साफ़ करता है, और परदेसी
से ऐसी मुहब्बत रखता है कि उसे खाना और कपड़ा देता है।
19 इसलिए तुम परदेसियों से मुहब्बत रखना क्यूँकि तुम भी
मुल्क — ए — मिस्र में परदेसी थे।
20 तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना, उसकी बन्दगी
करना और उससे लिपटे रहना और उसी के नाम की क़सम खाना।
21 वही तेरी हम्द का सज़ावार है और वही तेरा ख़ुदा है जिसने
तेरे लिए वह बड़े और हौलनाक काम किए जिनको तू ने अपनी
आँखों से देखा।
22 तेरे बाप — दादा जब †मिस्र में गए तो सत्तर आदमी थे,
लेकिन अब ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा ने तुझको बढ़ा कर आसमान
के सितारों की तरह कर दिया है।

11

1 "इसलिए तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रखना, और
उसकी शरी'अत और आईन और अहकाम और फ़रमानों पर सदा
'अमल करना।
2 और तुम आज के दिन ख़ूब समझ लो, क्यूँकि मैं तुम्हारे बाल
बच्चों से कलाम नहीं कर रहा हूँ, जिनको न तो मा'लूम है और न

† **10:22** मुल्क — ए — मिस्र

उन्होंने देखा कि ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा की तम्बीह, और उसकी
'अज़मत, और ताक़तवर हाथ और बलन्द बाज़ू से क्या क्या हुआ;
3 और *मिस्र के बीच मिस्र के बादशाह फ़िर'औन और उसके
मुल्क के लोगों को कैसे कैसे निशान और कैसी करामात दिखाई।
4 और उसने मिस्र के लश्कर और उनके घोड़ों और रथों का क्या
हाल किया, और कैसे उसने बहर — ए — क़ुलज़ुम के पानी में
उनको डुबो दिया जब वह तुम्हारा पीछा कर रहे थे, और ख़ुदावन्द
ने उनको कैसा हलाक किया कि आज के दिन तक वह नाबूद हैं;
5 और तुम्हारे इस जगह पहुँचने तक उसने वीराने में तुमसे क्या
क्या किया;
6 और दातन और अबीराम का जो इलियाब बिन रूबिन के
बेटे थे, क्या हाल बनाया कि सब इस्राईलियों के सामने ज़मीन
ने अपना मुँह पसार कर उनको और उनके घरानों और ख़ेमो और
हर आदमी को जो उनके साथ था निगल लिया;
7 लेकिन ख़ुदावन्द के इन सब बड़े — बड़े कामों को तुमने
अपनी आँखों से देखा है।

[illegible]

8 "इसलिए इन सब हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ तुम
मानना, ताकि तुम मज़बूत होकर उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा
करने के लिए तुम पार जा रहे हो, पहुँच जाओ और उस पर क़ब्ज़ा
भी कर लो।
9 और उस मुल्क में तुम्हारी उम्र दराज़ हो जिसमें दूध और शहद
बहता है, और जिसे तुम्हारे बाप — दादा और उनकी औलाद को
देने की क़सम ख़ुदावन्द ने उनसे खाई थी।
10 क्यूँकि जिस मुल्क पर तू क़ब्ज़ा करने को जा रहा है वह
मुल्क मिस्र की तरह नहीं है, जहाँ से तुम निकल आए हो वहाँ तो

* **11:3** मुल्क — ए — मिस्र

तू बीज बोकर उसे सब्ज़ी के बाग़ की तरह पाँव से नालियाँ बना
कर सींचता था।
11 लेकिन जिस मुल्क पर क़ब्ज़ा करने के लिए तुम पार जाने
को हो वह पहाड़ों और वादियों का मुल्क है, और बारिश के पानी
से सेराब हुआ करता है।
12 उस मुल्क पर ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की तवज्जुह रहती है, और
साल के शुरू' से साल के आख़िर तक ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की आँखें
उस पर लगी रहती हैं।
13 'और अगर तुम †मेरे हुक्मों को जो आज मैं तुमको देता हूँ
दिल लगा कर सुनो, और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रख्खो,
और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से उसकी बन्दगी करो,
14 तो मैं तुम्हारे मुल्क में सही वक़्त पर पहला और पिछ्ला मेंह
बरसाऊँगा, ताकि तू अपना ग़ल्ला और मय और तेल जमा' कर
सके।
15 और मैं तेरे चौपायों के लिए मैदान में घास पैदा करूँगा, और
तू खायेगा और सेर होगा।
16 इसलिए तुम ख़बरदार रहना कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे
दिल धोका खाएँ और तुम बहक कर और मा'बूदों की इबादत और
परस्तिश करने लगो।
17 और ख़ुदावन्द का ग़ज़ब तुम पर भड़के और वह आसमान
को बन्द कर दे ताकि मेंह न बरसे, और ज़मीन में कुछ पैदावार
न हो, और तुम इस अच्छे मुल्क से जो ख़ुदावन्द तुमको देता है
जल्द फ़ना हो जाओ।
18 इसलिए मेरी इन बातों को तुम अपने दिल और अपनी जान
में महफ़ूज़ रखना और निशान के तौर पर इनको अपने हाथों पर
बाँधना, और वह तुम्हारी पेशानी पर टीकों की तरह हों।
19 और तुम इनको अपने लड़कों को सिखाना, और तुम घर बैठे
और राह चलते और लेटते और उठते वक़्त इन ही का ज़िक्र किया

† **11:13** ख़ुदा के अहकाम

करना।
20 और तुम इनको अपने घर की चौखटों पर और अपने फाटकों
पर लिखा करना,
21 ताकि जब तक ज़मीन पर आसमान का साया है, तुम्हारी
और तुम्हारी औलाद की उम्र उस मुल्क में दराज़ हो, जिसको
ख़ुदावन्द ने तुम्हारे बाप — दादा को देने की क़सम उनसे खाई
थी।
22 क्यूँकि अगर तुम उन सब हुक्मों को जो मैं तुमको देता हूँ,
पूरी जान से मानो और उन पर 'अमल करो, और ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा से मुहब्बत रख्खो, और उसकी सब राहों पर चलो, और उससे
लिपटे रहो;
23 तो ख़ुदावन्द इन सब क़ौमों को तुम्हारे आगे से निकाल
डालेगा, और तुम उन क़ौमों पर जो तुमसे बड़ी और ताक़तवर
हैं क़ाबिज़ होगे।
24 जहाँ जहाँ तुम्हारे पाँव का तलवा टिके वह जगह तुम्हारी
हो जाएगी, या'नी वीराने और लुबनान से और दरिया — ए —
फ़रात से पश्चिम के समन्दर तक तुम्हारी सरहद होगी।
25 और कोई शख़्स वहाँ तुम्हारा मुक़ाबला न कर सकेगा, क्यूँकि
ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारा रौब और ख़ौफ़ उस तमाम मुल्क
जहाँ कहीं तुम्हारे क़दम पड़े पैदा कर देगा जैसा उसने तुमसे कहा
है।
26 “देखो, मैं आज के दिन तुम्हारे आगे बरकत और ला'नत
दोनों रख्खे देता हूँ
27 बरकत उस हाल में जब तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्मों
को जो आज मैं तुमको देता हूँ मानो;
28 और ला'नत उस वक़्त जब तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
फ़रमाँबरदारी न करो, और उस राह को जिसके बारे में मैं आज
तुमको हुक्म देता हूँ छोड़ कर और मा'बूदों की पैरवी करो, जिनसे

तुम अब तक वाक़िफ़ नहीं।
29 और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको उस मुल्क में जिस पर
क़ब्ज़ा करने को तू जा रहा है पहुँचा दे, तो कोह — ए — गरिज़ीम
पर से बरकत और कोह — ए — 'ऐबाल पर से ला'नत सुनाना।
30 वह दोनों पहाड़ यरदन पार पश्चिम की तरफ़ उन कना'नियों
के मुल्क में वाके' हैं जो जिलजाल के सामने मोरा के बलूतों के
क़रीब मैदान में रहते हैं।
31 और तुम ‡यरदन पार इसी लिए जाने को हो, कि उस मुल्क
पर जो ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुमको देता है क़ब्ज़ा करो, और
तुम उस पर क़ब्ज़ा करोगे भी और उसी में बसोगे।
32 इसलिए तुम एहतियात कर के उन सब आईन और अहकाम
पर 'अमल करना जिनको मैं आज तुम्हारे सामने पेश करता हूँ।

12

[illegible]

1 "जब तक तुम दुनिया में ज़िन्दा रहो तुम एहतियात करके
इन ही आईन और अहकाम पर उस मुल्क में 'अमल करना जिसे
ख़ुदावन्द तेरे बाप — दादा के ख़ुदा ने तुझको दिया है, ताकि तू
उस पर क़ब्ज़ा करे।
2 वहाँ तुम ज़रूर उन सब जगहों को बर्बाद कर देना जहाँ —
जहाँ वह क़ौमें जिनके तुम वारिस होगे, ऊँचे ऊँचे पहाड़ों पर और
टीलों पर और हर एक हरे दरख़्त के नीचे अपने मा'बूदों की पूजा
करती थीं।
3 तुम उनके मज़बहों को ढा देना, और उनके सुतूनों को तोड़
डालना, और उनकी यसीरतों को आग लगा देना, और उनके
मा'बूदों की खुदी हुई मूरतों को काट कर गिरा देना, और उस
जगह से उनके नाम तक को मिटा डालना।
4 लेकिन ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से ऐसा न करना।

‡ **11:31** यरदन नदी

5 बल्कि जिस जगह को ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे सब
क़बीलों में से चुन ले, ताकि वहाँ अपना नाम क़ाईम करे, तुम
उसके उसी घर के तालिब होकर वहाँ जाया करना।
6 और वहीं तुम अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानियों और ज़बीहों और
दहेकियों और उठाने की क़ुर्बानियों और अपनी मिन्नतों की चीज़ों
और अपनी रज़ा की क़ुर्बानियों और गाय बैलों और भेड़ बकरियों
के पहलौठों को पेश करना।
7 और वहीं ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने खाना और अपने
घरानों समेत अपने हाथ की कमाई की ख़ुशी भी करना, जिसमें
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको बरकत बख़्शी हो।
8 और जैसे हम यहाँ जो काम जिसको ठीक दिखाई देता है वही
करते हैं, ऐसे तुम वहाँ न करना।
9 क्यूँकि तुम अब तक उस आरामगाह और मीरास की जगह
तक, जो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है नहीं पहुँचे हो।
10 लेकिन जब तुम *यरदन पार जाकर उस मुल्क में जिसका
मालिक ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुमको बनाता है बस जाओ, और
वह तुम्हारे सब दुश्मनों की तरफ़ से जो चारों तरफ़ हैं तुमको राहत
दे, और तुम अम्न से रहने लगो;
11 तो वहाँ जिस जगह को ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा अपने नाम के
घर के लिए चुन ले, वहीं तुम ये सब कुछ जिसका मैं तुमको हुक्म
देता हूँ ले जाया करना; या'नी अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ और
ज़बीहे और अपनी दहेकियाँ, और अपने हाथ के उठाए हुए हदिये,
और अपनी ख़ास नज़्र की चीज़ें जिनकी मन्नत तुमने ख़ुदावन्द के
लिए मानी हो।
12 और वहीं तुम और तुम्हारे बेटे बेटियाँ और तुम्हारे नौकर
चाकर और लौंडियाँ और वह लावी भी जो तुम्हारे फाटकों के
अन्दर रहता हो और जिसका कोई हिस्सा या मीरास तुम्हारे साथ

* **12:10** यरदन नदी

नहीं, सब के सब मिल कर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी
मनाना।
13 और तुम ख़बरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जिस जगह को
देख ले। वहीं अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानी पेश करो।
14 बल्कि सिर्फ़ उसी जगह जिसे ख़ुदावन्द तेरे किसी क़बीले में
चुन ले, तू अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश करना और वहीं सब
कुछ जिसका मैं तुमको हुक्म देता हूँ करना।
15 “लेकिन गोश्त को तुम अपने सब फाटकों के अन्दर अपने
दिल की चाहत और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की दी हुई बरकत के
मुवाफ़िक़ ज़बह कर के खा सकेगा। पाक और नापाक दोनों तरह
के आदमी उसे खा सकेंगे, जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं।
16 लेकिन तुम ख़ून को बिल्कुल न खाना, बल्कि तुम उसे पानी
की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।
17 और तू अपने फाटकों के अन्दर अपने ग़ल्ले और मय और
तेल की दहेकियाँ, और गाय — बैलों और भेड़ — बकरियों के
पहलौठे, और अपनी मन्नत मानी हुई चीज़ें और रज़ा की क़ुर्बानियाँ
और अपने हाथ की उठाई हुई क़ुर्बानियाँ कभी न खाना।
18 बल्कि तू और तेरे बेटे बेटियाँ और तेरे नौकर — चाकर और
लौंडियाँ, और वह लावी भी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, उन
चीज़ों को ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने उस जगह खाना जिसे
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा चुन ले, और तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के
सामने अपने हाथ की कमाई की ख़ुशी मनाना।
19 और ख़बरदार जब तक तू अपने मुल्क में ज़िन्दा रहे लावियों
को छोड़ न देना।
20 “जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस वा'दे के मुताबिक़ जो उसने
तुझ से किया है तुम्हारी सरहद को बढ़ाए, और तेरा जी गोश्त
खाने को करे और तू कहने लगे कि मै तो गोश्त खाऊँगा, तो तू
जैसा तेरा जी चाहे गोश्त खा सकता है।

21 और अगर वह जगह जिसे ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने अपने
नाम को वहाँ क़ाईम करने के लिए चुना है तेरे मकान से बहुत
दूर हो, तो तूअपने गाय बैल और भेड़ — बकरी में से जिनको
ख़ुदावन्द ने तुझको दिया है किसी को ज़बह कर लेना और जैसा
मैंने तुझको हुक्म दिया है तू उसके गोश्त को अपने दिल की चाहत
के मुताबिक़ अपने फाटकों के अन्दर खाना;
22 जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही तू उसे खाना।
पाक और नापाक दोनों तरह के आदमी उसे एक जैसे खा सकेंगे।
23 सिर्फ़ इतनी एहतियात ज़रूर रखना कि तू ख़ून को न खाना;
क्यूँकि ख़ून ही तो जान है, इसलिए तू गोश्त के साथ जान को
हरगिज़ न खाना।
24 तू उसको खाना मत, बल्कि उसे पानी की तरह ज़मीन पर
उँडेल देना;
25 तू उसे न खाना; ताकि तेरे उस काम के करने से जो ख़ुदावन्द
की नज़र में ठीक है, तेरा और तेरे साथ तेरी औलाद का भी भला
हो।
26 लेकिन अपनी पाक चीज़ों को जो तेरे पास हों और अपनी
मन्नतो की चीज़ों को उसी जगह ले जाना जिसे ख़ुदावन्द चुन ले।
27 और वहीं अपनी सोख़्तनी क़ुर्बानियों का गोश्त और ख़ून
दोनों ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के मज़बह पर पेश करना; और
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ही के मज़बह पर तेरे ज़बीहों का ख़ून उँडेला
जाए, मगर उनका गोश्त तू खाना।
28 इन सब बातों को जिनका मैं तुझको हुक्म देता हूँ ग़ौर से
सुन ले, ताकि तेरे उस काम के करने से जो ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की
नज़र में अच्छा और ठीक है, तेरा और तेरे बाद तेरी औलाद का
भला हो।
29 “जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे सामने से उन क़ौमों को उस
जगह जहाँ तू उनके वारिस होने को जा रहा है काट डाले, और तू

उनका वारिस होकर उनके मुल्क में बस जाये,
30 तो तू ख़बरदार रहना, कहीं ऐसा न हो कि जब वह तेरे आगे
से ख़त्म हो जाएँ तो तू इस फंदे में फँस जाये, कि उनकी पैरवी करे
और उनके मा'बूदों के बारे में ये दरियाफ़्त करे कि ये क़ौमें किस
तरह से अपने मा'बूदों की पूजा करती है? मै भी वैसा ही करूँगा।
31 तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए ऐसा न करना, क्यूँकि जिन
जिन कामों से ख़ुदावन्द को नफ़रत और 'अदावत है वह सब
उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, बल्कि अपने बेटों और
बेटियों को भी वह अपने मा'बूदों के नाम पर आग में डाल कर
जला देते हैं।
32 "जिस जिस बात का मैं हुक्म करता हूँ, तुम एहतियात करके
उस पर 'अमल करना और उसमें न तो कुछ बढ़ाना और न उसमें
से कुछ घटाना।

13

[illegible]

1 अगर तेरे बीच कोई नबी या ख़्वाब देखने वाला ज़ाहिर हो
और तुझको किसी निशान या अजीब बात की ख़बर दे।
2 और वह निशान या 'अजीब बात जिसकी उसने तुझको ख़बर
दी वजूद में आए और वह तुझ से कहे, कि आओ हम और मा'बूदों
की जिनसे तुम वाक़िफ़ नहीं पैरवी करके उनकी पूजा करें;
3 तो तू हरगिज़ उस नबी या ख़्वाब देखने वाले की बात को न
सुनना; क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुमको आज़माएगा, ताकि
जान ले कि तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल और
अपनी सारी जान से मुहब्बत रखते हो या नहीं।
4 तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की पैरवी करना, और उसका ख़ौफ़
मानना, और उसके हुक्मों पर चलना, और उसकी बात सुनना;
तुम उसी की बन्दगी करना और उसी से लिपटे रहना।

5 वह नबी या ख़्वाब देखने वाला क़त्ल किया जाए, क्यूँकि उसने
तुमको ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा से जिसने तुमको मुल्क — ए —
मिस्र से निकाला और तुझको ग़ुलामी के घर से रिहाई बख़्शी,
बग़ावत करने की तरगीब दी ताकि तुझको उस राह से जिस पर
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको चलने का हुक्म दिया है बहकाए। यूँ
तुम अपने बीच में से ऐसे गुनाह को दूर कर देना।
6 "अगर तेरा भाई, या तेरी माँ का बेटा, या तेरा बेटा या बेटी,
या तेरी हमआग़ोश बीवी, या तेरा दोस्त जिसको तू अपनी जान
के बराबर 'अज़ीज़ रखता है, तुझको चुपके चुपके फ़ुसलाकर कहे,
कि चलो, हम और मा'बूदों की पूजा करें जिनसे तू और तेरे बाप
— दादा वाक़िफ़ भी नहीं,
7 या'नी उन लोगों के मा'बूद जो तेरे चारों तरफ़ तेरे नज़दीक
रहते हैं, या तुझ से दूर ज़मीन के इस सिरे से उस सिरे तक बसे
हुए हैं;
8 तो तू इस पर उसके साथ रज़ामन्द न होना, और न उनकी
बात सुनना। तू उस पर तरस भी न खाना और न उसकी रि'आयत
करना और न उसे छिपाना।
9 बल्कि तू उसको ज़रूर क़त्ल करना और उसको क़त्ल करते
वक़्त पहले तेरा हाथ उस पर पड़े, इसके बाद सब क़ौम का हाथ।
10 और तू उसे संगसार करना ताकि वह मर जाए; क्यूँकि उसने
तुझको ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा से, जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र से
या'नी ग़ुलामी के घर से निकाल लाया, नाफ़रमान करना चाहा।
11 तब सब इस्राईल सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी
शरारत नहीं करेंगे।
12 "और जो शहर ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको रहने को दिए
हैं, अगर उनमें से किसी के बारे में तू ये अफ़वाह सुने, कि,
13 कुछ ख़बीस आदमियों ने तेरे ही बीच में से निकलकर अपने
शहर के लोगों को ये कहकर गुमराह कर दिया है, कि चलो, हम

और मा'बूदो की जिनसे तू वाक़िफ़ नहीं पूजा करें;
14 तो तू दरियाफ़्त और ख़ूब तफ़्तीश करके पता लगाना; और
देखो, अगर ये सच हो और क़त'ई यही बात निकले, कि ऐसा
मकरूह काम तेरे बीच किया गया,
15 तो तू उस शहर के बाशिन्दों को तलवार से ज़रूर क़त्ल कर
डालना, और वहाँ का सब कुछ और चौपाये वग़ैरा तलवार ही से
हलाक कर देना।
16 और वहाँ की सारी लूट को चौक के बीच जमा' कर के उस
शहर को और वहाँ की लूट को, तिनका तिनका ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा के सामने आग से जला देना; और वह हमेशा को एक ढेर
सा पड़ा रहे, और फिर कभी बनाया न जाए।
17 और उनकी मख़्सूस की हुई चीज़ों में से कुछ भी तेरे हाथ
में न रहे; ताकि ख़ुदावन्द अपने क़हर — ए — शदीद से बाज़
आए, और जैसा उसने तेरे बाप — दादा से क़सम खाई है, उस के
मुताबिक़ तुझ पर रहम करे और तरस खाए और तुझको बढ़ाए।
18 ये तब ही होगा जब तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की *बात मान
कर उसके हुक्मों पर जो आज मैं तुझको देता हूँ चले, और जो कुछ
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा की नज़र में ठीक है उसी को करे।

14

1 "तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के फ़र्ज़न्द हो, तुम मुर्दों की वजह
से अपने आप को ज़ख़्मी न करना, और न अपने अबरू के बाल
मुंडवाना।
2 क्यूँकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की मुक़द्दस क़ौम है और
ख़ुदावन्द ने तुझको इस ज़मीन की और सब क़ौमों में से चुन लिया
है ताकि तू उसकी ख़ास क़ौम ठहरे।

* **13:18** हुक्म

3 “तू किसी घिनौनी चीज़ को मत खाना।
4 जिन चौपायों को तुम खा सकते हो वह ये हैं, या'नी गाय —
बैल, और भेड़, और बकरी,
5 और चिकारे और हिरन, और छोटा हिरन और बुज़कोही और
साबिर और नीलगाय और, जंगली भेड़।
6 और चौपायों में से जिस जिस के पाँव अलग और चिरे हुए हैं
और वह जुगाली भी करता हो तुम उसे खा सकते हो।
7 लेकिन उनमें से जो जुगाली करते हैं या उनके पाँव चिरे हुए हैं
तुम उनको, या'नी ऊँट, और ख़रगोश, और साफ़ान को न खाना,
क्यूँकि ये जुगाली करते हैं लेकिन इनके पाँव चिरे हुए नहीं हैं;
इसलिए ये तुम्हारे लिए नापाक हैं।
8 और सूअर तुम्हारे लिए इस वजह से नापाक है कि उसके पाँव
तो चिरे हुए हैं लेकिन वह जुगाली नहीं करता। तुम न तो उनका
गोश्त खाना और न उनकी लाश को हाथ लगाना।
9 'आबी जानवरों में से तुम उन ही को खाना जिनके पर और
छिल्के हों।
10 लेकिन जिसके पर और छिल्के न हों तुम उसे मत खाना, वह
तुम्हारे लिए नापाक हैं।
11 “पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खा सकते हो,
12 लेकिन इनमें से तुम किसी को न खाना, या'नी 'उक़ाब, और
उस्तुख़्वानख़्वार, और बहरी 'उक़ाब,
13 और चील और बाज़ और गिद्ध और उनकी क़िस्म के:
14 हर क़िस्म का कौवा,
15 और शुतुरमुर्ग़ और चुग़द और कोकिल और क़िस्म क़िस्म के
शाहीन,
16 और बूम, और उल्लू, और क़ाज़,
17 और हवासिल, और रख़म, और हड़गीला,
18 और लक़ — लक़, और हर क़िस्म का बगुला, और हुद —

हुद, और चमगादड़।

19 और सब परदार रेंगने वाले जानदार तुम्हारे लिए नापाक हैं, वह खाए न जाएँ।

20 और पाक परिन्दों में से तुम जिसे चाहो खाओ।

21 "जो जानवर आप ही मर जाए तू उसे मत खाना; तू उसे किसी परदेसी को, जो तेरे फाटकों के अन्दर हो खाने को दे सकता है, या उसे किसी अजनबी आदमी के हाथ बेच सकता है; क्यूँकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की मुक़द्दस क़ौम है। तू हलवान को उसकी माँ के दूध में न उबालना।

[illegible]

22 "तू अपने ग़ल्ले में से, जो हर साल तुम्हारे खेतों में पैदा हो दहेकी देना।

23 और तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने उसी मक़ाम में जिसे वह अपने नाम के घर के लिए चुने, अपने ग़ल्ले और मय और तेल की दहेकी को, और अपने गाय — बैल और भेड़ — बकरियों के पहलौठों को खाना, ताकि तू हमेशा ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखे।

24 और अगर वह जगह जिसको ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अपने नाम को वहाँ क़ाईम करने के लिए चुने तेरे घर से बहुत दूर हो, और रास्ता भी इस क़दर लम्बा हो कि तू अपनी दहेकी को उस हाल में जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको बरकत बख़्शे वहाँ तक न ले जा सके,

25 तो तू उसे बेच कर रुपये को बाँध, हाथ में लिए हुए उस जगह चले जाना जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा चुने।

26 और इस रुपये से जो कुछ तेरा जी चाहे, चाहे गाय — बैल, या भेड़ — बकरी, या मय, या शराब मोल लेकर उसे अपने घराने समेत वहाँ ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने खाना और ख़ुशी मनाना।

27 और लावी को जो तेरे फाटकों के अन्दर है छोड़ न देना,
क्यूँकि उसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं हैं।
28 'तीन तीन बरस के बाद तू तीसरे बरस के माल की सारी
दहेकी निकाल कर उसे अपने फाटकों के अन्दर इकट्ठा करना।
29 तब लावी जिसका तेरे साथ कोई हिस्सा या मीरास नहीं,
और परदेसी और यतीम और बेवा 'औरतें जो तेरे फाटकों के अन्दर
हों आएँ, और खाकर सेर हों, ताकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे सब
कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे।

15

[illegible]

1 'हर सात साल के बाद तू छुटकारा दिया करना।
2 और छुटकारा देने का तरीक़ा ये हो, कि अगर किसी ने अपने
पड़ोसी को कुछ क़र्ज़ दिया हो तो वह उसे छोड़ दे, और अपने
पड़ोसी से या भाई से उसका मुताल्बा न करे; क्यूँकि ख़ुदावन्द के
नाम से इस छुटकारे का 'ऐलान हुआ है।
3 परदेसी से तू उसका मुताल्बा कर सकता है, पर जो कुछ तेरा
तेरे भाई पर आता हो उसकी तरफ़ से दस्तबरदार हो जाना।
4 तेरे बीच कोई कंगाल न रहे; क्यूँकि ख़ुदावन्द तुझको इस
मुल्क में ज़रूर बरकत बख़्शेगा, जिसे ख़ुद ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
मीरास के तौर पर तुझको क़ब्ज़ा करने को देता है।
5 बशर्ते कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की *बात मान कर इन सब
अहकाम पर चलने की एहतियात रक्खे, जो मैं आज तुझको देता
हूँ।
6 क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, जैसा उसने तुझ से वा'दा किया
है, तुझको बरकत बख़्शेगा और तू बहुत सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा,

* **15:5** हुक्म

पर तुझको उनसे क़र्ज़ लेना न पड़ेगा; और तू बहुत सी क़ौमों पर
हुक्मरानी करेगा, लेकिन वह तुझ पर हुक्मरानी करने न पाएँगी।
7 जो मुल्क ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है, अगर उसमें
कहीं तेरे फाटकों के अन्दर तेरे भाइयों में से कोई ग़रीब हो, तो
तू अपने उस ग़रीब भाई की तरफ़ से न अपना दिल सख़्त करना
और न अपनी मुट्ठी बन्द कर लेना;
8 बल्कि उसकी ज़रूरत दूर करने को जो चीज़ उसे दरकार हो,
उसके लिए तू ज़रूर खुले दिल से उसे क़र्ज़ देना।
9 ख़बरदार रहना कि तेरे दिल में ये बुरा ख़याल न गुज़रने पाए
कि सातवाँ साल, जो छुटकारे का साल है, नज़दीक है और तेरे
ग़रीब भाई की तरफ़ से तेरी नज़र बद हो जाए और तू उसे कुछ
न दे; और वह तेरे ख़िलाफ़ ख़ुदावन्द से फ़रियाद करे और ये तेरे
लिए गुनाह ठहरे।
10 बल्कि तुझको उसे ज़रूर देना होगा; और उसको देते वक़्त
तेरे दिल को बुरा भी न लगे, इसलिए कि ऐसी बात की वजह
से ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे सब कामों में, और सब मु'आमिलों में
जिनको तू अपने हाथ में लेगा तुझको बरकत बख़्शेगा।
11 और चूँकि मुल्क में कंगाल हमेशा पाए जाएँगे, इसलिए मैं
तुझको हुक्म करता हूँ कि तू अपने मुल्क में अपने भाई या'नी
कंगालों और मुहताजों के लिए अपनी मुट्ठी खुली रखना।

[illegible]

12 'अगर तेरा कोई भाई, चाहे वह 'इब्रानी मर्द हो या 'इब्रानी
'औरत तेरे हाथ बिके और वह छः बरस तक तेरी ख़िदमत करे, तो
तू सातवें साल उसको आज़ाद होकर जाने देना।
13 और जब तू उसे आज़ाद कर के अपने पास से रुख़्सत करे,
तो उसे ख़ाली हाथ न जाने देना।

14 बल्कि तू अपनी भेड़ बकरी और खत्ते और कोल्हू में से दिल
खोलकर उसे देना, या'नी ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने जैसी बरकत
तुझको दी हो उसके मुताबिक़ उसे देना।
15 और याद रखना कि मुल्क — ए — मिस्र में तू भी ग़ुलाम था,
और ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको छुड़ाया; इसीलिए मैं तुझको
इस बात का हुक्म आज देता हूँ।
16 और अगर वह इस वजह से कि उसे तुझसे और तेरे घराने से
मुहब्बत हो और वह तेरे साथ ख़ुशहाल हो, तुझ से कहने लगे कि
मैं तेरे पास से नहीं जाता।
17 तो तू एक सुतारी लेकर उसका कान दरवाज़े से लगाकर छेद
देना, तो वह हमेशा तेरा ग़ुलाम बना रहेगा। और अपनी लौंडी
से भी ऐसा ही करना।
18 और अगर तू उसे आज़ाद करके अपने पास से रुख़्सत करे
तो उसे मुश्किल न गरदानना; क्यूँकि उसने दो मज़दूरों के बराबर
छ: बरस तक तेरी ख़िदमत की, और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे सब
कारोबार में तुझको बरकत बख़्शेगा।

[illegible]

19 "तेरे गाय — बैल और भेड़ — बकरियों में जितने पहलौठे
नर पैदा हों, उन सब को ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए मुक़द्दस
करना, अपने गाय — बैल के पहलौठे से कुछ काम न लेना और
न अपनी भेड़ — बकरी के पहलौठे के बाल कतरना।
20 तू उसे अपने घराने समेत ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने
उसी जगह जिसे ख़ुदावन्द चुन ले, साल — ब — साल खाया
करना।
21 और अगर उसमें कोई नुक़्स हो मसलन वह लंगड़ा या अन्धा
हो या उसमें और कोई बुरा 'ऐब हो, तो ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के
लिए उसकी क़ुर्बानी न गुज़रानना।

22 तू उसे अपने फाटकों के अन्दर खाना। पाक और नापाक
दोनों तरह के आदमी जैसे चिकारे और हिरन को खाते हैं वैसे ही
उसे खाएँ।
23 लेकिन उसके ख़ून को हरगिज़ न खाना; बल्कि तू उसको
पानी की तरह ज़मीन पर उँडेल देना।

16

[illegible]

1 'तू *अबीब के महीने को याद रखना और उसमें ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा की फ़सह करना क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अबीब
के महीने में रात के वक़्त तुझको †मिस्र से निकाल लाया।
2 और जिस जगह को ख़ुदावन्द अपने नाम के घर के लिए चुने,
वहीं तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए अपने गाय — बैल और भेड़
— बकरी में से फ़सह की क़ुर्बानी पेश करना।
3 तू उसके साथ ख़मीरी रोटी न खाना, बल्कि सात दिन तक
उसके साथ बेख़मीरी रोटी जो दुख की रोटी है खाना; क्यूँकि तू
मुल्क — ए — मिस्र से हड़बड़ी में निकला था। यूँ तू उम्र भर उस
दिन को जब तू मुल्क — ए — मिस्र से निकले याद रख सकेगा।
4 और तेरी हदों के अन्दर सात दिन तक कहीं ख़मीर नज़र न
आए, और उस क़ुर्बानी में से जिसको तू पहले दिन की शाम को
चढ़ाए कुछ गोश्त सुबह तक बाक़ी न रहने पाए।
5 तू फ़सह की क़ुर्बानी को अपने फाटकों के अन्दर, जिनको
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको दिया हो कहीं न चढ़ाना;
6 बल्कि जिस जगह को ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अपने नाम के
घर के लिए चुनेगा, वहाँ तू फ़सह की क़ुर्बानी को उस वक़्त जब

* **16:1** अबीब, इब्री कैलेंडर का पहला माहिना था, मसावी तोर से मार्च से अप्रैल का महिना, मगर बाद में इस का नाम निसान पड़गया † **16:1** मुल्क — ए — मिस्र

तू मिस्र से निकला था, या'नी शाम को सूरज डूबते वक़्त अदा
करना।
7 और जिस जगह को ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा चुने वहीं उसे भून कर
खाना और फिर सुबह को अपने — अपने ख़ेमे को लौट जाना।
8 छ: दिन तक बेख़मीरी रोटी खाना और सातवें दिन ख़ुदावन्द
तेरे ख़ुदा की ख़ातिर पाक मजमा' हो, उसमें तू कोई काम न करना।

[illegible]

9 फिर तू सात हफ़्ते यूँ गिनना, कि जब से हँसुआ लेकर फ़सल
काटनी शुरू' करे तब से सात हफ़्ते गिन लेना।
10 तब जैसी बरकत ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने दी हो, उसके
मुताबिक़ अपने हाथ की रज़ा की क़ुर्बानी का हदिया लाकर
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए हफ़्तों की 'ईद मनाना।
11 और उसी जगह जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अपने नाम के
घर के लिए चुनेगा, तू और तेरे बेटे बेटियाँ और तेरे ग़ुलाम
और लौंडियाँ और वह लावी जो तेरे फाटकों के अन्दर हो, और
मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे बीच हों, सब मिल कर
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी मनाना।
12 और याद रखना के तू मिस्र में ग़ुलाम था और इन हुक्मों पर
एहतियात करके 'अमल करना।

[illegible] — [illegible] — [illegible]

13 जब तू अपने खलीहान और कोल्हू का माल जमा' कर चुके,
तो सात दिन तक 'ईद — ए — ख़ियाम करना।
14 और तू और तेरे बेटे बेटियाँ और ग़ुलाम और लौंडियाँ और
लावी, और मुसाफ़िर और यतीम और बेवा जो तेरे फाटकों के
अन्दर हों, सब तेरी इस 'ईद में ख़ुशी मनाएँ।
15 सात दिन तक तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए उसी जगह
जिसे ख़ुदावन्द चुने, 'ईद करना, इसलिए कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा

तेरे सारे माल में और सब कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको
बरकत बख़्शेगा, इसलिए तू पूरी — पूरी ख़ुशी करना।
16 और साल में तीन बार, या'नी बेख़मीरी रोटी की 'ईद और
हफ़्तों की 'ईद और 'ईद — ए — ख़ियाम के मौक़े' पर तेरे यहाँ के
सब मर्द ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के आगे, उसी जगह हाज़िर हुआ
करें जिसे वह चुनेगा। और जब आएँ तो ख़ुदावन्द के सामने ख़ाली
हाथ न आएँ;
17 बल्कि हर मर्द जैसी बरकत ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको
बख़्शी हो अपनी तौफ़ीक़ के मुताबिक़ दे।

????? ?? ???? ???????

18 तू अपने क़बीलों की सब बस्तियों में जिनको ख़ुदावन्द तेरा
ख़ुदा तुझको दे, क़ाज़ी और हाकिम मुक़र्रर करना जो सदाक़त से
लोगों की 'अदालत करें।
19 तू इन्साफ़ का ख़ून न करना। तू न तो किसी की रू'रि'आयत
करना और न रिश्वत लेना, क्यूँकि रिश्वत 'अक़्लमन्द की आँखों
को अन्धा कर देती है और सादिक़ की बातों को पलट देती है।
20 जो कुछ बिल्कुल हक़ है तू उसी की पैरवी करना, ताकि तू
ज़िन्दा रहे और उस मुल्क का मालिक बन जाये जो ख़ुदावन्द तेरा
ख़ुदा तुझको देता है।
21 जो मज़बह तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए बनाये उसके
क़रीब किसी क़िस्म के दरख़्त की यसीरत न लगाना,
22 और न कोई सुतून अपने लिए खड़ा कर लेना, जिससे
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा को नफ़रत है।

17

1 तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए कोई बैल या भेड़ — बकरी,
जिसमें कोई 'ऐब या बुराई हो, ज़बह मत करना क्यूँकि यह
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के नज़दीक मकरूह है।

2 'अगर तेरे बीच तेरी बस्तियों में जिनको ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
तुझको दे, कहीं कोई मर्द या 'औरत मिले जिसने ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा के सामने यह बदकारी की हो कि उसके 'अहद को तोड़ा हो,
3 और जाकर और मा'बूदों की या सूरज या चाँद या अजराम
— ए — फ़लक में से किसी की, जिसका हुक्म मैंने तुझको नहीं
दिया, इबादत और परस्तिश की हो,
4 और यह बात तुझको बताई जाए और तेरे सुनने में आए, तो
तू जाँफ़िशानी से तहक़ीक़ात करना और अगर यह ठीक हो और
कत'ई तौर पर साबित हो जाए कि इस्राईल में ऐसा मकरूह काम
हुआ,
5 तो तू उस मर्द या उस 'औरत को जिसने यह बुरा काम किया
हो, बाहर अपने फाटकों पर निकाल ले जाना और उनको ऐसा
संगसार करना कि वह मर जाएँ।
6 जो वाजिब — उल — क़त्ल ठहरे वह दो या तीन आदमियों
की गवाही से मारा जाए, सिर्फ़ एक ही आदमी की गवाही से वह
मारा न जाए।
7 उसको क़त्ल करते वक़्त गवाहों के हाथ पहले उस पर उठे
उसके बाद बाक़ी सब लोगों के हाथ, यूँ तू अपने बीच से शरारत
को दूर किया करना।
8 अगर तेरी बस्तियों में कहीं आपस के ख़ून या आपस के दा'वे
या आपस की मार पीट के बारे में कोई झगड़े की बात उठे, और
उसका फ़ैसला करना तेरे लिए निहायत ही मुश्किल हो, तो तू उठ
कर उस जगह जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा चुनेगा जाना।
9 और लावी काहिनों और उन दिनों के क़ाज़ियों के पास पहुँच
कर उनसे दरियाफ़्त करना, और वह तुझको फ़ैसले की बात
बताएँगे;
10 और तू उसी फ़ैसले के मुताबिक़ जो वह तुझको उस जगह
से जिसे ख़ुदावन्द चुनेगा बताए 'अमल करना। जैसा वह तुमको

सिखाएँ उसी के मुताबिक़ सब कुछ एहतियात करके मानना।
11 शरी'अत की जो बात वह तुझको सिखाएँ और जैसा फ़ैसला
तुझको बताएँ, उसी के मुताबिक़ करना और जो कुछ फ़तवा वह
दें उससे दहने या बाएँ न मुड़ना।
12 और अगर कोई शख़्स गुस्ताख़ी से पेश आए कि उस काहिन
की बात, जो ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के सामने ख़िदमत के लिए खड़ा
रहता है या उस क़ाज़ी का कहा न सुने, तो वह शख़्स मार डाला
जाए और तू इस्राईल में से ऐसी बुराई को दूर कर देना।
13 और सब लोग सुन कर डर जाएँगे और फिर गुस्ताख़ी से पेश
नहीं आएँगे।

□□□□□□□ □□ □□□□□□

14 जब तू उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता
है पहुँच जाये, और उस पर क़ब्ज़ा कर के वहाँ रहने और कहने
लगे, कि उन क़ौमों की तरह जो मेरे चारों तरफ़ हैं मैं भी किसी को
अपना बादशाह बनाऊँ।
15 तो तू बहरहाल सिर्फ़ उसी को अपना बादशाह बनाना
जिसको ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा चुन ले, तू अपने भाइयों में से ही
किसी को अपना बादशाह बनाना, और परदेसी को जो तेरा भाई
नहीं अपने ऊपर हाकिम न कर लेना।
16 इतना ज़रूर है कि वह अपने लिए बहुत घोड़े न बढ़ाए, [*]और
न लोगों को [†]मिस्र में भेजे ताकि उसके पास बहुत से घोड़े हो जाएँ,
इसलिए कि ख़ुदावन्द ने तुमसे कहा है कि तुम उस राह से फिर
कभी उधर न लौटना।
17 और वह बहुत सी बीवियाँ भी न रक्खे ऐसा न हो कि उसका
दिल फिर जाए, और न वह अपने लिए सोना चाँदी ज़ख़ीरा करे।

[*] **17:16** घोड़ों के बदल गुलामों को मत भेजो [†] **17:16** मुल्क — ए — मिस्र

18 और जब वह तख़्त — ए — सल्तनत पर बैठा करे तो उस
शरी'अत की जो लावी काहिनों के पास रहेगी, एक नक़ल अपने
लिए एक किताब में उतार ले।
19 और वह उसे अपने पास रख्खे और अपनी सारी उम्र उसको
पढ़ा करे, ताकि वह ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना और
उस शरी'अत और आईन की सब बातों पर 'अमल करना सीखे;
20 जिससे उसके दिल में ग़ुरूर न हो कि वह अपने भाइयों
को हक़ीर जाने, और इन अहकाम से न तो दहने न बाएँ मुड़े;
ताकि इस्राईलियों के बीच उसकी और उसकी औलाद की सल्तनत
ज़माने तक रहे।

18

[illegible]

1 लावी काहिनों या'नी लावी के क़बीले का कोई हिस्सा और
मीरास इस्राईल के साथ न हो; वह ख़ुदावन्द की आतिशीन
क़ुर्बानियाँ और उसी की मीरास खाया करें।
2 इसलिए उनके भाइयों के साथ उनको मीरास न मिले;
ख़ुदावन्द उनकी मीरास है, जैसा उसने ख़ुद उनसे कहा है।
3 और जो लोग गाय — बैल या भेड़ या बकरी की क़ुर्बानी
गुज़रानते हैं उनकी तरफ़ से काहिनों का यह हक़ होगा, कि वह
काहिन को शाना और कनपटियाँ और झोझ दें।
4 और तू अपने अनाज और मय और तेल के पहले फल में से,
और अपनी भेड़ों के बाल में से जो पहली दफ़ा' कतरे जाएँ उसे
देना।
5 क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने उसको तेरे सब क़बीलों में से चुन
लिया है, ताकि वह और उसकी औलाद हमेशा ख़ुदावन्द के नाम
से ख़िदमत के लिए हाज़िर रहें।
6 और तेरी जो बस्तियाँ सब इस्राईलियों में हैं उनमें से अगर
कोई लावी किसी बस्ती से जहाँ वह बूद — ओ — बाश करता

था आए, और अपने दिल की पूरी चाहत से उस जगह हाज़िर हो
जिसको ख़ुदावन्द चुनेगा:
7 तो अपने सब लावी भाइयों की तरह जो वहाँ ख़ुदावन्द के
सामने खड़े रहते हैं, वह भी ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के नाम से
ख़िदमत करे।
8 और उन सबको खाने को बराबर हिस्सा मिले, 'अलावा उस
क़ीमत के जो उसके बाप — दादा की मीरास बेचने से उसे हासिल
हो।

[illegible]

9 जब तू उस मुल्क में जो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुमको देता है
पहुँच जाओ, तो वहाँ की क़ौमों की तरह मकरूह काम करने न
सीखना।
10 तुझमें हरगिज़ कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे या बेटी को
आग में चलवाए, या फ़ालगीर या शगुन निकालने वाला या
अफ़सूँनगर या जादूगर
11 या मंतरी या जिन्नात का आशना या रम्माल या साहिर हो।
12 क्यूँकि वह सब जो ऐसा काम करते हैं ख़ुदावन्द के नज़दीक
मकरूह हैं, और इन ही मकरूहात की वजह से ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
उनको तेरे सामने से निकालने पर है।
13 तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने कामिल रहना।
14 क्यूँकि वह क़ौमें जिनका तू वारिस होगा शगुन निकालने
वालों और फ़ालगीर की सुनती हैं; लेकिन तुझको ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा ने ऐसा करने न दिया।

[illegible]

15 ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे लिए तेरे ही बीच से, या'नी तेरे ही
भाइयों में से मेरी तरह एक नबी खड़ा करेगा तुम उसकी सुनना;
16 यह तेरी उस दरख़्वास्त के मुताबिक़ होगा जो तूने ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा से मजमे' के दिन होरिब में की थी, 'मुझको न तो

ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की *आवाज़ फिर सुननी पड़े और न ऐसी
बड़ी आग ही का नज़ारा हो, ताकि मैं मर न जाऊँ।
17 और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा कि “वह जो कुछ कहते हैं
इसलिए ठीक कहते हैं।
18 मैं उनके लिए उन ही के भाइयों में से तेरी तरह एक नबी
खड़ा करूँगा, और अपना कलाम उसके मुँह में डालूँगा, और जो
कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वह उनसे कहेगा।
19 और जो कोई मेरी उन बातों की जिनकी वह मेरा नाम लेकर
कहेगा न सुने, तो मैं उनका हिसाब उनसे लूँगा।
20 लेकिन जो नबी गुस्ताख़ बन कर कोई ऐसी बात मेरे नाम से
कहे, जिसके कहने का मैंने उसको हुक्म नहीं दिया या और मा'बूदों
के नाम से कुछ कहे, तो वह नबी क़त्ल किया जाए।
21 और अगर तू अपने दिल में कहे कि 'जो बात ख़ुदावन्द ने
नहीं कही है, उसे हम क्यूँ कर पहचानें?'
22 तो पहचान यह है, कि जब वह नबी ख़ुदावन्द के नाम से
कुछ कहे और उसके कहे कि मुताबिक़ कुछ वाक़े' या पूरा न हो,
तो वह बात ख़ुदावन्द की कही हुई नहीं; बल्कि उस नबी ने वह
बात ख़ुद गुस्ताख़ बन कर कही है, तू उससे ख़ौफ़ न करना।

19

[illegible]

1 जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उन क़ौमों को, जिनका मुल्क
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है काट डाले, और तू उनकी जगह
उनके शहरों और घरों में रहने लगे,
2 तो तू उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको क़ब्ज़ा
करने को देता है, तीन शहर अपने लिए अलग कर देना।

* **18:16** हुक्म

3 और *तू एक रास्ता भी अपने लिए तैयार करना, और अपने
उस मुल्क की ज़मीन को जिस पर ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको
क़ब्ज़ा दिलाता है तीन हिस्से करना, ताकि हर एक ख़ूनी वहीं भाग
जाए।
4 और उस क़ातिल का जो वहाँ भाग कर अपनी जान बचाए
हाल यह हो, कि उसने अपने पड़ोसी को अनजाने में और बग़ैर
उससे पुरानी दुश्मनी रख्खे मार डाला हो।
5 मसलन कोई शख़्स अपने पड़ोसी के साथ लकड़ियाँ काटने
को जंगल में जाए और कुल्हाड़ा हाथ में उठाए ताकि दरख़्त काटे,
और कुल्हाड़ा दस्ते से निकल कर उसके पड़ोसी के जा लगे और
वह मर जाए, तो वह इन शहरों में से किसी में भाग कर ज़िन्दा
बचे।
6 कहीं ऐसा न हो कि रास्ते की लम्बाई की वजह से ख़ून का
इन्तक़ाम लेने वाला अपने जोश — ए — ग़ज़ब में क़ातिल
का पीछा करके उसको जा पकड़े और उसको क़त्ल करे, हालाँके
वह वाजिब — उल — क़त्ल नहीं क्यूँकि उसे मक़्तूल से पुरानी
दुश्मनी न थी।
7 इसलिए मैं तुझको हुक्म देता हूँ कि तू अपने लिए तीन शहर
अलग कर देना।
8 और अगर ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस क़सम के मुताबिक़ जो
उसने तेरे बाप — दादा से खाई, तेरी सरहद को बढ़ाकर वह सब
मुल्क जिसके देने का वा'दा उसने तेरे बाप दादा से किया था
तुझको दे।
9 और तू इन सब हुक्मों पर जो आज के दिन मैं तुझको देता
हूँ ध्यान करके 'अमल करे और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत
रख्खे और हमेशा उसकी राहों पर चले, तो इन तीन शहरों के
आलावा तीन शहर और अपने लिए अलग कर देना।
10 ताकि तेरे मुल्क के बीच जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको

* **19:3** या वहां जाने के लिएफ़ासले को नापो

मीरास में देता है, बेगुनाह का ख़ून बहाया न जाए और वह ख़ून
यूँ तेरी गर्दन पर हो।
11 लेकिन अगर कोई शख़्स अपने पड़ोसी से दुश्मनी रखता
हुआ उसकी घात में लगे, और उस पर हमला कर के उसे ऐसा
मारे कि वह मर जाए और वह ख़ुद उन शहरों में से किसी में भाग
जाए।
12 तो उसके शहर के बुज़ुर्ग लोगों को भेजकर उसे वहाँ से
पकड़वा मँगवाएँ, और उसको ख़ून के इन्तक़ाम लेने वाले के हाथ
में हवाले करें ताकि वह क़त्ल हो।
13 तुझको उस पर ज़रा तरस न आए, बल्कि तू इस तरह
बेगुनाह के ख़ून को इस्राईल से दफ़ा' करना ताकि तेरा भला हो।

[illegible]

14 तू उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको क़ब्ज़ा करने
को देता है, अपने पड़ोसी की हद का निशान जिसको अगले लोगों
ने तेरी मीरास के हिस्से में ठहराया हो मत हटाना।
15 किसी शख़्स के ख़िलाफ़ उसकी किसी बदकारी या गुनाह के
बारे में जो उससे सरज़द हो, एक ही गवाह बस नहीं बल्कि दो
गवाहों या तीन गवाहों के कहने से बात पक्की समझी जाए।
16 अगर कोई झूटा गवाह उठ कर किसी आदमी की बदी की
निस्बत गवाही दे,
17 तो वह दोनों आदमी जिनके बीच यह झगड़ा हो, ख़ुदावन्द
के सामने काहिनों और उन दिनों के क़ाज़ियों के आगे खड़े हों,
18 और क़ाज़ी ख़ूब तहक़ीक़ात करें, और अगर वह गवाह झूटा
निकले और उसने अपने भाई के ख़िलाफ़ झूटी गवाही दी हो;
19 तो जो हाल उसने अपने भाई का करना चाहा था, वही तुम
उसका करना; और यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' कर
देना।

20 और दूसरे लोग सुन कर डरेंगे और तेरे बीच फिर ऐसी बुराई
नहीं करेंगे।
21 और तुझको ज़रा तरस न आए; जान का बदला जान, आँख
का बदला आँख, दाँत का बदला दाँत, हाथ का बदला हाथ, और
पाँव का बदला पाँव हो।

20

[illegible]

1 जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को जाये, और घोड़ों और
रथों और अपने से बड़ी फ़ौज को देखे तो उनसे डर न जाना; क्यूँकि
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा जो तुझको मुल्क — ए — मिस्र से निकाल
लाया तेरे साथ है।
2 और जब मैदान — ए — जंग में तुम्हारा मुक़ाबला होने को
हो तो काहिन फ़ौज के आदमियों के पास जाकर उनकी तरफ़
मुख़ातिब हो,
3 और उनसे कहे, 'सुनो ऐ इस्राईलियों, तुम आज के दिन अपने
दुश्मनों के मुक़ाबले के लिए मैदान — ए — जंग में आए हो;
इसलिए तुम्हारा दिल परेशान न हो, तुम न ख़ौफ़ करो, न काँपो,
न उनसे दहशत खाओ।
4 क्यूँकि ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा तुम्हारे साथ — साथ चलता
है, ताकि तुमको बचाने को तुम्हारी तरफ़ से तुम्हारे दुश्मनों से जंग
करे।"
5 फिर फ़ौजी अफ़सरान लोगों से यूँ कहें कि 'तुम में से जिस
किसी ने नया घर बनाया हो और उसे मख़्सूस न किया हो तो वह
अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में क़त्ल हो और
दूसरा शख़्स उसे मख़्सूस करे।
6 और जिस किसी ने ताकिस्तान लगाया हो लेकिन अब तक
उसका फल इस्ते'माल न किया हो वह भी अपने घर को लौट

जाए, ऐसा न हो कि वह जंग में मारा जाए और दूसरा आदमी
उसका फल खाए।
7 और जिसने किसी 'औरत से अपनी मंगनी तो कर ली हो
लेकिन उसे ब्याह कर नहीं लाया है वह अपने घर को लौट जाए,
ऐसा न हो कि वह लड़ाई में मारा जाए और दूसरा मर्द उससे ब्याह
करे।
8 और फ़ौजी हाकिम लोगों की तरफ़ मुख़ातिब हो कर उनसे
यह भी कहें कि 'जो शख़्स डरपोक और कच्चे दिल का हो वह भी
अपने घर को लौट जाए, ऐसा न हो कि उसकी तरह उसके भाइयों
का हौसला भी टूट जाए।
9 और जब फ़ौजी हाकिम यह सब कुछ लोगों से कह चुकें, तो
लश्कर के सरदारों को उन पर मुक़र्रर कर दें।
10 जब तू किसी शहर से जंग करने को उसके नज़दीक पहुँचे,
तो पहले उसे सुलह का पैग़ाम देना।
11 और अगर वह तुझको सुलह का जवाब दे और अपने फाटक
तेरे लिए खोल दे, तो वहाँ के सब बाशिन्दे तेरे बाजगुज़ार बन कर
तेरी ख़िदमत करें।
12 और अगर वह तुझसे सुलह न करें बल्कि तुझसे लड़ना चाहें,
तो तुम उसका मुहासिरा करना;
13 और जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उसे तेरे क़ब्ज़े में कर दे तो वहाँ
के हर मर्द को तलवार से क़त्ल कर डालना।
14 लेकिन 'औरतों और बाल बच्चों और चौपायों और उस शहर
का सब माल और लूट को अपने लिए रख लेना, और तू अपने
दुश्मनों की उस लूट को जो ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको दी हो
खाना।
15 उन सब शहरों का यही हाल करना जो तुझसे बहुत दूर हैं
और इन क़ौमों के शहर नहीं हैं।
16 लेकिन इन क़ौमों के शहरों में जिनको ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
मीरास के तौर पर तुझको देता है, किसी आदमी को ज़िन्दा न

बाक़ी रखना।
17 बल्कि तू इनको या'नी हित्ती और अमोरी और कना'नी और
फ़रिज़्ज़ी और हव्वी और यबूसी क़ौमों को, जैसा ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा ने तुझको हुक्म दिया है बिल्कुल हलाक कर देना।
18 ताकि वह तुमको अपने से मकरूह काम करने न सिखाएँ
जो उन्होंने अपने मा'बूदों के लिए किए हैं, और यूँ तुम ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के ख़िलाफ़ गुनाह करने लगो।
19 जब तू किसी शहर को फ़तह करने के लिए उससे जंग करे
और ज़माने तक उसको घेरे रहे, तो उसके दरख़्तों को कुल्हाड़ी से
न काट डालना क्यूँकि उनका फल तेरे खाने के काम में आएगा
इसलिए तू उनको मत काटना। क्यूँकि क्या मैदान का दरख़्त
इंसान है कि तू उसको घेरे रहे?
20 इसलिए सिर्फ़ उन्हीं दरख़्तों को काट कर उड़ा देना जो तेरी
समझ में खाने के मतलब के न हों, और तू उस शहर के सामने जो
तुझसे जंग करता हो बुर्जों को बना लेना जब तक वह सर न हो
जाए।

21

[illegible]

1 अगर उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको क़ब्ज़ा
करने को देता है, किसी मक़्तूल की लाश मैदान में पड़ी हुई मिले
और यह मा'लूम न हो कि उसका क़ातिल कौन है;
2 तो तेरे बुज़ुर्ग और क़ाज़ी निकल कर उस मक़्तूल के चारों
तरफ़ के शहरों के फ़ासले को नापें,
3 और जो शहर उस मक़्तूल के सब से नज़दीक हो, उस शहर
के बुज़ुर्ग एक बछिया लें जिससे कभी कोई काम न लिया गया हो
और न वह जुए में जोती गई हो;

4 और उस शहर के बुज़ुर्ग उस बछिया को बहते पानी की वादी
में, जिसमें न हल चला हो और न उसमें कुछ बोया गया हो ले
जाएँ, और वहाँ उस वादी में उस बछिया की गर्दन तोड़ दें।
5 तब बनी लावी जो काहिन है नज़दीक आयें क्यूँकि ख़ुदावन्द
तेरे ख़ुदा ने उनको चुन लिया है कि ख़ुदावन्द की ख़िदमत करें और
उसके नाम से बरकत दिया करें, और उन ही के कहने के मुताबिक़
हर झगड़े और मार पीट के मुक़द्दमे का फ़ैसला हुआ करे।
6 फिर इस शहर के सब बुज़ुर्ग जो उस मक़्तूल के सब से नज़दीक
रहने वाले हों, उस बछिया के ऊपर जिसकी गर्दन उस वादी में
तोड़ी गई अपने अपने हाथ धोएँ,
7 और यूँ कहें, 'हमारे हाथ से यह ख़ून नहीं हुआ और न यह
हमारी आँखों का देखा हुआ है।
8 इसलिए ऐ ख़ुदावन्द, अपनी क़ौम इस्राईल को जिसे तुने
छुड़ाया है मु'आफ़ कर, और बेगुनाह के ख़ून को अपनी क़ौम
इस्राईल के ज़िम्में न लगा। तब वह ख़ून उनको मु'आफ़ कर दिया
जाएगा।
9 यूँ तू उस काम को करके जो ख़ुदावन्द के नज़दीक दुरुस्त है,
बेगुनाह के ख़ून की जवाबदेही को अपने ऊपर से दूर — ओ —
दफ़ा' करना।

[illegible]

10 'जब तू अपने दुश्मनों से जंग करने को निकले और ख़ुदावन्द
तेरा ख़ुदा उनको तेरे हाथ में कर दे, और तू उनको ग़ुलाम कर लाए,
11 और उन ग़ुलामों में किसी ख़ूबसूरत 'औरत को देख कर तुम
उस पर फ़रेफ़्ता हो जाओ और उसको ब्याह लेना चाहो,
12 तो तू उसे अपने घर ले आना और वह अपना सिर मुण्डवाए
और अपने नाख़ून तरशवाए,

13 और अपनी ग़ुलामी का लिबास उतार कर तेरे घर में रहे और
एक महीने तक अपने माँ बाप के लिए मातम करे; इसके बाद तू
उसके पास जाकर उसका शौहर होना और वह तेरी बीवी बने।
14 और अगर वह तुझको न भाए तो जहाँ वह चाहे उसको जाने
देना, लेकिन रुपये की ख़ातिर उसको हरगिज़ न बेचना और उससे
लौंडी का सा सुलूक न करना, इसलिए कि तूने उसकी हुरमत ले
ली है।

[illegible]

15 'अगर किसी मर्द की दो बीवियाँ हों और एक महबूबा और
दूसरी ग़ैर महबूबा हो, और महबूबा और ग़ैर महबूबा दोनों से
लड़के हों और पहलौठा बेटा ग़ैर महबूबा से हो,
16 तो जब वह अपने बेटों को अपने माल का वारिस करे, तो वह
महबूबा के बेटे को ग़ैर महबूबा के बेटे पर जो हक़ीक़त में पहलौठा
है तर्जीह देकर पहलौठा न ठहराए।
17 बल्कि वह ग़ैर महबूबा के बेटे को अपने सब माल का दूना
हिस्सा दे कर उसे पहलौठा माने, क्यूँकि वह उसकी क़ुव्वत की
शुरू'आत है और पहलौठे का हक़ उसी का है।

[illegible]

18 अगर किसी आदमी का ज़िद्दी और बाग़ी, बेटा हो, जो अपने
बाप या माँ की बात न मानता हो और उनके तम्बीह करने पर भी
उनकी न सुनता हो,
19 तो उसके माँ बाप उसे पकड़ कर और निकाल कर उस शहर
के बुज़ुर्गों के पास उस जगह के फाटक पर ले जाएँ,
20 और वह उसके शहर के बुज़ुर्गों से 'अर्ज़ करें कि यह हमारा
बेटा ज़िद्दी और बाग़ी है, यह हमारी बात नहीं मानता और उड़ाऊ
और शराबी है।

21 तब उसके शहर के सब लोग उसे संगसार करें कि वह मर
जाए, यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दूर करना। तब सब
इस्राईली सुन कर डर जाएँगे।

[illegible]

22 और अगर किसी ने कोई ऐसा गुनाह किया हो जिससे उसका
क़त्ल वाजिब हो, और तू उसे मारकर दरख़्त से टाँग दे,
23 तो उसकी लाश रात भर दरख़्त पर लटकी न रहे बल्कि तू
उसी दिन उसे दफ़्न कर देना, क्यूँकि जिसे फाँसी मिलती है वह
ख़ुदा की तरफ़ से मला'ऊन है; ऐसा न हो कि तू उस मुल्क को
नापाक कर दे जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको मीरास के तौर पर
देता है।

22

1 तू अपने भाई के बैल या भेड़ को भटकती देख कर उस से मुँह
न फेरना, बल्कि ज़रूर तू उसको अपने भाई के पास पहुँचा देना।
2 और अगर तेरा भाई तेरे नज़दीक न रहता हो या तू उससे
वाक़िफ़ न हो, तो तू उस जानवर को अपने घर ले आना और वह
तेरे पास रहे जब तक तेरा भाई उसकी तलाश न करे, तब तू उसे
उसको दे देना।
3 तू उसके गधे और उसके कपड़े से भी ऐसा ही करना; ग़रज़
जो कुछ तेरे भाई से खोया जाए और तुझको मिले, तू उससे ऐसा
ही करना और मुँह न फेरना।
4 तू अपने भाई का गधा या बैल रास्ते में गिरा हुआ देखकर
उससे मुँह न फेरना, बल्कि ज़रूर उसके उठाने में उसकी मदद
करना।
5 'औरत मर्द का लिबास न पहने और न मर्द 'औरत की पोशाक
पहने, क्यूँकि जो ऐसा काम करता है वह ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के
नज़दीक मकरूह है।

6 अगर राह चलते अचानक किसी परिन्दे का घोंसला दरख़्त
या ज़मीन पर बच्चों या अंडों के साथ तुझको मिल जाए, और
माँ बच्चों या अंडों पर बैठी हुई हो तो तू बच्चों को माँ के साथ न
पकड़ लेना;
7 बच्चों को तू ले तो ले लेकिन माँ को ज़रूर छोड़ देना, ताकि
तेरा भला हो और तेरी उम्र दराज़ हो।
8 जब तू कोई नया घर बनाये तो अपनी छत पर मुण्डेर ज़रूर
लगाना, ऐसा न हो कि कोई आदमी वहाँ से गिरे और तेरी वजह
से वह ख़ून तेरे ही घरवालों पर हो।
9 तू अपने ताकिस्तान में दो क़िस्म के बीज न बोना, ऐसा न
हो कि सारा फल या'नी जो बीज तूने बोया और ताकिस्तान की
पैदावार *दोनों ज़ब्त कर लिए जाएँ।
10 तू बैल और गधे दोनों को एक साथ जोत कर हल न चलाना।
11 तू ऊन और सन दोनों की मिलावट का बुना हुआ कपड़ा न
पहनना।
12 तू अपने ओढ़ने की चादर के चारों किनारों पर झालर लगाया
करना।

[illegible]

13 'अगर कोई मर्द किसी 'औरत को ब्याहे और उसके पास
जाए, और बाद उसके उससे नफ़रत करके,
14 शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहे और उसे बदनाम करने के
लिए यह दा'वा करे कि 'मैंने इस 'औरत से ब्याह किया, और जब
मैं उसके पास गया तो मैंने कुँवारेपन के निशान उसमें नहीं पाए।
15 तब उस लड़की का बाप और उसकी माँ उस लड़की के
कुँवारेपन के निशानों को उस शहर के फाटक पर बुज़ुर्गों के पास
ले जाएँ,

---

* 22:9 दोनों ही पाक ठहराएजाएँऔर मुक़द्दस मक़ाम ले जाए जाएंगे

16 और उस लड़की का बाप बुज़ुर्गों से कहे कि 'मैंने अपनी बेटी
इस शख़्स को ब्याह दी, लेकिन यह उससे नफ़रत रखता है;
17 और शर्मनाक बातें उसके हक़ में कहता है, और यह दा'वा
करता है कि मैंने तेरी बेटी में कुँवारेपन के निशान नहीं पाए;
हालाँकि मेरी बेटी के कुँवारेपन के निशान यह मौजूद हैं। फिर
वह उस चादर को शहर के बुज़ुर्गों के आगे फैला दें।
18 तब शहर के बुज़ुर्ग उस शख़्स को पकड़ कर उसे कोड़े लगाएँ,
19 और उससे चाँदी के सौ मिस्क़ाल जुर्माना लेकर उस लड़की
के बाप को दें, इसलिए कि उसने एक इस्राईली कुँवारी को बदनाम
किया; और वह उसकी बीवी बनी रहे और वह ज़िन्दगी भर उसको
तलाक़ न देने पाए।
20 लेकिन अगर यह बात सच हो कि लड़की में कुँवारेपन के
निशान नहीं पाए गए,
21 तो वह उस लड़की को† उसके बाप के घर के दरवाज़े पर
निकाल लाएँ, और उसके शहर के लोग उसे संगसार करें कि वह
मर जाए; क्यूँकि उसने इस्राईल के बीच शरारत की, कि अपने बाप
के घर में फ़ाहिशापन किया। यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से
दफ़ा' करना।
22 अगर कोई मर्द किसी शौहर वाली 'औरत से ज़िना करते
पकड़ा जाए तो वह दोनों मार डाले जाएँ, या'नी वह मर्द भी
जिसने उस 'औरत से सुहबत की और वह 'औरत भी; यूँ तू इस्राईल
में से ऐसी बुराई को दफ़ा' करना।
23 अगर कोई कुंवारी लड़की किसी शख़्स से मन्सूब हो गई हो,
और कोई दूसरा आदमी उसे शहर में पाकर उससे सुहबत करे;
24 तो तू उन दोनों को उस शहर के फाटक पर निकाल लाना,
और उनको तू संगसार कर देना कि वह मर जाएँ, लड़की को
इसलिए कि वह शहर में होते हुए न चिल्लाई, और मर्द को

† **22:21** उस के बापके गौर — ओ — खौसके मातहत या अभी भी ग़ैर शादीशुदा

इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी की बीवी को बेहुरमत किया।
यूँ तू ऐसी बुराई को अपने बीच से दफ़ा' करना।
25 लेकिन अगर उस आदमी को वही लड़की जिसकी निस्बत
हो चुकी हो किसी मैदान या खेत में मिल जाए, और वह आदमी
जबरन उससे सुहबत करे, तो सिर्फ़ वह आदमी ही जिसने सुहबत
की मार डाला जाए:
26 लेकिन उस लड़की से कुछ न करना क्यूँकि लड़की का ऐसा
गुनाह नहीं जिससे वह क़त्ल के लायक ठहरे, इसलिए कि यह
बात ऐसी है जैसे कोई अपने पड़ोसी पर हमला करे और उसे मार
डाले।
27 क्यूँकि वह लड़की उसे मैदान में मिली और वह मन्सूबा
लड़की चिल्लाई भी लेकिन वहाँ कोई ऐसा न था जो उसे छुड़ाता।
28 अगर किसी आदमी को कोई कुँवारी लड़की मिल जाए
जिसकी निस्बत न हुई हो, और वह उसे पकड़कर उससे सुहबत
करे और दोनों पकड़े जाएँ,
29 तो वह मर्द जिसने उससे सुहबत की हो, लड़की के बाप को
चाँदी के पचास मिस्क़ाल दे और वह लड़की उसकी बीवी बने;
क्यूँकि उसने उसे बेहुरमत किया, और वह उसे अपनी जिन्दगी
भर तलाक़ न देने पाए।
30 कोई शख़्स‡ अपने बाप की बीवी से §ब्याह न करे और अपने
बाप के दामन को न खोले।

23

[illegible]

1 जिसके ख़ुसिये कुचले गए हों या आलत काट डाली गई हो,
वह ख़ुदावन्द की जमा'अत में आने न पाए।

‡ **22:30** उस के बाप की कई बीवियों में से एक § **22:30** मतलब नसोए

2 कोई हरामज़ादा ख़ुदावन्द की जमा'अत में दाख़िल न हो,
दसवीं नसल तक उसकी नसल में से कोई ख़ुदावन्द की जमा'अत
में आने न पाए।
3 कोई 'अम्मोनी या मोआबी ख़ुदावन्द की जमा'अत में
दाख़िल न हो, दसवीं नसल तक उनकी नसल में से कोई ख़ुदावन्द
की जमा'अत में कभी आने न पाए;
4 इसलिए कि जब तुम मिस्र से निकल कर आ रहे थे तो उन्होंने
रोटी और पानी लेकर रास्ते में तुम्हारा इस्तक़बाल नहीं किया,
बल्कि ब'ओर के बेटे बल'आम को मसोपतामिया के फ़तोर से
उजरत पर बुलवाया ताकि वह तुझ पर ला'नत करे।
5 लेकिन ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने बल'आम की न सुनी, बल्कि
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तेरे लिए उस ला'नत को बरकत से बदल
दिया इसलिए कि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा को तुझसे मुहब्बत थी।
6 तू अपनी ज़िन्दगी भर कभी उनकी सलामती या स'आदत की
चाहत न रखना।
7 तू किसी अदोमी से नफ़रत न रखना, क्यूँकि वह तेरा भाई है;
तू किसी मिस्री से भी नफ़रत न रखना, क्यूँकि तू उसके मुल्क में
परदेसी हो कर रहा था।
8 उनकी तीसरी नसल के जो लड़के पैदा हों वह ख़ुदावन्द की
जमा'अत में आने पाएँ।

[illegible]

9 जब तू अपने दुश्मनों से लड़ने के लिए दल बाँध कर निकले
तो अपने को हर बुरी चीज़ से बचाए रखना।
10 अगर तुम्हारे बीच कोई ऐसा आदमी हो जो रात को
एहतिलाम की वजह से नापाक हो गया हो, तो वह ख़ेमागाह से
बाहर निकल जाए और ख़ेमागाह के अन्दर न आए;
11 लेकिन जब शाम होने लगे तो वह पानी से ग़ुस्ल करे, और
जब आफ़ताब ग़ुरूब हो जाए तो ख़ेमागाह में आए।

12 और ख़ेमागाह के बाहर तू कोई जगह ऐसी ठहरा देना, जहाँ
तू अपनी हाजत के लिए जा सके;
13 और अपने साथ अपने हथियारों में एक मेख़ भी रखना,
ताकि जब बाहर तुझे हाजत के लिए बैठना हो तो उससे जगह
खोद लिया करे और लौटते वक़्त अपने फ़ुज़ले को ढाँक दिया
करे।
14 इसलिए कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी ख़ेमागाह में फिरा
करता है ताकि तुझको बचाए, और तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ में
कर दे; इसलिए तेरी ख़ेमागाह पाक रहे, ऐसा न हो कि वह तुझमें
नजासत को देख कर तुझ से फिर जाए।
15 अगर किसी का ग़ुलाम अपने आक़ा के पास से भाग कर तेरे
पास पनाह ले, तो तू उसे उसके आक़ा के हवाले न कर देना;
16 बल्कि वह तेरे साथ तेरे ही बीच तेरी बस्तियों में से, जो उसे
अच्छी लगे उसे चुन कर उसी जगह रहे; इसलिए तू उसे हरगिज़
न सताना।
17 इस्राईली लड़कियों में कोई फ़ाहिशा न हो, और न इस्राईली
लड़कों में कोई लूती हो। *
18 तू किसी फ़ाहिशा की ख़र्ची या कुत्ते की मज़दूरी, किसी
मिन्नत के लिए ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के घर में न लाना; क्यूँकि
ये दोनों ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के नज़दीक मकरूह हैं।
19 तू अपने भाई को सूद पर क़र्ज़ न देना, चाहे वह रुपये का
सूद हो या अनाज का सूद या किसी ऐसी चीज़ का सूद हो जो
ब्याज पर दी जाया करती है।
20 तू परदेसी को सूद पर क़र्ज़ दे तो दे, लेकिन अपने भाई को

---

* **23:17** कसबी तरीक: अह्बार 19:29 भी देखें, कनानी मज़हब के मंदिरों में कसबी लोग परिस्तारों से जिंसी तालुकात रखते थे ताकि उन्हें यह यकीन होजाए किउनके खेत ज़रखेज़ और मवेशी सलामत रहे, ऐसा शख्स कनानियों के मंदिरों में पाया गया जहाँ ज़रखेज़ रखने वाले देवता की परस्तिश होती थी, ऐसा मन जाता है कि कस्बियोंसे जिंसी तालुकात रखने से उनके खेत ज़रखेज़ रहेंगे और जानवर सलामत रहेंगे —

सूद पर क़र्ज़ न देना; ताकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस मुल्क में जिस
पर तू क़ब्ज़ा करने जा रहा है, तेरे सब कामों में जिनको तू हाथ
लगाए तुझको बरकत दे।
21 जब तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की ख़ातिर मिन्नत माने तो
उसके पूरा करने में देर न करना, इसलिए कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
ज़रूर उसको तुझसे तलब करेगा तब तू गुनाहगार ठहरेगा।
22 लेकिन अगर तू मिन्नत न माने तो तेरा कोई गुनाह नहीं।
23 जो कुछ तेरे मुँह से निकले उसे ध्यान कर के पूरा करना, और
जैसी मिन्नत तूने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए मानी हो, उसके
मुताबिक़ रज़ा की क़ुर्बानी जिसका वा'दा तेरी ज़बान से हुआ अदा
करना।
24 जब तू अपने पड़ोसी के ताकिस्तान में जाए, तो जितने अंगूर
चाहे पेट भर कर खाना, लेकिन कुछ अपने बर्तन में न रख लेना।
25 जब तू अपने पड़ोसी के खड़े खेत में जाए, तो अपने हाथ से
बालें तोड़ सकता है लेकिन अपने पड़ोसी के खड़े खेत को हँसुआ
न लगाना।

24

1 अगर कोई मर्द किसी 'औरत से ब्याह करे और पीछे उसमे
कोई ऐसी बेहूदा बात पाए जिससे उस 'औरत की तरफ़ उसकी
उनसियत न रहे, तो वह उसका तलाक़ नामा लिख कर उसके
हवाले करे और उसे अपने घर से निकाल दे।
2 और जब वह उसके घर से निकल जाए, तो वह दूसरे मर्द की
हो सकती है।
3 लेकिन अगर दूसरा शौहर भी उससे नाख़ुश रहे, और उसका
तलाक़नामा लिखकर उसके हवाले करे और उसे अपने घर से
निकाल दे या वह दूसरा शौहर जिसने उससे ब्याह किया हो मर
जाए,
4 तो उसका पहला शौहर जिसने उसे निकाल दिया था उस
'औरत के नापाक हो जाने के बाद फिर उससे ब्याह न करने पाए,

क्यूँकि ऐसा काम ख़ुदावन्द के नज़दीक मकरूह है। इसलिए तू
उस मुल्क को जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा मीरास के तौर पर तुझको
देता है, गुनाहगार न बनाना।
5 जब किसी ने कोई नई 'औरत ब्याही हो, तो वह जंग के लिए
न जाए और न कोई काम उसके सुपुर्द हो। वह साल भर तक अपने
ही घर में आज़ाद रह कर अपनी ब्याही हुई बीवी को ख़ुश रख्खे।
6 कोई शख़्स चक्की को या उसके ऊपर के पाट को गिरवी न
रख्खे, क्यूँकि यह तो जैसे आदमी की जान को गिरवी रखना है।
7 अगर कोई शख़्स अपने इस्राईली भाइयों में से किसी को
ग़ुलाम बनाए या बेचने की नियत से चुराता हुआ पकड़ा जाए,
तो वह चोर मार डाला जाए। यूँ तू ऐसी बुराई अपने बीच से दफ़ा'
करना।
8 तू कोढ़ की बीमारी की तरफ़ से होशियार रहना, और लावी
काहिनों की सब बातों को जो वह तुमको बताएँ जानफ़िशानी से
मानना और उनके मुताबिक़ 'अमल करना; जैसा मैंने उनको हुक्म
किया है वैसा ही ध्यान देकर करना।
9 तू याद रखना कि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने जब तुम मिस्र से
निकलकर आ रहे थे, तो रास्ते में मरियम से क्या किया।
10 जब तू अपने भाई को कुछ क़र्ज़ दे, तो गिरवी की चीज़ लेने
को उसके घर में न घुसना।
11 तू बाहर ही खड़े रहना, और वह शख़्स जिसे तू क़र्ज़ दे ख़ुद
गिरवी की चीज़ बाहर तेरे पास लाए।
12 और अगर वह शख़्स ग़रीब हो, तो उसकी गिरवी की चीज़
को पास रखकर सो न जाना;
13 बल्कि जब आफ़ताब ग़ुरूब होने लगे, तो उसकी चीज़ उसे
लौटा देना ताकि वह अपना ओढ़ना ओढ़कर सोए और तुझको
दुआ दे; और यह बात तेरे लिए ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के सामने
रास्तबाज़ी ठहरेगी।
14 तू अपने ग़रीब और मोहताज ख़ादिम पर ज़ुल्म न करना,

चाहे वह तेरे भाइयों में से हो चाहे उन परदेसियों में से जो तेरे
मुल्क के अन्दर तेरी बस्तियों में रहते हों।
15 तू उसी दिन इससे पहले कि आफ़ताब ग़ुरूब हो उसकी
मज़दूरी उसे देना, क्यूँकि वह ग़रीब है और उसका दिल मज़दूरी
में लगा रहता है; ऐसा न हो कि वह ख़ुदावन्द से तेरे ख़िलाफ़
फ़रियाद करे और यह तेरे हक़ में गुनाह ठहरे।
16 बेटों के बदले बाप मारे न जाएँ न बाप के बदले बेटे मारे
जाएँ। हर एक अपने ही गुनाह की वजह से मारा जाए।
17 तू परदेसी या यतीम के मुक़द्दमे को न बिगाड़ना, और न
बेवा के कपड़े को गिरवी रखना;
18 बल्कि याद रखना कि तू मिस्र में ग़ुलाम था, और ख़ुदावन्द
तेरे ख़ुदा ने तुझको वहाँ से छुड़ाया; इसीलिए मैं तुझको इस काम
के करने का हुक्म देता हूँ।
19 जब तू अपने खेत की फ़सल काटे और कोई पूला खेत में भूल
से रह जाए, तो उसके लेने को वापस न जाना, वह परदेसी और
यतीम और बेवा के लिए रहे; ताकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे सब
कामों में जिनको तू हाथ लगाये तुझको बरकत बख़्शे।
20 जब तू अपने ज़ैतून के दरख़्त को झाड़े, तो उसके बाद उसकी
शाख़ों को दोबारा न झाड़ना; बल्कि वह परदेसी और यतीम और
बेवा के लिए रहें।
21 जब तू अपने ताकिस्तान के अंगूरों को जमा' करे, तो उसके
बाद उसका दाना — दाना न तोड़ लेना; वह परदेसी और यतीम
और बेवा के लिए रहे।
22 और याद रखना कि तू मुल्क — ए — मिस्र में ग़ुलाम था;
इसी लिए मैं तुझको इस काम के करने का हुक्म देता हूँ।

25

1 अगर लोगों में किसी तरह का झगड़ा हो और वह 'अदालत में

आएँ ताकि क़ाज़ी उनका इन्साफ़ करें, तो वह सादिक़ को बेगुनाह
ठहराएँ और शरीर पर फ़तवा दें।
2 और अगर वह शरीर पिटने के लायक़ निकले, तो क़ाज़ी उसे
ज़मीन पर लिटवाकर अपनी आँखों के सामने उसकी शरारत के
मुताबिक़ उसे गिन गिनकर कोड़े लगवाए।
3 वह उसे चालीस कोड़े लगाए, इससे ज़्यादा न मारे; ऐसा न हो
कि इससे ज़्यादा कोड़े लगाने से तेरा भाई तुझको हक़ीर मा'लूम
देने लगे।
4 तू दाएँ में चलते हुए बैल का मुँह न बाँधना।
5 अगर कोई भाई मिलकर साथ रहते हों और एक उनमें से बे
— औलाद मर जाए, तो उस मरहूम की बीवी किसी अजनबी से
ब्याह न करे; बल्कि उसके शौहर का भाई उसके पास जाकर उसे
अपनी बीवी बना ले, और शौहर के भाई का जो हक़ है वह उसके
साथ अदा करे।
6 और उस 'औरत के जो पहला बच्चा हो वह इस आदमी के
मरहूम भाई के नाम का कहलाए, ताकि उसका नाम इस्राईल में
से मिट न जाए।
7 और अगर वह आदमी अपनी भावज से ब्याह करना न चाहे,
तो उसकी भावज फाटक पर बुज़ुर्गों के पास जाए और कहे, 'मेरा
देवर इस्राईल में अपने भाई का नाम बहाल रखने से इनकार करता
है, और मेरे साथ देवर का हक़ अदा करना नहीं चाहता।
8 तब उसके शहर के बुज़ुर्ग उस आदमी को बुलवाकर उसे
समझाएँ, और अगर वह अपनी बात पर क़ाईम रहे और कहे,
'मुझको उससे ब्याह करना मंज़ूर नहीं।
9 तो उसकी भावज बुज़ुर्गों के सामने उसके पास जाकर उसके
पावों से जूती उतारे, और उसके मुँह पर थूक दे और यह कहे, 'जो
आदमी अपने भाई का घर आबाद न करे उससे ऐसा ही किया
जाएगा।
10 तब इस्राईलियों में उसका नाम यह पड़ जाएगा, कि यह उस

शख़्स का घर है जिसकी जूती उतारी गई थी।
11 जब दो शख़्स आपस में लड़ते हों और एक की बीवी पास
जाकर अपने शौहर को उस आदमी के हाथ से छुड़ाने के लिए जो
उसे मारता हो अपना हाथ बढ़ाए और उसकी शर्मगाह को पकड़
ले,
12 तो तू उसका हाथ काट डालना और ज़रा तरस न खाना।
13 तू अपने थैले में तरह — तरह के छोटे और बड़े तौल बाट
न रखना।
14 तू अपने घर में तरह — तरह के छोटे और बड़े पैमाना भी न
रखना।
15 तेरा तौल बाट पूरा और ठीक और तेरा पैमाना भी पूरा और
ठीक हो, ताकि उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता
है तेरी '*उम्र दराज़ हो।
16 इसलिए कि वह सब जो ऐसे ऐसे फ़रेब के काम करते हैं,
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के नज़दीक मकरूह हैं।
17 याद रखना कि जब तुम मिस्र से निकलकर आ रहे थे तो
रास्ते में 'अमालीकियों ने तेरे साथ क्या किया।
18 क्यूँकि वह रास्ते में तेरे सामने आए और जबकि तू थका
माँदा था, तोभी उन्होंने उनको जो कमज़ोर और सब से पीछे थे
मारा, और उनको ख़ुदा का ख़ौफ़ न आया।
19 इसलिए जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस मुल्क में, जिसे
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा मीरास के तौर पर तुझको क़ब्ज़ा करने को
देता है, तेरे सब दुश्मनों से जो आस — पास हैं तुझको राहत
बख़्शे, तो तू 'अमालीकियों के नाम — ओ — निशान को सफ़ह
— ए — रोज़गार से मिटा देना; तू इस बात को न भूलना।

26

[illegible]

---

* **25:15** ज़िन्दगी के साल

1 और जब तू उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको
मीरास के तौर पर देता है पहुँचे, और उस पर क़ब्ज़ा कर के उस में
बस जाये;
2 तब जो मुल्क ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है उसकी
ज़मीन में जो क़िस्म — क़िस्म की चीज़े तू लगाये, उन सब के
पहले फल को एक टोकरे में रख कर उस जगह ले जाना जिसे
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा अपने नाम के घर के लिए चुने।
3 और उन दिनों के काहिन के पास जाकर उससे कहना, 'आज
के दिन मैं ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा के सामने इक़रार करता हूँ, कि मैं
उस मुल्क में जिसे हमको देने की क़सम ख़ुदावन्द ने हमारे बाप
— दादा से खाई थी आ गया हूँ।
4 तब काहिन तेरे हाथ से उस टोकरे को लेकर ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा के मज़बह के आगे रख्खे।
5 फिर तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने यूँ कहना, 'मेरा *बाप
†एक अरामी था ‡जो मरने पर था, वह मिस्र में जाकर वहाँ रहा
और उसके लोग थोड़े से थे, और वहीं वह एक बड़ी और ताक़तवर
और ज़्यादा ता'दाद वाली क़ौम बन गयी।
6 फिर मिस्रियों ने हमसे बुरा सुलूक किया और हमको दुख दिया
और हमसे सख़्त — ख़िदमत ली।
7 और हमने ख़ुदावन्द अपने बाप — दादा के ख़ुदा के सामने
फ़रियाद की, तो ख़ुदावन्द ने हमारी फ़रियाद सुनी और हमारी
मुसीबत और मेहनत और मज़लूमी देखी।
8 और ख़ुदावन्द क़वी हाथ और बलन्द बाज़ू से बड़ी हैबत और
निशान और मो'जिज़ों के साथ हमको §मिस्र से निकाल लाया।
9 और हमको इस जगह लाकर उसने यह मुल्क जिसमें *दूध
और शहद बहता है हमको दिया है।

---

* **26:5** बाप दादा † **26:5** घूमने वाला ‡ **26:5** टेक्स्ट सेसे निकालें § **26:8** मुल्क * **26:9** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क

10 इसलिए अब ऐ ख़ुदावन्द, देख, जो ज़मीन तूने मुझको दी है,
उसका पहला फल मैं तेरे पास ले आया हूँ। फिर तू उसे ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के आगे रख देना और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा को सिज्दा
करना।
11 और तू और लावी और जो मुसाफ़िर तेरे बीच रहते हों, सब
के सब मिल कर उन सब ने'मतों के लिए, जिनको ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा ने तुझको और तेरे घराने को बख़्शा हो ख़ुशी करना।
12 और जब तू तीसरे साल जो दहेकी का साल है अपने सारे
माल की दहेकी निकाल चुके, तो उसे लावी और मुसाफ़िर और
यतीम और बेवा को देना ताकि वह उसे तेरी बस्तियों में खाएँ और
सेर हों।
13 फिर तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के आगे यूँ कहना, 'मैंने तेरे
हुक्मों के मुताबिक़ जो तूने मुझे दिए मुक़द्दस चीज़ों को अपने घर
से निकाला और उनको लावियों और मुसाफ़िरों और यतीमों और
बेवाओं को दे भी दिया: और मैंने तेरे किसी हुक्म को नहीं टाला
और न उनको भूला।
14 और मैंने अपने मातम के वक़्त उन चीज़ों में से कुछ नहीं
खाया, और नापाक हालत में उनको अलग नहीं किया, और न
उनमें से कुछ मुर्दों के लिए दिया। मैंने ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
†बात मानी है, और जो कुछ तूने हुक्म दिया उसी के मुताबिक़
'अमल किया।
15 आसमान पर से जो तेरा मुक़द्दस घर है नज़र कर और अपनी
क़ौम इस्राईल को और उस मुल्क को बरकत दे, जिस मुल्क में ‡दूध
और शहद बहता है और जिसको तूने उस क़सम के मुताबिक़ जो
तूने हमारे बाप दादा से खाई हमको 'अता किया है।

† **26:14** हुक्म ‡ **26:15** अज़ हद ज़रख़ेज़ मुल्क

16 ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा, आज तुझको इन आईन और अहकाम
के मानने का हुक्म देता है; इसलिए तू अपने सारे दिल और सारी
जान से इनको मानना और इन पर 'अमल करना।
17 तूने आज के दिन इक़रार किया है कि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा
है, और तू उसकी राहों पर चलेगा, और उसके आईन और फ़रमान
और अहकाम को मानेगा, और उसकी बात सुनेगा।
18 और ख़ुदावन्द ने भी आज के दिन तुझको, जैसा उसने वा'दा
किया था, अपनी ख़ास क़ौम क़रार दिया है ताकि तू उसके सब
हुक्मों को माने;
19 और वह सब क़ौमों से, जिनको उसने पैदा किया है, ता'रीफ़
और नाम और 'इज़्ज़त में तुझको मुम्ताज़ करे; और तू उसके कहने
के मुताबिक़ ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की पाक क़ौम बन जाये।"

27

[illegible]

1 फिर मूसा ने बनी — इस्राईल के बुज़ुर्गों के साथ हो कर लोगों
से कहा कि "जितने हुक्म आज के दिन मैं तुमको देता हूँ उन सब
को मानना।
2 और जिस दिन तुम *यरदन पार हो कर उस मुल्क में जिसे
ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है पहुँचो, तो तू बड़े — बड़े पत्थर
खड़े करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना;
3 और पार हो जाने के बाद इस शरी'अत की सब बातें उन पर
लिखना, ताकि उस वा'दे के मुताबिक़ जो ख़ुदावन्द तेरे बाप —
दादा के ख़ुदा ने तुझ से किया, उस मुल्क में जिसे ख़ुदावन्द तेरा
ख़ुदा तुझको देता है या'नी उस मुल्क में जहाँ दूध और शहद बहता
है तू पहुँच जाये।

* **27:2** नदी

4 इसलिए तुम यरदन के पार हो कर उन पत्थरों को जिनके बारे
में मैं तुमको आज के दिन हुक्म देता हूँ, कोह — ए — 'ऐबाल पर
नस्ब करके उन पर चूने की अस्तरकारी करना।
5 और वहीं तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए पत्थरों का एक
मज़बह बनाना, और लोहे का कोई औज़ार उन पर न लगाना।
6 और तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा का मज़बह बे तराशे पत्थरों
से बनाना, और उस पर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के लिए सोख़्तनी
क़ुर्बानियाँ पेश करना।
7 और वहीं सलामती की क़ुर्बानियाँ अदा करना और उनको
खाना और ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने ख़ुशी मनाना।
8 और उन पत्थरों पर इस शरी'अत की सब बातें साफ़ — साफ़
लिखना।"
9 फिर मूसा और लावी काहिनों ने सब बनी — इस्राईल से कहा,
ऐ इस्राईल, ख़ामोश हो जा और सुन, तू आज के दिन ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा की क़ौम बन गया है।
10 †इसलिए तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की ‡बात सुनना और
उसके सब आईन और अहकाम पर जो आज के दिन मैं तुझको
देता हूँ 'अमल करना।"

????? ?? ?????? ?? ??'??

11 और मूसा ने उसी दिन लोगों से ताकीद करके कहा कि;
12 "जब तुम §यरदन पार हो जाओ, तो कोह — ए — गरिज़ीम
पर शमौन, और लावी, और यहूदाह, और इश्कार, और यूसुफ़,
और बिनयमीन खड़े हों और लोगों को बरकत सुनाएँ।
13 और रूबिन, और जद्द, और आशर, और ज़बूलून, और दान,
और नफ़्ताली कोह — ए — 'ऐबाल पर खड़े होकर ला'नत
सुनाएँ।

† 27:10 अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क में ‡ 27:10 हुक्म § 27:12 नदी

14 और लावी बलन्द आवाज़ से सब इस्राईली आदमियों से कहें
कि:
15 'ला'नत उस आदमी पर जो कारीगरी की सन'अत की तरह
खोदी हुई या ढाली हुई मूरत बना कर जो ख़ुदावन्द के नज़दीक
मकरूह है, उसको किसी पोशीदा जगह में नस्ब करे। और सब
लोग जवाब दें और कहें, 'आमीन।
16 'ला'नत उस पर जो अपने बाप या माँ को हक़ीर जाने। और
सब लोग कहें, 'आमीन।
17 'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी की हद के निशान को
हटाये। और सब लोग कहें, 'आमीन।
18 'ला'नत उस पर जो अन्धे को रास्ते से गुमराह करे। और
सब लोग कहें, 'आमीन।
19 'ला'नत उस पर जो परदेसी और यतीम और बेवा के मुक़द्दमे
को बिगाड़े।" और सब लोग कहें, 'आमीन।
20 'ला'नत उस पर जो अपने बाप की बीवी से मुबाश्रत करे,
क्यूँकि वह अपने बाप के दामन को बेपर्दा करता है। और सब
लोग कहें, 'आमीन।
21 'ला'नत उस पर जो किसी चौपाए के साथ जिमा'अ करे।
और सब लोग कहें, 'आमीन।
22 'ला'नत उस पर जो अपनी बहन से मुबाश्रत करे, चाहे वह
उसके बाप की बेटी हो चाहे माँ की। और सब लोग कहें, 'आमीन।
23 'ला'नत उस पर जो अपनी सास से मुबाश्रत करे। और सब
लोग कहें, 'आमीन।
24 'ला'नत उस पर जो अपने पड़ोसी को पोशीदगी में मारे।
और सब लोग कहें, 'आमीन।
25 'लानत उस पर जो बे — गुनाह को क़त्ल करने के लिए
इनाम ले। और सब लोग कहें, 'आमीन।
26 'ला'नत उस पर जो इस शरी'अत की बातों पर 'अमल करने
के लिए उन पर क़ाईम न रहे।" और सब लोग कहें, 'आमीन।

28

[illegible]

1 और अगर तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की *बात को जांफिशानी
से मान कर उसके इन सब हुक्मों पर, जो आज के दिन मैं तुझको
देता हूँ, एहतियात से 'अमल करे तो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा दुनिया
की सब क़ौमों से ज़्यादा तुझको सरफ़राज़ करेगा।
2 और अगर तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात सुने तो यह सब
बरकतें तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको मिलेंगी।
3 शहर में भी तू मुबारक होगा, और खेत में भी मुबारक होगा।
4 तेरी औलाद, और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे चौपायों
के बच्चे, या'नी गाय — बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों
के बच्चे मुबारक होंगे।
5 तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों मुबारक होंगे।
6 और तू अन्दर आते वक़्त मुबारक होगा, और बाहर जाते वक़्त
भी मुबारक होगा।
7 ख़ुदावन्द तेरे दुश्मनों को जो तुझ पर हमला करें, तेरे सामने
शिकस्त दिलाएगा; वह तेरे मुक़ाबले को तो एक ही रास्ते से
आएँगे, लेकिन सात सात रास्तों से हो कर तेरे आगे से भागेंगे।
8 ख़ुदावन्द तेरे अम्बारख़ानों में और सब कामों में जिनमें तू हाथ
लगाये बरकत का हुक्म देगा, और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस मुल्क
में जिसे वह तुझको देता है तुझको बरकत बख़्शेगा।
9 अगर तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के हुक्मों को माने और उसकी
राहों पर चले, तो ख़ुदावन्द अपनी उस क़सम के मुताबिक़ जो
उसने तुझ से खाई तुझको अपनी पाक क़ौम बना कर क़ाईम
रक्खेगा।
10 और दुनिया की सब क़ौमें यह देखकर कि तू ख़ुदावन्द के नाम
से कहलाता है, तुझ से डर जाएँगी।

* **28:1** हुक्म

11 और जिस मुल्क को तुझको देने की क़सम ख़ुदावन्द ने तेरे
बाप — दादा से खाई थी, उसमें ख़ुदावन्द तेरी औलाद को और
तेरे चौपायों के बच्चों को और तेरी ज़मीन की पैदावार को ख़ूब
बढ़ा कर तुझको बढ़ाएगा।
12 ख़ुदावन्द आसमान को जो उसका अच्छा ख़ज़ाना है तेरे
लिए खोल देगा कि तेरे मुल्क में वक़्त पर मेंह बरसाए, और वह
तेरे सब कामों में जिनमें तू हाथ लगाए बरकत देगा; और तू बहुत
सी क़ौमों को क़र्ज़ देगा, लेकिन ख़ुद क़र्ज़ नहीं लेगा।
13 और ख़ुदावन्द तुझको दुम नहीं बल्कि सिर ठहराएगा, और
तू पस्त नहीं बल्कि सरफ़राज़ ही रहेगा; बशर्ते कि तू ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा के हुक्मों को, जो मैं तुझको आज के दिन देता हूँ, सुनो
और एहतियात से उन पर 'अमल करो,
14 और जिन बातों का मैं आज के दिन तुझको हुक्म देता हूँ,
उनमें से किसी से दहने या बाएँ हाथ मुड़ कर और मा'बूदों की
पैरवी और इबादत न करे।

[illegible]

15 "लेकिन अगर तू ऐसा न करे, कि ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की
†बात सुनकर उसके सब अहकाम और आईन पर जो आज के दिन
मैं तुझको देता हूँ एहतियात से 'अमल करे, तो यह सब ला'नतें
तुझ पर नाज़िल होंगी और तुझको लगेंगी।
16 शहर में भी तू ला'नती होगा, और खेत में भी ला'नती होगा।
17 तेरा टोकरा और तेरी कठौती दोनों ला'नती ठहरेंगे।
18 तेरी औलाद और तेरी ज़मीन की पैदावार, और तेरे गाय —
बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ — बकरियों के बच्चे ला'नती होंगे।
19 तू अन्दर आते ला'नती ठहरेगा, और बाहर जाते भी ला'नती
ठहरेगा।

† **28:15** हुक्म

20 ख़ुदावन्द उन सब कामों में जिनको तू हाथ लगाए, ला'नत
और इज़्तिराब और फटकार को तुझ पर नाज़िल करेगा जब
तक कि तू हलाक होकर जल्द बर्बाद न हो जाए, यह तेरी उन
बद'आमालियों की वजह से होगा जिनको करने की वजह से तू
मुझको छोड़ देगा।
21 ख़ुदावन्द ऐसा करेगा कि वबा तुझ से लिपटी रहेगी, जब
तक कि वह तुझको उस मुल्क से जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ
जा रहा है फ़ना न कर दे।
22 ख़ुदावन्द तुझको तप — ए — दिक़ और बुख़ार और सोज़िश
और शदीद हरारत और ‡तलवार और बाद — ए — समूम और
गेरूई से मारेगा, और यह तेरे पीछे पड़े रहेंगे जब तक कि तू फ़ना
न हो जाये।
23 और आसमान जो तेरे सिर पर है पीतल का, और ज़मीन जो
तेरे नीचे है लोहे की हो जाएगी।
24 ख़ुदावन्द मेंह के बदले तेरी ज़मीन पर ख़ाक और धूल
बरसाएगा; यह आसमान से तुझ पर पड़ती ही रहेगी, जब तक
कि तू हलाक न हो जाये।
25 “ख़ुदावन्द तुझको तेरे दुश्मनों के आगे शिकस्त दिलाएगा;
तू उनके मुक़ाबले के लिए तो एक ही रास्ते से जाएगा, और उनके
सामने से सात — सात रास्तों से होकर भागेगा, और दुनिया की
तमाम सल्तनतों में तू मारा — मारा फिरेगा।
26 और तेरी लाश हवा के परिन्दों और ज़मीन के दरिन्दों की
ख़ुराक होगी, और कोई उनको हंका कर भगाने को भी न होगा।
27 ख़ुदावन्द तुझको §मिस्र के फोड़ों, और बवासीर, और
खुजली, और ख़ारिश में ऐसा मुब्तिला करेगा कि तू कभी अच्छा
भी नहीं होने का।
28 ख़ुदावन्द तुझको जुनून और नाबीनाई और दिल की

‡ **28:22** तलवार § **28:27** मुल्क

घबराहट में भी मुब्तिला कर देगा।
29 और जैसे अंधा अँधेरे में टटोलता है वैसे ही तू दोपहर दिन
को टटोलता फिरेगा और तू अपने धन्धों में नाकाम रहेगा; और
तुझ पर हमेशा जुल्म ही होगा, और तू लुटता ही रहेगा और कोई
न होगा जो तुझको बचाए।
30 'औरत से मंगनी तो तू करेगा लेकिन दूसरा उससे मुबाश्रत
करेगा, तू घर बनाएगा लेकिन उसमें बसने न पाएगा, तू
ताकिस्तान लगाएगा लेकिन उसका फल इस्ते'माल न करेगा।
31 तेरा बैल तेरी आँखों के सामने ज़बह किया जाएगा लेकिन
तू उसका गोश्त खाने न पाएगा, तेरा गधा तुझ से जबरन छीन
लिया जाएगा और तुझको फिर न मिलेगा, तेरी भेड़ें तेरे दुश्मनों
के हाथ लगेंगी और कोई न होगा जो तुझको बचाए।
32 तेरे बेटे और बेटियाँ दूसरी क़ौम को दी जाएँगी, और तेरी
आँखें देखेंगी और सारे दिन उनके लिए तरसते — तरसते रह
जाएँगी; और तेरा कुछ बस नहीं चलेगा।
33 तेरी ज़मीन की पैदावार और तेरी सारी कमाई को एक ऐसी
क़ौम खाएगी जिससे तू वाक़िफ़ नहीं; और तू हमेशा मज़लूम और
दबा ही रहेगा,
34 यहाँ तक कि इन बातों को अपनी आँखों से देख देखकर
दीवाना हो जाएगा।
35 ख़ुदावन्द तेरे घुटनों और टाँगों में ऐसे बुरे फोड़े पैदा करेगा,
कि उनसे तू पाँव के तलवे से लेकर सिर की चाँद तक शिफ़ा न पा
सकेगा।
36 ख़ुदावन्द तुझको और तेरे बादशाह को, जिसे तू अपने ऊपर
मुक़र्रर करेगा, एक ऐसी क़ौम के बीच ले जाएगा जिसे तू और तेरे
बाप — दादा जानते भी नहीं; और वहाँ तू और मा'बूदों की जो
महज़ लकड़ी और पत्थर है इबादत करेंगे।
37 और उन सब क़ौमों में, जहाँ — जहाँ ख़ुदावन्द तुझको

पहुँचाएगा, तू बाइस — ए — हैरत और ज़र्ब — उल — मसल
और अंगुश्त नुमा बनेगा।
38 तू खेत में बहुत सा बीज ले जाएगा लोकन थोड़ा सा जमा'
करेगा, क्यूँकि टिड्डी उसे चाट लेंगी।
39 तू ताकिस्तान लगाएगा और उन पर मेहनत करेगा, लेकिन
न तो मय पीने और न अंगूर जमा' करने पायेगा; क्यूँकि उनको
कीड़े खा जाएँगे।
40 तेरी सब हदों में ज़ैतून के दरख़्त लगे होंगे, लेकिन तू उनका
तेल नहीं लगाने पाएगा; क्यूँकि तेरे ज़ैतून के दरख़्तों का फल झड़
जाया करेगा।
41 तेरे बेटे और बेटियाँ पैदा होंगी लेकिन वह सब तेरे न रहेंगे,
क्यूँकि वह ग़ुलाम हो कर चले जाएँगे।
42 तेरे सब दरख़्तों और तेरी सब ज़मीन की पैदावार पर टिड्डियाँ
क़ब्ज़ा कर लेंगी।
43 परदेसी जो तेरे बीच होगा वह तुझसे बढ़ता और सरफ़राज़
होता जाएगा, लेकिन तू पस्त ही पस्त होता जाएगा।
44 वह तुझको क़र्ज़ देगा, लेकिन तू उसे क़र्ज़ न दे सकेगा; वह
सिर होगा और तू दुम ठहरेगा।
45 और चूँकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के उन हुक्मों और आईन
पर जिनको उसने तुझको दिया है, 'अमल करने के लिए उसकी
बात नहीं सुनेंगे; इसलिए यह सब ला'नतें तुझ पर आएँगी और
तेरे पीछे पड़ी रहेंगी और तुझको लगेंगी, जब तक तेरा नास न
हो जाए।
46 और वह तुझ पर और तेरी औलाद पर हमेशा निशान और
अचम्भे के तौर पर रहेंगी।
47 और चूँकि तू बावजूद सब चीज़ों की फ़िरावानी के फ़रहत
और ख़ुशदिली से ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की इबादत नहीं करेगा।
48 इसलिए भूका और प्यासा और नंगा और सब चीज़ों का

मुहताज होकर तू अपने दुश्मनों की ख़िदमत करेगा जिनको
ख़ुदावन्द तेरे बरख़िलाफ़ भेजेगा; और ग़नीम तेरी गरदन पर लोहे
का जुआ रख्खे रहेगा, जब तक *वह तेरा नास न कर दे।
49 ख़ुदावन्द दूर से बल्कि ज़मीन के किनारे से एक क़ौम को
तुझ पर चढ़ा लाएगा जैसे 'उक़ाब टूट कर आता है, उस क़ौम की
ज़बान को तू नहीं समझेगा;
50 उस क़ौम के लोग तुर्शरू होंगे, जो न बुड्ढों का लिहाज़ करेंगे
न जवानों पर तरस खाएँगे।
51 और वह तेरे चौपायों के बच्चों और तेरी ज़मीन की पैदावार
को खाते रहेंगे, जब तक तेरा नास न हो जाए और वह तेरे लिए
अनाज, या मय, या तेल, या गाय — बैल की बढ़ती, या तेरी भेड़
— बकरियों के बच्चे कुछ नहीं छोड़ेंगे, जब तक वह तुझको फ़ना
न कर दें।
52 और वह तेरे तमाम मुल्क में तेरा घिराव तेरी ही बस्तियों
में किए रहेंगे; जब तक तेरी ऊँची — ऊँची फ़सीलें जिन पर तेरा
भरोसा होगा, गिर न जाएँ। तेरा घिराव वह तेरे ही उस मुल्क की
सब बस्तियों में करेंगे, जिसे ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको देता है।
53 तब उस घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तू अपने
दुश्मनों से तंग आकर अपने ही जिस्म के पहले फल को, या'नी
अपने ही बेटों और बेटियों का गोश्त जिनको ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा
ने तुझको 'अता किया होगा खायेगा।
54 वह शख़्स जो तुम में नाज़ुक मिज़ाज और नाज़ुक बदन होगा,
उसकी भी अपने भाई और अपनी हमआग़ोश बीवी और अपने
बाक़ी मांदा बच्चों की तरफ़ बुरी नज़र होगी;
55 यहाँ तक कि वह इनमें से किसी को भी अपने ही बच्चों के
गोश्त में से, जिनको वह ख़ुद खाएगा कुछ नहीं देगा; क्यूँकि उस
घिराव के मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में जब तेरे दुश्मन तुझको
तेरी ही सब बस्तियों में तंग कर मारेंगे, तो उसके पास और कुछ

* **28:48** हुक्म

बाक़ी न रहेगा।

56 वह 'औरत भी जो तुम्हारे बीच ऐसी नाज़ुक मिज़ाज और
नाज़ुक बदन होगी कि नर्मी — ओ — नज़ाकत की वजह से अपने
पाँव का तलवा भी ज़मीन से लगाने की जुर'अत न करती हो,
उसकी भी अपने पहलू के शौहर और अपने ही बेटे और बेटी,

57 और अपने ही नौज़ाद बच्चे की तरफ़ जो उसकी रानों के बीच
से निकला हो, बल्कि अपने सब लड़के बालों की तरफ़ जिनको वह
जनेगी बुरी नज़र होगी; क्यूँकि वह तमाम चीज़ों की क़िल्लत की
वजह से उन्हीं को छुप — छुप कर खाएगी, जब उस घिराव के
मौक़े' पर और उस आड़े वक़्त में तेरे दुश्मन तेरी ही बस्तियों में
तुझको तंग कर मारेंगे।

58 अगर तू उस शरी'अत की उन सब बातों पर जो इस किताब
में लिखी हैं, एहतियात रख कर इस तरह 'अमल न करे कि तुमको
ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के जलाली और मुहीब नाम का ख़ौफ़ हो;

59 तो ख़ुदावन्द तुम पर 'अजीब आफ़तें नाज़िल करेगा, और
तुम्हारी औलाद की आफ़तों को बढ़ा कर बड़ी और देरपा आफ़तें
और सख़्त और देरपा बीमारियाँ कर देगा।

60 और मिस्र के सब रोग जिनसे तू डरता था तुझको लगाएगा
और वह तुझको लगे रहेंगे।

61 और उन सब बीमारियों और आफ़तों को भी जो इस
शरी'अत की किताब में मज़कूर नहीं हैं, ख़ुदावन्द तुझको
लगाएगा जब तक तेरा नास न हो जाए।

62 और चूँकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की बात नहीं सुनेगा,
इसलिए कहाँ तो तुम कसरत में आसमान के तारों की तरह हो,
और कहाँ शुमार में थोड़े ही से रह जाओगे।

63 तब यह होगा कि जैसे तुम्हारे साथ भलाई करने और तुमको
बढ़ाने से ख़ुदावन्द ख़ुशनूद हुआ, ऐसे ही तुमको फ़ना कराने और
हलाक कर डालने से ख़ुदावन्द ख़ुशनूद होगा; और तुम उस मुल्क

से उखाड़ दिए जाओगे, जहाँ तू उस पर क़ब्ज़ा करने को जा रहा
है।
64 और ख़ुदावन्द तुझको ज़मीन के एक सिरे से दूसरे सिरे तक
तमाम क़ौमों में तितर — बितर करेगा, वहाँ तू लकड़ी और पत्थर
के और मा'बूदों को जिनको तू या तेरे बाप — दादा जानते भी नहीं
इबादत करेगा।
65 उन क़ौमों के बीच तुझको चैन नसीब न होगा और न तेरे
पाँव के तलवे को आराम मिलेगा, बल्कि ख़ुदावन्द तुझको वहाँ
दिल — ए — लरज़ाँ और आँखों को धुंधलाहट और जी को कुढ़न
देगा।
66 और तेरी जान शक में अटकी रहेगी और तू रात — दिन
डरता रहेगा, और तुम्हारी ज़िन्दगी का कोई ठिकाना न होगा।
67 और तू अपने दिली ख़ौफ़ के और उन नज़ारों की वजह से
जिनको तू अपनी आँखों से देखेगा, सुबह को कहेगा कि ऐ काश
कि शाम होती और शाम को कहेगा ऐ काश कि सुबह होती।
68 और ख़ुदावन्द तुझको किश्तियों में चढ़ा कर उस रास्ते से†
मिस्र में लौटा ले जाएगा, जिसके बारे में मैंने तुझसे कहा कि तू
उसे फिर कभी न देखना; और वहाँ तुम अपने दुश्मनों के ग़ुलाम
और लौंडी होने के लिए अपने को बेचोगे लेकिन कोई ख़रीदार न
होगा।"

29

1 इस्राईलियों के साथ जिस 'अहद के बाँधने का हुक्म ख़ुदावन्द
ने मूसा को मोआब के मुल्क में दिया उसी की यह बातें हैं। यह उस
'अहद से अलग हैं जो उसने उनके साथ*†होरिब में बाँधा था।

[illegible]

2 इसलिए मूसा ने सब इस्राईलियों को बुलवा कर उनसे कहा,
तुमने सब कुछ जो ख़ुदावन्द ने तुम्हारी आँखों के सामने, मुल्क

† 28:68 मुल्क * 29:1 होरेब † 29:1 पहाड़

— ए — मिस्र में फ़िर'औन और उसके सब ख़ादिमों और उसके
सारे मुल्क से किया देखा है।
3 इम्तिहान के वह बड़े — बड़े काम और निशान और बड़े —
बड़े करिश्मे, तुमने अपनी आँखों से देखे।
4 लेकिन ख़ुदावन्द ने तुमको आज तक न तो ऐसा दिल दिया
जो समझे, और न देखने की आँखें और सुनने के कान दिए।
5 और मैं चालीस बरस बीराने में तुमको लिए फिरा, और न
तुम्हारे तन के कपड़े पुराने हुए और न तुम्हारे पाँव की जूती पुरानी
हुई।
6 और तुम इसी लिए रोटी खाने और मय या शराब पीने नहीं
पाए ताकि तुम जान लो कि मैं ख़ुदावन्द तुम्हारा ख़ुदा हूँ।
7 और जब तुम इस जगह आए तो हस्बोन का बादशाह सीहोन
और बसन का बादशाह 'ओज हमारा मुक़ाबला करने को निकले,
और हमने उनको मारकर
8 उनका मुल्क ले लिया और उसे रूबीनियों को और जद्दियों को
और मनस्सियों के आधे क़बीले को मीरास के तौर पर दे दिया।
9 तब तुम इस 'अहद की बातों को मानना और उन पर 'अमल
करना, ताकि जो कुछ तुम करो उसमें कामयाब हो।
10 आज के दिन तुम और तुम्हारे सरदार, तुम्हारे क़बीले और
तुम्हारे बुज़ुर्ग और तुम्हारे 'उहदेदार और सब इस्राईली मर्द,
11 और तुम्हारे बच्चे और तुम्हारी बीवियाँ और वह परदेसी भी
जो तेरी ख़ेमागाह में रहता है, चाहे वह तेरा लकड़हारा हो चाहे
सक़्क़ा, सबके सब ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के सामने खड़े हों,
12 ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के 'अहद में, जिसे वह तेरे
साथ आज बाँधता और उसकी क़सम में जिसे वह आज तुझसे
खाता है शामिल हो।
13 और वह तुझको आज के दिन अपनी क़ौम क़रार दे और वह
तेरा ख़ुदा हो, जैसा उसने तुझसे कहा, जैसी उसने तेरे बाप —

दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब से क़सम खाई।
14 और मैं इस 'अहद और क़सम में सिर्फ़ तुम्हीं को नहीं,
15 लेकिन उसको भी जो आज के दिन ख़ुदावन्द हमारे ख़ुदा के
सामने यहाँ हमारे साथ खड़ा है, और उसकी भी जो आज के दिन
यहाँ हमारे साथ नहीं, उनमें शामिल करता हूँ।
16 तुम ख़ुद जानते हो कि मुल्क — ए — मिस्र में हम कैसे रहे
और क्यूँ कर उन क़ौमों के बीच से होकर आए, जिनके बीच से तुम
गुज़रे।
17 और तुमने ख़ुद उनकी मकरूह चीज़ें और लकड़ी और पत्थर
और चाँदी और सोने की मूरतें देखीं जो उनके यहाँ थीं।
18 इसलिए ऐसा न हो कि तुम में कोई मर्द या 'औरत या
ख़ान्दान या क़बीला ऐसा हो जिसका दिल आज के दिन ख़ुदावन्द
हमारे ख़ुदा से बरगश्ता हो, और वह जाकर उन क़ौमों के मा'बूदों
की इबादत करे या ऐसा न हो कि तुम में कोई ऐसी जड़ हो जो
इन्द्रायन और नागदौना पैदा करे;
19 और ऐसा आदमी क़सम की यह बातें सुनकर दिल ही दिल
में अपने को मुबारकबाद दे और कहे, कि चाहे मैं कैसा ही ज़िद्दी हो
कर तर के साथ ख़ुश्क को फ़ना कर डालूँ तोभी मेरे लिए सलामती
है।
20 लेकिन ख़ुदावन्द उसे मु'आफ़ नहीं करेगा, बल्कि उस वक़्त
ख़ुदावन्द का क़हर और उसकी ग़ैरत उस आदमी पर नाज़िल होगी
और सब ला'नतें जो इस किताब में लिखी हैं उस पर पड़ेंगी, और
ख़ुदावन्द उसके नाम को सफ़ह — ए — रोज़गार से मिटा देगा।
21 और ख़ुदावन्द इस 'अहद की उन सब ला'नतों के मुताबिक़
जो इस शरी'अत की किताब में लिखी हैं, उसे इस्राईल के सब
क़बीलों में से बुरी सज़ा के लिए ‡जुदा करेगा।
22 और आने वाली नसलों में तुम्हारी नसल के लोग जो तुम्हारे

‡ **29:21** उस को एक नमूना बनाएं

बाद पैदा होंगे और परदेसी भी जो दूर के मुल्क से आएँगे, जब वह
इस मुल्क की बलाओं और ख़ुदावन्द की लगाई हुई बीमारियों को
देखेंगे,
23 और यह भी देखेंगे कि सारा मुल्क जैसे गन्धक और नमक
बना पड़ा है और ऐसा जल गया है कि इसमें न तो कुछ बोया
जाता न पैदा होता, और न किसी क़िस्म की घास उगती है और
वह सदूम और 'अमूरा और 'अदमा और ज़िबोईम की तरह उजड़
गया जिनको ख़ुदावन्द ने अपने ग़ज़ब और क़हर में तबाह कर
डाला।
24 तब वह बल्कि सब क़ौमे पूछेंगी, 'ख़ुदावन्द ने इस मुल्क से
ऐसा क्यूँ किया? और ऐसे बड़े क़हर के भड़कने की वजह क्या है?'
25 उस वक़्त लोग जवाब देंगे, 'ख़ुदावन्द इनके बाप — दादा
के ख़ुदा ने जो 'अहद इनके साथ इनको मुल्क — ए — मिस्र से
निकालते वक़्त बाँधा था, उसे इन लोगों ने छोड़ दिया;
26 और जाकर और मा'बूदों की इबादत और परस्तिश की,
जिनसे वह वाक़िफ़ न थे और जिनको ख़ुदावन्द ने इनको दिया
भी न था।
27 इसीलिए इस किताब की लिखी हुई सब ला'नतों को इस
मुल्क पर नाज़िल करने के लिए ख़ुदावन्द का ग़ज़ब इस पर
भड़का।
28 और ख़ुदावन्द ने क़हर और ग़ुस्से और बड़े ग़ज़ब में इनको
इनके मुल्क से उखाड़कर दूसरे मुल्क में फेंका, जैसा आज के दिन
ज़ाहिर है।
29 ग़ैब का मालिक तो ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा ही है; लेकिन जो
बातें ज़ाहिर की गई हैं वह हमेशा तक हमारे और हमारी औलाद
के लिए हैं, ताकि हम इस शरी'अत की सब बातों पर 'अमल करें।

30

1 और जब यह सब बातें या'नी बरकत और ला'नत जिनको
मैंने आज तेरे आगे रख्खा है तुझ पर आएँ, और तू उन क़ौमों के
बीच जिनमें ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको हँका कर पहुँचा दिया
हो उनको याद करें।
2 और तू और तेरी औलाद दोनों ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की तरफ़
फिरे, और उसकी बात इन सब हुक्मों के मुताबिक़ जो मैं आज
तुझको देता हूँ अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से माने।
3 तो ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी ग़ुलामी को पलटकर तुझ
पर रहम करेगा, और फिरकर तुझको सब क़ौमों में से, जिनमें
ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझको तितर — बितर किया हो जमा'
करेगा।
4 अगर तेरे आवारागर्द *दुनिया के इन्तिहाई हिस्सों में भी हों,
तो वहाँ से भी ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको जमा' करके ले आएगा।
5 और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उसी मुल्क में तुमको लाएगा जिस
पर तुम्हारे बाप — दादा ने क़ब्ज़ा किया था, और तू उसको अपने
क़ब्ज़े में लाएगा; फिर वह तुझसे भलाई करेगा और तेरे बाप —
दादा से ज़्यादा तुमको बढ़ाएगा।
6 और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरे और तेरी औलाद के दिल का
ख़तना करेगा, ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से अपने सारे दिल
और अपनी सारी जान से मुहब्बत रख्खे और ज़िन्दा रहे।
7 और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा यह सब ला'नतें तुम्हारे दुश्मनों और
कीना रखने वालों पर, जिन्होंने तुझको सताया नाज़िल करेगा।
8 और तू लौटेगा और ख़ुदावन्द की †बात सुनेगा, और उसके
सब हुक्मों पर जो मैं आज तुझको देता हूँ 'अमल करेगा।
9 और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तुझको तेरे कारोबार और आस
औलाद और चौपायों के बच्चों और ज़मीन की पैदावार के लिहाज़
से तेरी भलाई की ख़ातिर तुझको बढ़ाएगा; फिर तुझसे ख़ुश

* **30:4** आसमानतले सब से दूर जगहों † **30:8** हुक्म

होगा, जैसे वह तेरे बाप — दादा से ख़ुश था।
10 बशर्ते कि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा की ‡बात को सुनकर उसके
अहकाम और आईन को माने जो शरी'अत की इस किताब में लिखे
हैं, और अपने सारे दिल और अपनी सारी जान से ख़ुदावन्द अपने
ख़ुदा की तरफ़ फिरे।

???????? ?? ??? ?? ?????????

11 क्यूँकि वह हुक्म जो आज के दिन मैं तुझको देता हूँ, तेरे
लिए बहुत मुश्किल नहीं और न वह दूर है।
12 वह आसमान पर तो है नहीं कि तू कहे कि 'आसमान पर
कौन हमारी ख़ातिर चढ़े, और उसको हमारे पास लाकर सुनाए
ताकि हम उस पर 'अमल करें?'
13 और न वह समन्दर पार है कि तू कहे, 'समन्दर पर कौन
हमारी ख़ातिर जाए, और उसको हमारे पास ला कर सुनाए ताकि
हम उस पर 'अमल करें?'
14 बल्कि वह कलाम तेरे बहुत नज़दीक है; वह तुम्हारे मुँह में
और तुम्हारे दिल में है, ताकि तुम उस पर 'अमल करो।
15 देखो, मैंने आज के दिन ज़िन्दगी और भलाई को, और मौत
और बुराई को तुम्हारे आगे रक्खा है।
16 क्यूँकि मैं आज के दिन तुमको हुक्म करता हूँ, कि तू ख़ुदावन्द
अपने ख़ुदा से मुहब्बत रखे और उसकी राहों पर चले, और उसके
फ़रमान और आईन और अहकाम को माने ताकि तू ज़िन्दा रहे
और बढ़े; और ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उस मुल्क में तुझको बरकत
बख़्शे, जिस पर क़ब्ज़ा करने को तू वहाँ जा रहा है।
17 लेकिन अगर तेरा दिल फिर जाए और तू न सुने, बल्कि
गुमराह होकर और मा'बूदों की परस्तिश और इबादत करने लगे;
18 तो आज के दिन मैं तुमको जता देता हूँ कि तुम ज़रूर फ़ना हो
जाओगे, और उस मुल्क में जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम §यरदन

‡ **30:10** हुक्म § **30:18** नदी

पार जा रहे हो तुम्हारी उम्र दराज़ न होगी।
19 मैं आज के दिन आसमान और ज़मीन को तुम्हारे बरख़िलाफ़
गवाह बनाता हूँ, कि मैंने ज़िन्दगी और मौत की और बरकत
और ला'नत को तुम्हारे आगे रख्खा है; इसलिए तुम ज़िन्दगी को
इख़्तियार करो कि तुम भी ज़िन्दा रहो और तुम्हारी औलाद भी;
20 ताकि तू ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा से मुहब्बत रखे, और उसकी
बात सुने और उसी से लिपटा रहे; क्यूँकि वही तेरी ज़िन्दगी और
तेरी उम्र की दराज़ी है, ताकि तू उस मुल्क में बसा रहे जिसको तेरे
बाप — दादा अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब को देने की क़सम
ख़ुदावन्द ने उनसे खाई थी।"

31

[illegible]

1 और मूसा ने जा कर यह बातें सब इस्राईलियों को सुनाई,
2 और उनको कहा कि "मैं तो आज कि दिन एक सौ बीस बरस
का हूँ, मैं अब चल फिर नहीं सकता; और ख़ुदावन्द ने मुझसे कहा
है कि तू इस यरदन पार नहीं जाएगा।
3 इसलिए ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा ही तेरे आगे — आगे पार
जाएगा, और वही उन क़ौमों को तेरे आगे से फ़ना करेगा और
तू उसका वारिस होगा; और जैसा ख़ुदावन्द ने कहा है, यशू'अ
तुम्हारे आगे — आगे पार जाएगा।
4 और ख़ुदावन्द उनसे वही करेगा जो उसने अमोरियों के
बादशाह सीहोन और 'ओज और उनके मुल्क से किया, कि उनको
फ़ना कर डाला।
5 और ख़ुदावन्द उनको तुमसे शिकस्त दिलाएगा, और तुम
उनसे उन सब हुक्मों के मुताबिक़ पेश आना जो मैंने तुमको दिए
हैं।

6 तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; मत डर और न उनसे
ख़ौफ़ खा, क्यूँकि ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा ख़ुद ही तेरे साथ जाता है;
वह तुझसे दस्तबरदार नहीं होगा, और न तुमको छोड़ेगा।”
7 फिर मूसा ने यशू'अ को बुलाकर सब इस्राईलियों के सामने
उससे कहा, “तू मज़बूत हो जा और हौसला रख; क्यूँकि तू इस
क़ौम के साथ उस मुल्क में जाएगा, जिसको ख़ुदावन्द ने उनके
बाप — दादा से क़सम खाकर देने को कहा था, और तू उनको
उसका वारिस बनाएगा।
8 और ख़ुदावन्द ही तेरे आगे — आगे चलेगा; वह तेरे साथ
रहेगा, वह तुझ से न दस्तबरदार होगा, न तुझे छोड़ेगा; इसलिए
तू ख़ौफ़ न कर और बे — दिल न हो।”

[illegible]

9 और मूसा ने इस शरी'अत को लिखकर उसे काहिनों के, जो
बनी लावी और ख़ुदावन्द के 'अहद के संन्दूक के उठाने वाले थे,
और इस्राईल के सब बुज़ुर्गों के सुपर्द किया।
10 फिर मूसा ने उनको यह हुक्म दिया, हर सात बरस के आख़िर
में छुटकारे के साल के मु'अय्यन वक़्त पर झोपड़ियों के 'ईद में,
11 जब सब इस्राईली ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा के सामने उस
जगह आ कर हाज़िर हों जिसे वह ख़ुद चुनेगा, तो तुम इस
शरी'अत को पढ़कर सब इस्राईलियों को सुनाना।
12 तुम सारे लोगों को, या'नी मर्दों और 'औरतों और बच्चों
और अपनी बस्तियों के मुसाफ़िरों को जमा' करना, ताकि वह सुनें
और सीखें और ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानें और इस शरी
“अत की सब बातों पर एहतियात रखकर 'अमल करें;
13 और उनके लड़के जिनको कुछ मा'लूम नहीं वह भी सुनें, और
जब तक तुम उस मुल्क में जीते रहो जिस पर क़ब्ज़ा करने को तुम

*यरदन पार जाते हो, तब तक वह बराबर ख़ुदावन्द तुम्हारे ख़ुदा का ख़ौफ़ मानना सीखें।”

[illegible]

14 फिर ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, तेरे मरने के दिन आ
पहुँचे। इसलिए तू यशू'अ को बुला ले और तुम दोनों ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में हाज़िर हो जाओ, ताकि मैं उसे हिदायत करूँ।” चुनाँचे मूसा और यशू'अ रवाना होकर ख़ेमा — ए — इजितमा'अ में हाज़िर हुए।
15 और ख़ुदावन्द बादल के सुतून में होकर ख़ेमे में नमूदार हुआ,
और बादल का सुतून ख़ेमे के दरवाज़े पर ठहर गया।
16 तब ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा, “देख, तू अपने बाप — दादा
के साथ †सो जाएगा; और यह लोग उठकर उस मुल्क के अजनबी मा'बूदों की पैरवी में, जिनके बीच वह जाकर रहेंगे ज़िनाकार हो जाएँगे और मुझको छोड़ देंगे, और उस 'अहद को जो मैंने उनके साथ बाँधा है तोड़ डालेंगे।
17 तब उस वक़्त मेरा क़हर उन पर भड़केगा, और मैं उन को
छोड़ दूँगा और उनसे अपना मुँह छिपा लूँगा; और वह निगल लिए जाएँगे और बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर आएँगी, चुनाँचे वह उस दिन कहेंगे, 'क्या हम पर यह बलाएँ इसी वजह से नहीं आईं कि हमारा ख़ुदा हमारे बीच नहीं?'
18 उस वक़्त उन सब बदियों की वजह से, जो और मा'बूदों की
तरफ़ माइल होकर उन्होंने की होंगी मैं ज़रूर अपना मुँह छिपा लूँगा।
19 इसलिए तुम यह गीत अपने लिए लिख लो, और तुम उसे
बनी — इस्राईल को सिखाना और उनको हिफ़्ज़ करा देना, ताकि यह गीत बनी इस्राईल के ख़िलाफ़ मेरा गवाह रहे।

* **31:13** नदी † **31:16** जैसे मर जाएगा

20 इसलिए कि जब मैं उनको उस मुल्क में, जिस की क़सम मैंने
उनके बाप — दादा से खाई और जहाँ ‡दूध और शहद बहता है
पहुँचा दूँगा, और वह ख़ूब खा — खाकर मोटे हो जाएँगे; तब वह
और मा'बूदों की तरफ़ फिर जाएँगे और उनकी इबादत करेंगे और
मुझको हक़ीर जानेंगे और मेरे 'अहद को तोड़ डालेंगे।
21 और यूँ होगा कि जब बहुत सी बलाएँ और मुसीबतें उन पर
आएँगी, तो ये गीत गवाह की तरह उन पर शहादत देगा; इसलिए
कि इसे उनकी औलाद कभी नहीं भूलेगी, क्यूँकि इस वक़्त भी
उनको उस मुल्क में पहुँचाने से पहले जिसकी क़सम मैंने खाई है,
मैं उनके ख़याल को जिसमें वह हैं जानता हूँ।”
22 इसलिए मूसा ने उसी दिन इस गीत को लिख लिया और
उसे बनी — इस्राईल को सिखाया।
23 और उसने नून के बेटे यशू'अ को हिदायत की और कहा,
“मज़बूत हो जा, और हौसला रख; क्यूँकि तू बनी — इस्राईल को
उस मुल्क में ले जाएगा जिसकी क़सम मैंने उनसे खाई थी, और
मैं तेरे साथ रहूँगा।”
24 और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस शरी'अत की बातों को एक
किताब में लिख चुका और वह ख़त्म हो गई,
25 तो मूसा ने लावियों से, जो ख़ुदावन्द के 'अहद के संदूक़ को
उठाया करते थे कहा,
26 “इस शरी'अत की किताब को लेकर ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा
के 'अहद के सन्दूक़ के पास रख दो, ताकि वह तुम्हारे बरख़िलाफ़
गवाह रहे।
27 क्यूँकि मैं तुम्हारी बग़ावत और गर्दनकशी को जानता हूँ।
देखो, अभी तो मेरे जीते जी तुम ख़ुदावन्द से बग़ावत करते रहे
हो, तो मेरे मरने के बाद कितना ज़्यादा न करोगे?
28 तुम अपने क़बीले के सब बुज़ुर्गों और 'उहदेदारों को मेरे पास

‡ **31:20** अज़ हद ज़रखेज़ मुल्क में

जमा' करो, ताकि मैं यह बातें उनके कानों में डाल दूँ और आसमान
और ज़मीन को उनके बरख़िलाफ़ गवाह बनाऊँ।
29 क्यूँकि मैं जानता हूँ कि मेरे मरने के बाद तुम अपने को
बिगाड़ लोगे, और उस रास्ते से जिसका मैंने तुमको हुक्म दिया है
फिर जाओगे; तब आख़िरी दिनों में तुम पर आफ़त टूटेगी, क्यूँकि
तुम अपने कामों से ख़ुदावन्द को ग़ुस्सा दिलाने के लिए वह काम
करोगे जो उसकी नज़र में बुरा है।"

[illegible]

30 इसलिए मूसा ने इस गीत की बातें इस्राईल की सारी
जमा'अत को आख़िर तक कह सुनाई।

32

1 कान लगाओ, ऐ आसमानो, और मैं बोलूँगा; और ज़मीन मेरे
मुँह की बातें सुने।
2 मेरी ता'लीम मेंह की तरह बरसेगी, मेरी तक़रीर शबनम की
तरह टपकेगी; जैसे नर्म घास पर फुआर पड़ती हो, और सब्ज़ी पर
झड़ियाँ।
3 क्यूँकि मैं ख़ुदावन्द के नाम का इश्तिहार दूँगा। तुम हमारे
ख़ुदा की ता'ज़ीम करो।
4 "वह वही चट्टान है, उसकी सन'अत कामिल है; क्यूँकि उसकी
सब राहें इन्साफ़ की हैं, वह वफ़ादार ख़ुदा, और बदी से मुबर्रा है,
वह मुन्सिफ़ और बर — हक़ है।
5 *यह लोग उसके साथ बुरी तरह से पेश आए, यह उसके
फ़र्ज़न्द नहीं। यह उनका 'ऐब है, यह सब कजरौ और टेढ़ी नसल
हैं।

* **32:5** इस्राईली लोग

6 क्या तुम ऐ बेवक़ूफ़ और कम'अक़्ल लोगों, इस तरह
ख़ुदावन्द को बदला दोगे? क्या वह तुम्हारा †बाप नहीं, जिसने
तुमको ‡ख़रीदा है? उस ही ने तुमको बनाया और क़याम बख़्शा।
7 क़दीम दिनों को याद करो, नसल दर नसल के बरसों पर ग़ौर
करो; अपने बाप से पूछो, वह तुमको बताएगा; बुज़ुर्गों से सवाल
करो, वह तुमसे बयान करेंगे।
8 जब हक़ त'§आला ने क़ौमों को मीरास बाँटी, और बनी आदम
को जुदा — जुदा किया, तो उसने क़ौमों की सरहदें, बनी इस्राईल
के शुमार के मुताबिक़ ठहराईं।
9 क्यूँकि ख़ुदावन्द का हिस्सा उसी के लोग हैं। या'क़ूब उसकी
मीरास का हिस्सा है।
10 वह ख़ुदावन्द को वीराने और सूने ख़तरनाक वीराने में मिला;
ख़ुदावन्द उसके चारों तरफ़ रहा, उसने उसकी ख़बर ली, और उसे
अपनी आँख की पुतली की तरह रख्खा।
11 जैसे 'उक़ाब अपने घोंसले को हिला हिलाकर अपने बच्चों
पर मण्डलाता है, वैसे ही उसने अपने बाज़ूओं को फैलाया, और
उनको लेकर अपने परों पर उठा लिया।
12 सिर्फ़ ख़ुदावन्द ही ने उनकी रहबरी की, और उसके साथ कोई
अजनबी मा'बूद न था।
13 उसने उसे ज़मीन की ऊँची — ऊँची जगहों पर सवार
कराया, और उसने खेत की पैदावार खाई; उसने उसे चट्टान में
से शहद, और मुश्किल जगह में से तेल चुसाया।
14 और गायों का मक्खन और भेड़ — बकरियों का दूध और बर्रों
की चर्बी, और बसनी नसल के मेंढे और बकरे, और ख़ालिस गेंहू
का आटा भी; और तू अंगूर के ख़ालिस रस की मय पिया करता
था।
15 लेकिन *यसूरून मोटा हो कर लातें मारने लगा; तू मोटा हो

---

† **32:6** ख़ुदा ‡ **32:6** बनाया § **32:8** ख़ुदा * **32:15** यसुरूनके मायने है, सीधे मन वाला शख़्स, यह इस्राईल है देखें 33:5, यस'या ह 44:2

कर सुस्त हो गया है, और तुझ पर चर्बी छा गई है; तब उसने ख़ुदा
को जिसने उसे बनाया छोड़ दिया, और अपनी नजात की चट्टान
की हिक़ारत की।
16 उन्होंने अजनबी मा'बूदों के ज़रिए' उसे ग़ैरत, और
मकरूहात से उसे ग़ुस्सा दिलाया।
17 उन्होंने जिन्नात के लिए जो ख़ुदा न थे, बल्कि ऐसे मा'बूदों
के लिए जिनसे वह वाक़िफ़ न थे, या'नी नये — नये मा'बूदों के
लिए जो हाल ही में ज़ाहिर हुए थे, जिनसे उनके बाप दादा कभी
डरे नहीं क़ुर्बानी की।
18 तू उस चट्टान से ग़ाफ़िल हो गया, जिसने तुझे पैदा किया
था; तू ख़ुदा को भूल गया, जिसने तुझे पैदा किया।
19 "ख़ुदावन्द ने यह देख कर उनसे नफ़रत की, क्यूँकि उसके
बेटों और बेटियों ने उसे ग़ुस्सा दिलाया।
20 तब उसने कहा, 'मैं अपना मुँह उनसे छिपा लूँगा, और
देखूँगा कि उनका अन्जाम कैसा होगा; क्यूँकि वह बाग़ी नसल
और बेवफ़ा औलाद हैं।
21 उन्होंने उस चीज़ के ज़रिए' जो ख़ुदा नहीं, मुझे ग़ैरत और
अपनी बातिल बातों से मुझे ग़ुस्सा दिलाया; इसलिए मैं भी उनके
ज़रिए' से जो कोई उम्मत नहीं उनको ग़ैरत और एक नादान क़ौम
के ज़रिए' से उनको ग़ुस्सा दिलाऊँगा।
22 इसलिए कि मेरे ग़ुस्से के मारे आग भड़क उठी है, जो पाताल
की तह तक जलती जाएगी, और ज़मीन को उसकी पैदावार समेत
भसम कर देगी, और पहाड़ों की बुनियादों में आग लगा देगी।
23 'मैं उन पर आफ़तों का ढेर लगाऊँगा, और अपने तीरों को
उन पर ख़त्म करूँगा।
24 वह भूक के मारे घुल जाएँगे, और शदीद हरारत और सख़्त
हलाकत का लुक़्मा हो जाएँगे; और मैं उन पर दरिन्दों के दाँत और
ज़मीन पर के सरकने वाले कीड़ों का ज़हर छोड़ दूँगा।

25 बाहर वह तलवार से मरेंगे, और कोठरियों के अन्दर ख़ौफ़ से,
जवान मर्द और कुँवारियों, दूध पीते बच्चे और पक्के बाल वाले
सब यूँ ही हलाक होंगे।
26 मैंने कहा, मैं उनको दूर — दूर तितर — बितर करूँगा, और
उनका तज़किरा नौ' — ए — बशर में से मिटा डालूँगा।
27 लेकिन मुझे दुश्मन की छेड़ छाड़ का अन्देशा था, कि कहीं
मुख़ालिफ़ उल्टा समझ कर, यूँ न कहने लगें, कि हमारे ही हाथ
बाला हैं और यह सब ख़ुदावन्द से नहीं हुआ।"
28 "वह एक ऐसी क़ौम हैं जो मसलहत से ख़ाली हो उनमें कुछ
समझ नहीं।
29 काश वह 'अक़्लमन्द होते कि इसको समझते, और अपनी
'आक़बत पर ग़ौर करते।
30 क्यूँ कर एक आदमी हज़ार का पीछा करता, और दो आदमी
दस हज़ार को भगा देते, अगर उनकी चट्टान ही उनको बेच न देती,
और ख़ुदावन्द ही उनको हवाले न कर देता?
31 क्यूँकि उनकी चट्टान ऐसी नहीं जैसी हमारी चट्टान है, चाहे
हमारे दुश्मन ही क्यूँ न मुन्सिफ़ हों।
32 क्यूँकि उनकी ताक सदूम की ताकों में से और 'अमूरा के खेतों
की है; उनके अंगूर हलाहल के बने हुए हैं, और उनके गुच्छे कड़वे
हैं।
33 उनकी मय अज़दहाओं का बिस, और काले नागों का ज़हर
— ए — क़ातिल है
34 क्या यह मेरे ख़ज़ानों में सर — ब — मुहर होकर भरा नहीं
पड़ा है?
35 उस वक़्त जब उनके पाँव फिसलें, तो इन्तक़ाम लेना और
बदला देना मेरा काम होगा: क्यूँकि उनकी आफ़त का दिन
नज़दीक है, और जो हादिसे उन पर गुज़रने वाले हैं वह जल्द
आएँगे।

36 क्यूँकि ख़ुदावन्द अपने लोगों का इन्साफ़ करेगा, और अपने
बन्दों पर तरस खाएगा; जब वह देखेगा कि उनकी क़ुव्वत जाती
रही, और कोई भी, न क़ैदी और न आज़ाद बाक़ी बचा।
37 और वह कहेगा, उन के मा'बूद कहाँ हैं? वह चट्टान कहाँ,
जिस पर उनका भरोसा था;
38 जो उनके क़ुर्बानियों की चर्बी खाते, और उनके तपावन की
मय पीते थे? वही उठ कर तुम्हारी मदद करें, वही तुम्हारी पनाह
हों।
39 'इसलिए अब तुम देख लो, कि मैं ही वह हूँ। और मेरे साथ
कोई मा'बूद नहीं। मैं ही मार डालता और मैं ही जिलाता हूँ। मैं
ही ज़ख़्मी करता और मैं ही चंगा करता हूँ, और कोई नहीं जो मेरे
हाथ से छुड़ाए।
40 क्यूँकि मैं अपना हाथ आसमान की तरफ़ उठाकर कहता हूँ,
कि चूँकि मैं हमेशा हमेश ज़िन्दा हूँ,
41 इसलिए अगर मैं अपनी झलकती तलवार को, तेज़ करूँ,
और 'अदालत को अपने हाथ में ले लूँ, तो अपने मुख़ालिफ़ों से
इन्तक़ाम लूँगा, और अपने कीना रखने वालों को बदला दूँगा।
42 मैं अपने तीरों को ख़ून पिला — पिलाकर मस्त कर दूंगा, और
मेरी तलवार गोश्त खाएगी — वह ख़ून मक़्तूलों और ग़ुलामों का,
और वह गोश्त दुश्मन के सरदारों के सिर का होगा।
43 'ऐ क़ौमों, उसके लोगों के साथ ख़ुशी मनाओ क्यूँकि वह
अपने बन्दों के ख़ून का बदला लेगा, और अपने मुख़ालिफ़ों को
बदला देगा, और अपने मुल्क और लोगों के लिए कफ़्फ़ारा देगा।"
44 तब मूसा और नून के बेटे होसे'अ ने आ कर इस गीत की
सारी बातें लोगों को कह सुनाई।
45 और जब मूसा यह सब बातें सब इस्राईलियों को सुना चुका,
46 तो उसने उनसे कहा, "जो बातें मैंने तुमसे आज के दिन बयान
की हैं, उन सब से तुम दिल लगाना और अपने लड़कों को हुक्म

देना कि वह एहतियात रखकर इस शरी'अत की सब बातों पर
'अमल करें।
47 क्यूँकि यह तुम्हारे लिए कोई बे फ़ायदा बात नहीं, बल्कि
यह तुम्हारी ज़िन्दगानी है; और इसी से उस मुल्क में, जहाँ तुम
†यरदन पार जा रहे हो कि उस पर क़ब्ज़ा करो, तुम्हारी '‡उम्र दराज़
होगी।"

[illegible]

48 और उसी दिन ख़ुदावन्द ने मूसा से कहा कि,
49 "तू इस कोह — ए — 'अबारीम पर चढ़ कर नबू की चोटी
को जा, जो यरीहू के सामने मुल्क — ए — मोआब में है; और
कनान के मुल्क को जिसे मैं मीरास के तौर पर बनी — इस्राईल
को देता हूँ देख ले।
50 और उसी पहाड़ पर जहाँ तू जाए वफ़ात पाकर अपने लोगों
में शामिल हो, जैसे तेरा भाई हारून होर के पहाड़ पर मरा और
अपने लोगों में जा मिला।
51 इसलिए कि तुम दोनों ने बनी — इस्राईल के बीच सीन के
जंगल के क़ादिस में मरीबा के चश्मे पर मेरा गुनाह किया, क्यूँकि
तुमने बनी — इस्राईल के बीच मेरी बड़ाई न की।
52 इसलिए तू उस मुल्क को अपने आगे देख लेगा, लेकिन तू
वहाँ उस मुल्क में जो मैं बनी — इस्राईल को देता हूँ जाने न
पाएगा।"

33

[illegible]

1 और मर्द — ए — ख़ुदा मूसा ने जो दु'आ — ए — ख़ैर देकर
अपनी वफ़ात से पहले बनी — इस्राईल को बरकत दी, वह यह
है।

† **32:47** नदी ‡ **32:47** जिंदगी के साल

2 और उसने कहा: “ख़ुदावन्द सीना से आया और श'ईर से उन
पर ज़ाहिर हुआ, वह कोह — ए — फ़ारान से जलवागर हुआ,
और लाखों फ़रिश्तों में से आया; उसके दहने हाथ पर उनके लिए
आतिशी शरी'अत थी।
3 वह बेशक क़ौमों से मुहब्बत रखता है, उसके सब मुक़द्दस
लोग तेरे हाथ में हैं, और वह तेरे क़दमों में बैठे, एक एक तेरी
बातों से मुस्तफ़ीज़ होगा।
4 मूसा ने हमको शरी'अत और या'क़ूब की जमा'अत के लिए
मीरास दी।
5 और वह उस वक़्त यसूरून में बादशाह था, जब क़ौम के
सरदार इकट्ठे और इस्राईल के क़बीले जमा' हुए।
6 “रूबिन ज़िन्दा रहे और मर न जाए, तोभी उसके आदमी थोड़े
ही हों।”
7 और यहूदाह के लिए यह है जो मूसा ने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द,
तू यहूदाह की सुन, और उसे उसके लोगों के पास पहुँचा; वह
अपने लिए आप अपने हाथों से लड़ा, और तू ही उसके दुश्मनों
के मुक़ाबले में उसका मददगार होगा।”
8 और लावी के हक़ में उसने कहा, तेरे तुम्मीन और ऊरीम उस
मर्द — ए — ख़ुदा के पास हैं जिसे तूने मस्सा पर आज़मा लिया,
और जिसके साथ मरीबा के चश्मे पर तेरा तनाज़ा' हुआ;
9 जिसने अपने माँ बाप के बारे में कहा, कि मैंने इन को देखा
नहीं; और न उसने अपने भाइयों को अपना माना, और न अपने
बेटों को पहचाना। क्यूँकि उन्होंने तेरे कलाम की एहतियात की
और वह तेरे 'अहद को मानते हैं।
10 वह या'क़ूब को तेरे हुक्मों और इस्राईल को तेरी शरी'अत
सिखाएँगे। वह तेरे आगे ख़ुशबू और तेरे मज़बह पर पूरी सोख़्तनी
क़ुर्बानी रख्खेंगे।
11 ऐ ख़ुदावन्द, तू उसके माल में बरकत दे और उसके हाथों की

ख़िदमत को क़ुबूल कर; जो उसके ख़िलाफ़ उठे उनकी कमर तोड़
दे, और उनकी कमर भी जिनको उससे 'अदावत है ताकि वह फिर
न उठे।
12 और बिनयमीन के हक़ में उस ने कहा, "ख़ुदावन्द का प्यारा,
सलामती के साथउसके पास रहेगा; वह सारे दिन उसे ढाँके रहता
है, और वह उसके कन्धों के बीच सुकूनत करता है।"
13 और यूसुफ़ के हक़ में उसने कहा, "उसकी ज़मीन ख़ुदावन्द
की तरफ़ से मुबारक हो, आसमान की बेशक़ीमत अशया और
शबनम और वह गहरा पानी जो नीचे है,
14 और सूरज के पकाए हुए बेशक़ीमत फल, और *चाँद की
उगाई हुई बेशक़ीमती चीज़ें।
15 और क़दीम पहाड़ों की बेशक़ीमत चीज़ें, और अबदी
पहाड़ियों की बेशक़ीमत चीज़ें।
16 और ज़मीन और उसकी मा'मूरी की बेशक़ीमती चीज़ें और
उसकी ख़ुशनूदी जो झाड़ी में रहता था, इन सबके ऐतबार से
यूसुफ़ के सिर पर या'नी उसी के सिर के चाँद पर, जो अपने भाइयों
से जुदा रहा बरकत नाज़िल हो।
17 उसके बैल के पहलौठे की सी उसकी शौकत है; और उसके
सींग जंगली साँड के से हैं; उन्हीं से वह सब क़ौमों को, बल्कि
ज़मीन की इन्तिहा के लोगों को ढकेलेगा; वह इफ़्राईम के लाखों
लाख, और मनस्सी के हज़ारों हज़ार हैं।"
18 "और ज़बूलून के बारे में उसने कहा, ऐ ज़बूलून, तू अपने
बाहर जाते वक़्त और ऐ इश्कार, तू अपने ख़ेमों में ख़ुश रह।
19 वह लोगों को पहाड़ों पर बुलाएँगे, और वहाँ सदाक़त की
क़ुर्बानियाँ पेश करेंगे; क्यूँकि वह समन्दरों के फ़ैज़ और रेत के
छिपे हुऐ ख़ज़ानों से बहरावर होंगे।"
20 और जद्द के हक़ में उसने कहा, "जो कोई जद्द को बढ़ाए वह
मुबारक हो। वह शेरनी की तरह रहता है, और बाज़ू बल्कि सिर

* **33:14** चाँद

के चाँद तक को फाड़ डालता है
21 और उसने पहले हिस्से को अपने लिए चुन लिया, क्यूँकि
शरा' देने वाले का हिस्सा वहाँ अलग किया हुआ था; और उसने
लोगों के सरदारों के साथ आकर ख़ुदावन्द के इन्साफ़ को और
उसके हुक्मों को जो इस्राईल के लिए था पूरा किया।"
22 "और दान के हक़ में उसने कहा, दान उस शेर — ए — बबर
का बच्चा है जो बसन से कूद कर आता है।"
23 और नफ़्ताली के हक़ में उसने कहा, "ऐ नफ़्ताली, जो लुत्फ़
— ओ — करम से आसूदा, और ख़ुदावन्द की बरकत से मा'मूर
है; तू पश्चिम और दख्खिन का मालिक हो।"
24 और आशर के हक़ में उसने कहा, आशर आस — औलाद से
मालामाल हो; वह अपने भाइयों का मक़्बूल हो और अपना पाँव
तेल में डुबोए।
25 तेरे बेन्डे लोहे और पीतल के होंगे, और जैसे तेरे दिन वैसी
ही तेरी क़ुव्वत हो।
26 "ऐ यसूरून, ख़ुदा की तरह और कोई नहीं, जो तेरी मदद के
लिए आसमान पर और अपने जाह — ओ — जलाल में आसमानों
पर सवार है।
27 अबदी ख़ुदा तेरी सुकूनतगाह है और नीचे दाइमी बाज़ू है,
उसने ग़नीम को तेरे सामने से निकाल दिया और कहा, उनको
हलाक कर दे।
28 और इस्राईल सलामती के साथ †या'क़ूब का सोता, अकेला
अनाज और मय के मुल्क में बसा हुआ है; बल्कि आसमान से उस
पर ओस पड़ती रहती है
29 मुबारक है तू, ऐ इस्राईल; तू ख़ुदावन्द की बचाई हुई क़ौम
है, इसलिए कौन तेरी तरह है? वही तेरी मदद की सिपर, और तेरे
जाह — ओ — जलाल की तलवार है। तेरे दुश्मन तेरे मुती' होंगे

† **33:28** याक़ूब का चश्मा

और तू उन के ‡ऊँचे मक़ामों को पस्त करेगा।”

34

[illegible]

1 और मूसा मोआब के मैदानों से कोह ए — नबू के ऊपर पिसगा
की चोटी पर, जो यरीहू के सामने है चढ़ गया; और ख़ुदावन्द ने
जिल'आद का सारा मुल्क दान तक, और नफ़्ताली का सारा मुल्क,
2 और इफ़्राईम और मनस्सी का मुल्क, और यहूदाह का सारा
मुल्क पिछले समन्दर तक,
3 और दख्खिन का मुल्क, और वादी — ए — यरीहू जो ख़ुरमों
का शहर है उसकी वादी का मैदान ज़ुग़र तक उसको दिखाया।
4 और ख़ुदावन्द ने उससे कहा, “यही वह मुल्क है, जिसके बारे
में मैंने अब्रहाम और इस्हाक़ और या'क़ूब से क़सम खाकर कहा
था, कि इसे मैं तुम्हारी नसल को दूँगा। इसलिए मैंने ऐसा किया
कि तू इसे अपनी आँखों से देख ले, लेकिन तू उस पार वहाँ जाने
न पाएगा।”
5 तब ख़ुदावन्द के बन्दे मूसा ने ख़ुदावन्द के कहे के मुवाफ़िक़,
वहीं मोआब के मुल्क में वफ़ात पाई,
6 और उसने उसे मोआब की एक वादी में बैत फ़ग़ूर के सामने
दफ़न किया; लेकिन आज तक किसी आदमी को उसकी क़ब्र
मा'लूम नहीं।
7 और मूसा अपनी वफ़ात के वक़्त एक सौ बीस बरस का था,
और न तो उसकी आँख धुंधलाने पाई और न उसकी अपनी क़ुव्वत
कम हुई।
8 और बनी इस्राईल मूसा के लिए मोआब के मैदानों में तीस
दिन तक रोते रहे; फिर मूसा के लिए मातम करने और रोने —
पीटने के दिन ख़त्म हुए।

‡ **33:29** उनके पीठ

9 और नून का बेटा यशू'अ 'अक़्लमन्दी की रूह से मा'मूर था,
क्यूँकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रख्खे थे; और बनी — इस्राईल
उसकी बात मानते रहे, और जैसा ख़ुदावन्द ने मूसा को हुक्म दिया
था उन्होंने वैसा ही किया।
10 और उस वक़्त से अब तक बनी — इस्राईल में कोई नबी
मूसा की तरह, जिससे ख़ुदावन्द ने आमने — सामने बातें कीं नहीं
उठा।
11 और उसको ख़ुदावन्द ने मुल्क — ए — मिस्र में फ़िर'औन
और उसके सब ख़ादिमों और उसके सारे मुल्क के सामने, सब
निशान और 'अजीब कामों के दिखाने को भेजा था।
12 यूँ मूसा ने सब इस्राईलियों के सामने ताक़तवर हाथ और
बड़ी हैबत के काम कर दिखाए।

इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.
You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.
Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023
4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc